

भारती साहित्य सिद्धान्त

पंज गंज



देवनागरी लिप्यांतरणः
डॉ. हस्रो दादलानी



प्रकाशक

राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली

पंज गंज

भारती साहित्य सिद्धांत

लेखक: झमटमल खूबचंद भावनाणी

लिप्यांतरण : डॉ. हासो दादलानी

संपादक ऐं प्रकाशक
डॉ. प्रताप पिंजानी
निदेशक
राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद, नई दिल्ली



National Council for Promotion of Sindhi Language,

Govt. of India, Ministry of H.R.D. Deptt. of Higher Education

West Block No. VIII, Wing-7, 1st Floor, Sector-1,

R.K. Puram, New Delhi - 110066.

Ph. Nos. (011)-26180104-06, 20863699

Email : ncpsl.delhi@gmail.com **Website :** www.ncpsl.gov.in

<https://www.facebook.com/NCPSL>

पंज गंज

लेखक

झपटमल खूबचंद भवनाणी

लिप्यांतरण

डॉ. हासो दादलानी

संपादक ऐं प्रकाशक

डॉ. प्रताप पिंजानी

निदेशक, राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद,

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, पश्चिमी खंड-८

राम कृष्ण पुरम, नई दिल्ली-११००६६

छापो

पहरियों (देवनागरी लिपीअ में, २०२०)

टाइपसेटिंग

आशा प्रिंटर्स, अजमेर

कीमत

रु. १२०.००

Panja Ganja

Author

Jhamatmal Khubchand Bhawnani

Transliteration

Dr. Hasso Dadlani

Editor and Publisher

Dr. Pratap Pinjani

Director, National Council for Promotion
of Sindhi Language, Ministry of HRD,
Govt. of India, West Block No. VIII,
R.K. Puram, New Delhi - 110066.

© National Council for Promotion of Sindhi Language

Edition

First (Devnagri Edition Year-2020)

Typesetting

Asha Printers, Ajmer

Price

Rs. 120-00

Printed

GeM

ISBN

978-81-945495-8-1



ब अखर

साल 2019 ई. में राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद जी स्थापना जा पंजवीह वरिह्य पूरा थिया। पंजवीहनि वरिह्यनि में परिषद जुदा जुदा शहरनि में साहित्य ऐं संस्कृति कार्यक्रम कया आहिन ऐ साडु गडोगढ परिषद जो मुख्य मकसदु सिंधी भाषा जो विकास ऐं वाधारो आहे। इन डिस में सिंधी तालीम ते बि परिषद पारां जोगा कार्य कया वजनि था। जिनि में मुख्य कार्य किताबनि जे प्रकाशन जो बि आहे। परिषद पारां हर साल केतिरा ई मयारी किताब शाया कराया वजनि था, जिनि में दर्सी किताब बि अचनि था। स्कूलनि ऐं यूनीवर्सिटीअ जे शागिर्दनि पारां इहा घुर कई वेंदी आहे त सिंधी विषय जा हलंदड़ दर्सी किताब देवनागरी लिपीअ में मुयसिर कराया वजनि। इन गाल्ह खे ध्यान में रखंदे हिन साल परिषद जी एकजीक्यूटिव कमेटीअ पारां यारहां किताब देवनागरी लिपीअ में उलथो करण जी मंजूरी मिलण ते शाया कराया विया आहिनि, जेके बी.ए. ऐं एम.ए. कोर्स जा दर्सी किताब आहिनि। गुजिरियल कुझु सालनि खां सिंधी विषय पढंदड़नि शागिर्दनि जो तादादु बि वधियलु आहे। उम्मीद कई वजे थी त दर्सी किताब मुयसरि थियण ते शागिर्दनि जो तादादु अजा बि वधंदो रहंदो। जेको परिषद जे लियाज खां सुहिणो कदमु आहे।

हिन कार्य खे अंजामु डियण में परिषद जे मेम्बर डॉ. सुरेश बबलाणी ऐं बिया विद्वान प्रोफेसर डॉ. हासो दादलानी, डॉ. कमला गोकलाणी, डॉ. मीना आसवानी ऐं डॉ. परमेश्वरी पमनानी जो पूरो सहकारु रहियो आहे। मां परिषद पारां संदनि शुक्रगुजारी थो अदा करियां।

डॉ. प्रताप पिंजानी

(डायरेक्टर)

PREFACE

Letter Dt. 28.08.1974

From : Dr. S. C. Chatterji

Former President

Shaitya Akademi to Prof. Bhavnani

Dear Prof. Bhavnani,

Thank you very much for your book “Panja-Ganja : Bharati Sahitya Sidhanta”. This is a unique book from various points of view. First of all you have printed it in Devanagari letters. This will be a great boon for non-Sindhi

writers, who are not familiar with the Perso-Arabic script in which Sindhi is written, and it follows the ideals of Sri Jairamdas Daulatram who is such an ardent champion for the Devanagari script for Sindhi. I know there is a strong body of opinion, particularly among the well-established Sindhi writers - senior men mostly- who want Sindhi to be written in the Perso-Arabic character only and not at all in Devanagari which is unfamiliar to them. This also has its own importance because Perso-Arabic scripts still remain a bond of union between the Sindhi - speaking people who have been thrown out into India - Hindus - all of them and the bigger Sindhi - speaking people Muslims and possibly a few Hindus who still remain in Sind. I think Sindhis who have settled down in India will have to be in touch with the rest of Hindu India which uses various alphabets of pure IwHao origin, beginning with the Devanagari. However this is a matter which concerns Sindhi writers and educationists primarily. I myself would suggest that Sindhi has got to be in its

own interests and to maintain its own position as a living language, bi-litteral, that is using two scripts side by side according to convenience of the writers - the Perso-Arabic Sindhi and the Devanagari, as modified for Sindhi. We see the same thing with regard to the great Hindustani speech of Western U.P., which is written in both the Perso-Arabic (and then it is known as Urdu) and also in Devanagari script (and then it becomes Hindi) : the language is basically one, namely Hindustani in its two styles of Hindi and Urdu.

Next is the subject matter. I think it is unique for Sindhi to have such a good introduction to the principles of aesthetics. The old Indian alankara is fast becoming something of the past. Only some Hindi writers still continue to cultivate it and to study it in connection with the medieval Hindi tradition. We do not have it in modern Bengali, in Marathi and in most other Indian languages I wonder to what extent the ancient Indian categories of alankara with its Nayika-bhedas etc. are still followed for Modern Sindhi literature and whether the ancient Indian principles of dramatergy still have a vogue and a meaning for the modern Sindhi drama as much as for the modern Bengali or Hindi, Marathi or Gujarati, Telegu or Kanada and Tamil and Malyalam drama. But on the whole this book should prove to be a stimulating one for all Sindhi readers who are now getting to be at home in the Devanagari script, and I can congratulate you for bringing out this very remarkable book to enrich the mother-tongue. I hope you will give us further books of a similar type for the appreciation of Sindhi Language and literature.

Sunit Kumar Chatterjee

पंज गंज- भारती साहित्य सिद्धांत

विषय सूची

नं.	विषय	सुपहो
	मुहागु : सुर्गवासी डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी जो अंग्रेजी ख़तु	3
	विषय सूची : फ़हिरस्त	5
	प्रस्तावना : (अ) किताब बाबति	11
	: (ब) प्रकाशन बाबति	18
	गंजु पहिरियों	
	नाट्य शास्त्र	23-67
1.	काव्य	23
2.	काव्य ऐं कविता	24
3.	कवीअ जूं मनोकामनाऊं	24
4.	काव्य जा विभाग	24
5.	श्रव्य काव्य	25
6.	दृश्य काव्य	25
7.	अभिनय (Stage Representations)	26
8.	नृत्य (Dancing)	27
9.	गति (Gaits)	31
10.	गीत (Vocal Music)	32
11.	रूपक (Dramas)	33
12.	वेस धारी ऐं सभु इंसान	35
13.	ऊच नायकनि जा गुण	36
14.	नायकनि जा मुख्य किस्म	36
15.	ब्रियनि ब्रियनि नमूननि जा नायक	37
16.	नायकनि जा दर्जा	38
17.	ब्रिया पात्र	39

नं.	विषय	सुपहो
18.	विदूषक (Jester)	39
19.	नायिका	40
20.	प्रियतम ऐं प्रियतमाऊं	43
21.	सहायक पात्रणियूं	46
22.	वस्तू (Plot)	46
23.	पूर्व रंग	47
24.	स्थापना	48
25.	वस्तूअ जा कार्ज	49
26.	अधिकारिक वस्तूअ जूं अवस्थाऊं	51
27.	प्रासंगिक वस्तूअ जूं अवस्थाऊं	52
28.	अधिकारिक वस्तूअ जूं प्रकृतियूं	53
29.	संधियूं	54
30.	संधींग	55
31.	रूपक जो वक्तु कथणु	56
32.	‘नाटक’ रूपक	56
33.	‘प्रकरण’ रूपक	59
34.	‘भाण’ रूपक (Monologue)	59
35.	‘व्या योग’ रूपक	60
36.	‘समवकार’ रूपक	61
37.	‘डम’ रूपक	63
38.	‘ईहा मृग’ रूपक	63
39.	‘उतसृष्ट’ अंक	64
40.	‘व्यथि’ रूपक	65
41.	‘प्रहसन’ (Comic)	65
42.	बियूं विषयूं	66
43.	नाट्य शास्त्र	67

नं.	विषय	सुपहो
-----	------	-------

गंजु बियो

रस शास्त्र

68-86

1.	कवी	68
2.	कवी, कवीत्व (Kavitva) ऐं काव्य	68
3.	सतो, रजो, तमो गुण अवगुण	69
4.	भाव ऐं रस	70
5.	प्रेम ऐं 'रती'	72
6.	श्रृणगार रसु	72
7.	विभाव	73
8.	व्यभचारी या संचारी भाव	74
9.	अनुभाव	76
10.	स्थार्ई भाव (Lasting Emotions)	78
11.	स्थार्ई भावनि जो रस	78
12.	श्रृणगार रस (The Erotic)	79
13.	करूण रस (The Pathetic)	81
14.	रूद्र रस (The Furious)	83
15.	वीर रस (The Heroic)	83
16.	भयानक रस (The Frightful)	83
17.	भीभत्स रस (The Disgustful)	84
18.	हास्य रस (The Comic)	84
19.	भयानक रस (वरी बि दुहिरायल)	85
20.	अद्भुत रस (The Marvellous)	85
21.	शांत रस (The Quietistic)	86
22.	वत्सल्य रस (The Parental)	86
23.	भाव ऐं रस निस्वति बियूं विषयूं	86

नं.	विषय	सुपहो
	गंजु टियों अलंकार शास्त्र	87-111
1.	सिंधु में अलंकार विद्या	87
2.	काव्य जा सम्प्रदाय	87
3.	काव्य जा दर्जा	92
4.	उत्तम कार्य जा मिसाल- रसुनि पटांदर	93
5.	अलंकारनि जा वर्ग	98
6.	अनुप्रास	98
7.	छेक अनुप्रास	99
8.	वृत्तिय अनुप्रास	100
9.	श्रुतिय अनुप्रास	101
10.	लाट अनुप्रास	102
11.	अनित्य अनुप्रास	103
12.	यमक	103
13.	विक्रोक्त	103
14.	श्लेष	103
15.	भाषा समक	104
16.	पहेली	105
17.	उपमा	105
18.	रूपक	107
19.	ब्रिया रूपक अलंकार	108
20.	उत्प्रेक्ष	108
21.	संदेह	108
22.	अर्थु श्लेष	109
23.	अतिशयोक्त	109
24.	दीपक	110

नं.	विषय	सुपहो
25.	व्याज उस्तत	110
26.	प्रतीप	111
27.	ब्रिया अर्थ अलंकार	111

गंजु चोथों साहित्य शास्त्र

112-135

1.	साहित्य शास्त्र	112
2.	काव्य ऐं साहित्य	113
3.	साहित्य सिद्धांत	113
4.	भामह ऐं काव्य	114
5.	दणडी	115
6.	विश्वनाथ	115
7.	पश्चिमी धाराऊं	117
8.	हिन्दी साहित्य में चालू काव्य भेद	118
9.	हिन्दी साहित्य में चालू गद्य भेद	119
10.	निबंध्य जा भेद	119
11.	उपन्यास जा भेद	120
12.	कहाणीअ जा भेद	120
13.	रचना जा दोष	121
14.	दोष जो गुण बणिजणु	124
15.	रचना जो गुण	125
16.	रचना जा लछण	129
17.	रीति या इबारत	129
18.	शब्द साधन	131
19.	भरत मुनीअ जूं रीतियूं	132
20.	भरत मुनीअ जूं वृत्तियूं	133
21.	सम्प्रदाय ऐं शैली	133
22.	कालीदास ऐं शैली	135

नं.	विषय	सुप्हो
	गंजु पंजों छंद शास्त्र	136-160
1.	छंद	136
2.	सिंधु ऐं छंद	137
3.	छंद शास्त्र जा मूल सिद्धांत	138
4.	छंद नाम	142
5.	मात्रक ऐं वर्णक छंद	142
6.	अखर समूह	143
7.	इल्म अरूज जा परिभाषिक शब्द	143
8.	ब अखिरियूं	144
9.	टि अखिरियूं	144
10.	छंद गुण	145
11.	तुकबंदी, काफ़ियो	146
12.	सम मात्रिक छंद	148
13.	अर्द्ध सम-मात्रिक छंद	154
14.	बहूपाद छंद	154
15.	वर्णक छंद	155
16.	फ़ारसी बहर ऐं फ़ारसी छंद	158
17.	रस ऐं छंद	159
	आसिरो नाम जो	161-162
	सहायक पुस्तकनि जी यादाश्त	163-164

प्रस्तावना

(अ) किताब बाबति

1. मुहागु (Preface) बनस्वति- जीअं त सुर्गवासी डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी साहिब जो अंग्रेजी खतु मुहागु तौर पेशि कयल आहे। जेको खतु हिन साहिब देवनागरी छापे में हीउ सागियो किताबु पढ़ी, मूं ड्राहुं लिखी मोकिलियो हुओ। तहिं करे उन छापे जे बारे में के सरसरी हकीकतूं डिजनि थियूं।

(क) दस्तखत अरबी सिंधी अखरनि में तयारु कयो हुआमि। श्री जयरामदास दौलतराम उहो पढ़ी, न फ़क़ति जल्दु में जल्दु छापे हेठि आणाइण जी चाहना जाहिरु कई पर खासि ओनो थी पियुसि, देवनागरीअ में छपाइण जो। हिक ड्रीहुं पुछियाईमि त “अहिड़ो को शख़्सु सुझेई, जहिं ते छपाइण जो बारु रखी सघिजे?” मूं वराणियुसि त “मुहिंजो दोस्तु घनश्याम बगूमल सुजान आहे, जहिं ताजो हिंदवासी हफ़तेवार अख़बार में मुहिंजा ब फ़ौजदारी केसनि जा नज़्मी किंसा ‘किंसा क़हिरी’ ऐं ‘किंसा विछूं मछड़’ वारा पढ़ी, खेनि पाणमुरादो किताबी सूरत में आणाइण जी आछ कई आहे, मगर टियों नज़्मी केस ‘किंसा कॉलेजी’ अजां हथ में आहेमि, सो उहो दोस्तु तिनि किसनि बदिरां ई शायदि ‘पंज गंज’ किताबु छपाइणु क़बूले, लेकिन मां पाण खेसि या बिए कहिं खे बि वात कीन विझंदुसि।”

(ख) कुझु ड्रीहनि पोइ, श्री जयरामदास जेका सिंधी लिखपढ़ सुजान सां कई हुई, तहिंजी पूरी ज़ाण पियमि। श्री सुजान ‘पंज गंज’ किताबु अरबी सिंधी तोड़े देवनागरी अखरनि में, पंहिंजे पिता जे नाले सां बर्पा कयल ट्रस्ट ‘बगूमल तुलसीदास चैरेटीज़’ पारां छपाइणु क़बूलियो।

(ग) अरबी सिंधीअ में हिन किताब जे छपिजण लाइ मां श्री जयरामदास खां वधीक ख़्वाहान होसि, सो हिंदुस्तान अख़बार जे जनरल मैनेजर श्री मानसिंह चूहड़मल खे वेनिती कयमि, जा हुन क़बूली। पनो ख़रीद करे खेसि डिनो वियो, पर ‘काणीअ जे विहांअ में संकट’ पियो, प्रेस जे कर्मचारियुनि सां बानीकारनि जी अणबणति थी, बियूं मजबूरी हालतूं पैदा थियूं ऐं बानीकारनि,

पंहीजियुनि अखबारुनि खां ब्रियो छपाईअ जो समूरो कमु अगोपोइ बंदि करे छडियो। पने जी रकम सुजान खे मुजरा थी मिली। विघ्न पइजी वियो, वेल हली वेई; पस पेशि, सुजान साहिब मुकररु बजेट वारी सीड़प खां रकम वधी वजण जे मदेनज़रि, अरबी सिंधीअ में छपाइण जो इरादो छडे डिनो।

(घ) तंहिं विच में, सागियो दस्तखत जाचे तपासे ऐं सोधे, अरबी सिंधीअ तां देवनागरीअ में उतारण ऐं दिल्लीअ मां छपाए मोकिलण जो कठिन कमु, मुंहिंजे मित्र डॉक्टर मुरलीधर किशनचंद जेटली, दिल्ली यूनीवर्सिटीअ जे सिंधी प्रोफेसर ऐं संस्कृत विद्वान तोड़े सिंधी अदबी आलिम पाण ते हमवारु कयो। डिसम्बर 1973 ई. जे आखरि ताई देवनागरी छापो तयारु थियो ऐं 1974 ई. में, जंहिं डींहं बम्बईअ में श्री जयरामदास जे देवनागरी सभा पारां सम्मेलन थियो, तंहिं डींहं के कापियूं अची नुमाअ में पहुतियूं। कुझु वक्त खां पोइ हिक कापी पंहिंजे खत सां टपाल रस्ते डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी, जो तड्हिं साहित्य अकाडमीअ जो प्रेज़ीडंट हुआ, तंहिं डे मोकिलियमि। संदसि पहुच ऐं गुज़रिश जो खतु आहे हिन छापे जो मुहागु।

2. अगियूं समालोचनाऊं- श्री मोतीलाल बुटाणी साहिब हथां हिंदवासी हफ्तेवार में, श्री हीरानंद कर्मचंद हथां हिंदुस्तान रोज़ानीअ में, श्री हीरानंद कर्मचंद हथां वरी अंग्रेज़ी Bhavan's Journal में ऐं डॉक्टर मोतीलाल जोतवाणीअ हथां Indian Literature (साहित्य अकाडमी जी मैगज़न) में तोड़े ब्रियुनि किनि मैगज़नुनि वगैरह में देवनागरी छापे जूं समालोचनाऊं शायी थियूं, पर उन छापे जो विकिरो खैर को थियो, तंहिं सबब समूरियूं कापियूं सीता सामताणीअ खे दान कयूं वेयूं।

3. हीड छापे- जिनि हालतुनि हेठि पूने जे श्री मोहनलाल जोतसिंह शहाणीअ हिन किताब खे पाण शायी करण जी आछ लिखी मोकिली, तंहिंजो मुख़्तसरु अहवालु हिन रीति आहे-

(क) मुंहिंजो हिन खां अंगु वारो आखरीनि पुस्तक 'स्वामी दादू दयाल' मुंहिंजे ई खर्च ते छपायल, सेप्टम्बर 1980 ई. जे आखरि धारे तयारु थियो।

मूं संदसि मुहागु में लिखियो हुआ त “देवनागरी छापे वारे किताब बाबति सुर्गवासी डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी साहिब, जो तडहिं साहित्य अकाडमीअ जो प्रेज़ीडेंट हुआ, तहिं पंहिंजे पसंदीअ ऐं तारीफ़ भरियल, ऐं दिलि खुशि कंदडु ख़तु त बराबर लिखी मोकिलियो, पर दिलि में अरमान रहिजी वियो अथमि जो अरबी सिंधी अखरनि में उहो किताबु शायी कीन थियो आहे। मुंहिंजे नाक़स समुझ मूजिबु अरबी सिंधी छापे द्वारां उन्हीअ पुस्तक जो पूरो कदुरु थी सघे हा।”

(ख) ऑक्टोबर 1980 ई. में जिनि अदीबनि (अटिकल साठीकनि) डे ‘स्वामी दादू दयाल’ जूं कापियूं, ब्रियनि जे सलाह मिलण ते तोहफ़े तौर मोकिलियमि, तिनि में पूने शहर जा के अगु सुजातल साहित्यकार बि हुआ। नवम्बर 1980 ई. जे शुरूअ में टपाल रस्ते हिकु अंग्रेज़ी ख़तु पहुतो जो श्री मोहन जोतसिंह शहाणी जो लिखियल हुआ। मुंहिंजी साणुसि अगु का बि वाक्फ़ियत न हुई। कुझ परलाउ कन ते पियलु हुआमि न हिकिड़ो बख़ पब्लिशर ऐं कतब फ़रोश, शहाणी आकहि जो पूने में सिंधी साहित्य जे खोजना कार्य लाइ हर तरह पाण पतोड़े रहियो हुआ। पाण ख़त में जाणायाईमि त हू सुर्गवासी दीवान ड्याराम शहाणीअ जो भाइटियो थिए ऐं मुंहिंजो किताबु ‘स्वामी दादू दयाल’, प्रोफ़ेसर अजवाणीअ सां गडोगडु पंहिंजे उन्हीअ मुर्बी चाचे खे अर्पण कयल पढ़ी घणो खुशि थियो हो। सागिए ख़त में हीउ किताबु ‘पंज गंज’ पंहिंजे खर्च ते छपाइण जी आछ लिखियाई।

(ग) मां अहिडे नमूने आयल आछ में ईश्वरी हथु थो वसहां। इहा ग़ाल्हि पधिरी आहे त हीउ किताबु सिंधी जातीअ जे घटि की वधि कतब लाइ ई शायी कयलु आहे। केतिरे कदरु हीउ छापो सिंधियुनि खे कतब अची सघंदो, उहो सिर्फ़ किताब जे माल रुमाल ते मुनहसर कीन आहे। अजुकल्ह इहा हालति गुझी कान आहे त साहितिक किताबनि जे नेकाल वारनि मुख्य दाइरनि जूं वागूं जिनि जे हथनि में क़ाबू आहिनि, उन्हनि ताई पहुचण ते वधीक मुनहसर आहे।

4. पंज गंज- दुनिया जे सभिनी बोलियुनि में सौंदर्य कलात्मक वस्तुनि जे नेमनि (Principles of aesthetics) ऐं संदसि उपयोग बनस्बति केतिरा ई उत्तम दर्जे जा ग्रंथ रचियल आहिनि। अंग्रेजी बोलीअ में अहिड़ा अनेक ग्रंथ अनुवाद कयल त आहिनि पर असुलोका पिण शायी कयल आहिनि। हिन सिलसिले में यूनान जे हेठियनि बिनि कदीम फ़ेलसूफ़नि खासि ध्यान लहिणो।

1. प्लेटो (Plato) 427 खां 447 ईस्वी सन् खां अगु।

2. एरिस्टॉटिल (Aristotle) 384 खां 322 ईस्वी सन् खां अगु।

भारती साहित्य में सागियुनि वस्तुनि ते कुहिने में कुहिनो ग्रंथ कहिं हद ताई मुकमल आहे भरत मुनीअ जो 'नाट्य शास्त्र'। संस्कृत बोलीअ मां कीन जाणां, पर भारत में लड़े अचण बइदि हिंदी सिखियुसि, पढ़णु वधीक, हिंदी नाले मात्र। इन्हीअ नाट्य शास्त्र जा अनुवाद अंग्रेजीअ में, हिंदीअ में ऐं भारत जे केतिरियुनि ई बियुनि बोलियुनि में कयल ऐं छपायल आहिनि। पर सिंधु में, उन डिस डे को बि लाड़ो कीन हुआ। उते अरबी फ़ारसीअ ते जोरु हुआ जौहिं मां बि असां चडो ई पिरायो। हिन किताब 'पंज गंज' में जेके बि पंज 'शास्त्र' डिनल आहिनि, तिनि जी सामग्री 'नाट्य शास्त्र' जे अंग्रेजी ऐं हिंदी अनुवादनि ऐं बियनि केतिरनि ई विषय सम्बन्धी ग्रंथनि मां कठी कई अथमि। 'गंज' माना 'खज़ाना'। हिन किताब में डिनल विषयूं जे खज़ाननि लेखिजण लाइकु आहिनि त हिन सबब जो उहे घणनि बेबहा, अमोलक ग्रंथनि मां चूँडे दर्ज कयल आहिनि, जौहिंजी याददाश्त हिन किताब जे अंत में डिनी अथमि। 'शास्त्र' लफ़्ज़ जी माना आहे 'नेमनि जो विज्ञानिक वर्णन'। अंग्रेजी नाले सां विषय 'Economics' आहे 'अर्थ शास्त्र'। Logic आहे 'तर्क शास्त्र' वगैरह। "शास्त्र को सभेई धर्मी किताब कीन थियनि। सिंधु में हुआसीं त उते असांजा मुसलमान अदीब बि, बियो न त बि 'काम शास्त्र' ग्रंथ जे नाले गिन्हण खां त कीन छिकंदा हुआ पर उनजे सिंधी अंग्रेजी तर्जुमनि जो दिलचस्पीअ सां अभ्यासु कंदा हुआ। हिन मुहिंजे किताब में पंज शास्त्र, तिनि

जा मुख्य उसूल, मुख्य नेम डिनल आहिनि। हरहिक शास्त्र बाबति हेठियूं जुज्वी हकीकतूं पढंदडनि जे ध्यान ते अगुवाट आणे छडिण जरूरी थो समुझां।

(क) नाट्य शास्त्र (Dramatergy)- हिन शास्त्र बाबति हेठियुनि हकीकतुनि खासि ध्यानु लहिणो-

1. विषय सूचीअ में हिन शास्त्र जूं 43 विषयूं ज्ञाणायल आहिनि पर किताब अंदरि केतिरनि ई विषयनि जा बिया बिया किस्म बुधायल आहिनि ऐं थोरे थोरे में समुझायल आहिनि। अनेक कतब आंदल शब्द संस्कृत मां हिंदीअ में अची वियल आहिनि पर सिंधी बोलीअ में संदनि कहति आहे, डकार आहे, तहिं करे संदनि अंग्रेजी सम-अर्थी लफ़्ज डिटो अथमि।

2. किताब 'नाट्य शास्त्र' सां शुरू कयल आहे, सो हिन सबब जो बियनि चडनि ई शास्त्रनि वारनि नेमनि जो शुरूआती वर्णन उन्हीअ 'नाट्य शास्त्र' ग्रंथ में कयल आहे। भरत मुनि, भारत साहित्य जे मदेनजरि पंजनि ई शास्त्रनि जो पायो विझंदड थो लेखिजे, उन्हीअ 'नाट्य शास्त्र' सबब।

3. नाट्य शास्त्र वारियूं के विषयूं, हिन समे वारनि चालू रूपकनि लाइ कारगर न बि थियनि, पर डिटो वियो आहे त किनि प्रख्यात प्राचीन वस्तुनि याने त Well-known ancient plots वारियुनि फिल्मुनि तयारु कंदडनि ऐं Classical Dramas पेशि कंदडनि, भरत मुनीअ जे डिनल हिदायतुनि जी पूरी पालना कई आहे। जेतोणीक अहिड़ा रूपक घणो खर्चुं था घुरनि। बिए लेखे, हिन किताब जे 31 खां 46 ताई 15 सुफ़हनि वारनि विषयनि सां अजु बि सूत्र धारनि, पात्रनि ऐं पिण आम पढंदडनि जी दिलस्चपी अवसि ई हुअणु घुरिजे।

(ख) रस शास्त्र- हिन गंज बाबति खासि हीउ चविणो अथमि त-

1. भारत में आए पुजाणां मुंहिंजे पहिरिएं पुस्तक 'छंद सुगंध' जे मुहाग में प्रोफ़सर अजवाणीअ लिखियो हुओ त "मुंहिंजे मित्र ऐं अगूणे शागिर्द

श्री झमटमल भावनाणीअ, मूं ते ऐं सभिनी सिंधियुनि ते थोरो कयो आहे जो बेहद महिनत करे.... सिंधु-हिंद जो नातो निरवारु करे बीहारियो आहे.... श्री भावनाणीअ अहिङ्गनि तरफुनि डाहुं रुखु रखियो आहे, जिनि बाबति कंहिं बि सिंधी साहित्यकार न अगु में दिलचस्पी डेखारी (मिसला रस, अहंकार वगैरह) ऐं न जाण कई आहे।”

2. रस शास्त्र जे मूल विषयनि बाबति तडुहिं ई हैदराबाद सिंधु में शायी थोंदड़ ‘महराण’ मैगज़न जे सम्पादकनि जे लिखी मोकिलियल इस्तदआ ते मज़मूनु तयारु करे मोकिलियो हुओमानि, जेको घणीअ महिनत सां, जेरुनि ज़बरुनि समेति सिंधी मुसलमान अदीबनि लाइ उते शायी कयो वियो। भारत में सिंधी बोली ऐं साहित्य जे हाणोकियुनि हालतुनि मूजिबु जेरुनि ज़बरुनि जो ड्रियणु ड्रियारणु पुजंदीअ खां परे आहे।

3. अखरनि जी अणाठि सबब हिंदीअ वारा परिभाषिक शब्द, अदबी विज्ञानिक लफ़्ज़, तिनि जा अंग्रेज़ी Synonymas ड़िना विया आहिनि।

(ग) अलंकार शास्त्र- हिन किताब जे सुफ़हे 104 (गंजु टियों) ते जाणायो वियो आहे त सिंधु में हीअ विषय फ़ारसी नूअ में पढ़िबी पाढ़िबी हुई। अलंकारनि (Figures of Speech) जा फ़ारसी ऐं अंग्रेज़ी लफ़्ज़ ड़ेई, प्राचीन समे जो चालू ज़माने में प्रचलित ग़ाल्हियुनि सां सम्बंध ड़ेखारियो वियो आहे ऐं सभिनी बोलियुनि में सौंदर्य कला जी समानता बि साबित कयल आहे।

(घ) साहित्य शास्त्र- मुंहिंजे वीचार मुजिबु सिंधी अदबी उसूलनि खे जे सुधारिणो आहे, मालामाल करिणो आहे ऐं जे अदबी सन्फुनि जो मयार ऊचो करिणो आहे त हिन गंज जो अभ्यास किनि मथियनि कॉलेजी दर्जनि लाइ लाज़मी हुअणु घुरिजे। इबारत नवीसीअ, शैली, Style बाबति हीउ गंजु साहित्य शब्द कोष मिसलि आहे। नंढेडो शब्द कोष मूं पंहिंजे किताब ‘इत्र अरूज’ जे अंत में दर्ज कयो हुओ, पर उन ग्रंथ में ड़िनल कोष में चालू हालतुनि मूजिबु अणपूरो आहे। रूसी साहित्य जो प्रभाव असांजे सिंधी

कहाणियुनि ऐं मजमूननि ते चडो ई पियल आहे, जो प्रभाव चवण लाइकु अवसि आहे पर गडोगडु नवनि नवनि तनकीदी लफ़्जनि जो इस्तेमालु हाल फ़िलहाल त सिंधी मजमूननि खे तसदीक कंदड़ आहे, खासि तरह जडहिं व्याकरण खे तिलांजलि डेई, मेठाज जो वीचार विसारे, अडम्बर जो ओनो वधीक थो कयो वजे।

(ड) छंद शास्त्र- हिन गंज बाबति किताब जे सुफ़हनि 171 खां 174 (गंजु पंजों) ताई थोरे में डेखारियल आहे त सिंधु में छंद शास्त्र जे अणजाणाई जा कहिड़ा नतीजा निकिता हुआ। मुंहिंजो भारत में आए पुजाणां पहिरियों किताबु 'छंद सुगंध' जेको कडुहोको ख़लासु थी वियलु आहे, उनजी हीउ किताबु जाइ त भरे थो, पर मँझिसि छंद विद्या जा नेम वधीक चिटाईअ सां वर्णन करे, भारती छंदनि जे इल्म अरूज जे बहरनि ऐं मुगरबे Prosody सां भेट कई वेई आहे। छंद ऐं रस जो सम्बंध समुझाए, बीअ तरह पिण छंद विद्या खे मुकमल कयो वियो आहे।

5. हरहिकु इल्मु अथाहु आहे। वसीला रुगो वाजिबी त न, बल्कि बिलकुल महदूदु आहिनि। हूंअं बि लैटिन वारनि जी अंग्रेजीअ में आंदल चविणी जेका आहे त "Art is long, life is short." उन्हीअ पटांदर मुंहिंजो वक्तु बि भरिजी आयो आहे। सिंधी साहित्य जे खेतर में, सिंधु में हूंदे ई अदबी अबनि जे संग में पेरु पातो हुआमि। भारत में अचण पुजाणां मूं मुख्य तौर रुखु रखियो हिंद-सिंधु जे अदबी नाते गुंढण डे, जहिं रुख जा नतीजा निकिता- 1. छंद सुगंध 2. इत्र अरूज 3. ढोला मारू 4. स्वामी दादू दयाल 5. हीउ ग्रंथ। डाके वजाइण जूं वाटूं कीन सिखियुसि, न छाकाणि त शोहरत खां परे भगुसि। पर छाकाणि त शोहरत हासिलु करण जा वसीला कीन आउड़ियमि, उहे ऐं अहिड़ा वसीला, जिनि जो इस्तेमालु अजु कल्ह उपरासे जो डींदडु आहे। फ़ौजदारी केसनि ते बुधल उपन्यास ऐं नज़्मी किंसा बि फ़क़ति बहिलाइण लाइ रचिया अथमि, न हज़रत फ़लोस खे हासिलु करण लाइ।

(ब) प्रकाशन बाबति

6. हिन किताब जे प्रस्तावना काणि शुरूअ में ई श्री मोहनलाल शहाणीअ खे लिखियो हुअमि त जीअं देवनागरी छापे में मुहागु उनजे प्रकाशक जो दर्ज थियल आहे, तीअं हिन छापे में मुहागु पिण संदसि ई पवंदो, पर हुन उमालक इंकार लिखी मोकिलियो। थोरा डींहं पोइ कींहं अजीज जे शादीअ मुरादीअ सबबां मुम्बई में अचणु थियुसि। वक्त जी तंगी हुअसि, सो मूं वटि बू टे घड़ियूं मस आयो। उहा ई मुंहिंजी साणुसि अवाइली डेठि वेठि। संदसि सरगर्मियुनि जो जिकिरु चोरियोमांसि। मुश्की, फ़क़ति एतिरो चयाई त “पूने जे सिंधू खोजना केन्द्र में बराबर मुंहिंजी दिलचस्पी हूंदी हुई। हींअर जल्दु ई कींहं हंधि वजीं पहुचिणो अथमि, सो पूने में वापस वज्रण पुजाणां केन्द्र जो अहिवालु मोकिलींदोसांवा।” मूंखे संदसि सरगर्मियुनि जी बी का बि गम पियल न हुई सो एतिरो ई चई मोकिलाए वियो। पर उन थोरीअ वेरमि अंदरि, मन ते इहो असरु पियो त हू खुदिसनाईअ जहिडीअ विषय खां वउं पिए वियो, जेतोणीकि ‘मां, मां’ जो मर्जु विचुडंदु आहे।

7. बू चार डींहं पोइ टपाल रस्ते ‘सिंधू खोजना केन्द्र, पूना’ बाबति छपियल रिपोर्ट जी कॉपी पहुतियमि, संदसि खतु पोइ आयो। रिपोर्ट पढ़ी, मूंखे टिनि गाल्हियुनि तां सर्सु सरहाई थी-

पहिरीं त, मंझिसि वर्णन कयल रिथा ऑला दर्जे जी हुई, जा किनि माहिरनि ऐं विद्वाननि जी जोड़ियल थे ड़िठी। आखरीनि सुफ़हे 00 ते बियनि नालनि मंझि डॉक्टर लछमण खूबचंदाणीअ जो नालो पढ़ी समुझियुमि त अहिडीअ रिथा जो मुख्य घड़ींदु जोड़ींदु उहो लछमण ई हूंदो। मुंहिंजी साणुसि शख्सी सुजाणप ऐं वाक्फ़यत, डॉक्टरी अत्ता थियसि, उन खां अगु थी हुई ऐं तड़हिं खां ई पुख्तो रायो हुओमि त बोलीअ ऐं साहित्य जे कार्जनि लाइ अमली रहबरु हो ऐं न अजु कल्ह वारनि किनि वात जे वड़ियुनि गाल्हियुनि कंदड़नि जहिडो। सुभाअ जी कशिश सां घणनि ई खे हमराहु करण जी ड़ाति बख़्शायल हुअसि।

ब्री त, लछमण खूबचंदाणीअ सां गडु तोड़े रिपोर्ट जे सुफ़हे 9 ते ब्रिया जेके नाला हुआ, तिनि मंझि श्री इत्र संगताणीअ ऐं श्री प्रभदास तोलाणीअ जहिड़ा दानवीर त हुआ पर हिंद में हाकारा, पूने में रहंदड़ तोड़े भारत जे ब्रियनि प्रदेशनि वारा विद्वान, साहितकार, शाइर, समाजिक शेवाधारी वगैरह पिण हुआ।

ऐं टीं, मूं लाइ शख़्सी रीति, बेहदि खुशीअ जे बाइस जहिड़ी ग़ाल्हि त हीउ मोहनलाल जोतसिंह शहाणी मुंहिंजे सुर्गवास थी वियल दिलि घुरिये दोस्त दीवान ड्याराम जो भाइटियो, सिंधी बोलीअ ऐं साहित्य जे अहिड़नि उत्तम कार्जनि में, दानवीरनि, समाज शेवकनि, भाषा विज्ञानियुनि, लेखकनि, शाइरनि वगैरह जो ब्राहं बेली त हुआ पर केन्द्र जे बर्पा कंदड़ पंजनि ट्रस्टियुनि मां हिकिड़ो हू पाण बि हुआ त कारोबारी कमेटीअ जो प्रेज़ीडंट बि पाण हुआ। अहिड़ियूं हकीकतूं पाण रूबरू बुधाइण खां नटाए वियो हो।

8. ख़तु जेको संदसि पोइ आयुमि, उन में लिखियाई त केन्द्र जो कार्ज कुझु अरिसे खां बिनह माठो थी वियल आहे, खासि तड़हिं खां, जड़हिं डॉक्टर लछमण जी रहबरी संदसि विलायत वजण सबब ऐं ब्रीअ तरह पूने में न रहण करे ख़तमु थी हुई। दुख जी ग़ाल्हि आहे जो हहिड़ीअ संस्था के साल सांदहि जसाइते नमूने में फ़क़ति पूने शहर अंदरि न, पर ब्रियनि प्रांतनि जे मुख्य शहरनि में घणियुनि ई सरगर्मियुनि सां गडु सिंधी बोलीअ जे पढ़ाईअ ऐं इम्तहाननि जा प्रोग्राम जारी रखी, जटाउ कीन कयो हो। दानवीरनि जी कमी कान थे डिठी, पर पोइ पुछा ते पतो पियुमि त ख़र्चु घणो ई थियो, चुस्तु कम कंदड़नि जी घणनि ई हँधि खोट थी पेई। शायदि लिपीअ जे मतभेद जो पिण कार्य कर्ताउनि ते असरु पियो ऐं कार्य खे हाजी रसी। को हलियो त बिन्हीं लिपियुनि द्वारां पिए, पर “तूं बि रहु, मां भी रहां”, उन चविणीअ जे पढ़ण बुधण मां लुत्फ़ घणो ई थो अचे, मथिसि अमल असांजे दाइरे खां दूरु पिए थींदो वियो आहे।

9. बियो दफो, हीउ नओं प्रीतम मोहन शहाणी आयो त वरी बि पंज मिन्ट मस वेठो। बु किताब डिनाईमि- हिकिडो शाइर 'किशनचंद बेवसि' जे रचनाउनि ते कयल सेमीनार में पेशि कयल मजमूननि जो ऐं बियो 'फुलवाडी'। पहिरियो किताबु हुओ, खोजना केन्द्र जी जाण त आखरीनि कार्ज जो नतीजो, सत अठ साल अगु वारो; ऐं बियो किताबु हुओ पूने में ताजी नई बर्पा कयल संस्था 'अखिल भारतीय सिंधी साहित्य विद्वत परिषद' पारां छपायल 20 रुपया कीमत रखयल मजमूओ, जहिं में सिंधी मजमून, बिन्हीं लिपियुनि में ऐं अंग्रेजी मजमून विधल हुआ। अजब जी गाल्हि जो वजण खां अगे उन्हीअ नईअ संस्था बाबति वात सां हिकु हर्फु बि कीन चई वियो! मूं किताब सरसरी नजर मां कढिया ऐं भेण सीता सामताणीअ डे कमला हाई स्कूल जी लैब्रेरीअ में रखण लाइ मोकिले डिना, जीअं हिते आदि खां कंदो पिए आयो आहियां।

10. थोरनि डींहनि बैदि पूने डे वजणु थियुमि, जिते मोहन शहाणीअ जे कार्य बाबति जेके तप्सील मालूम थियमि, तिनि खे हिन प्रस्तावना में जाणाइन खां मना कई अथसि, पर मां पाणु रोके कीन सघियो आहियां ऐं तंहिंकरे के हकीकतूं थोरे में पाठकनि जे ध्यान ते आणे थो छडियां- अवलि अवलि उते खबर पियमि त वीहारो वरिह्य अगु खां हू जगु प्रसिद्ध महापुरुष दिलीप कुमार राव ऐं संदसि आत्मिक साथिणि इंद्रा देवीअ जो खासि शेवाधारी त थी रहियो आहे, पर बिन्हीं जा केतिरा ई ग्रंथ अंग्रेजीअ में, हिंदीअ में ऐं पिण बि अरबी सिंधीअ में छपाए चुको आहे। सभु पंहिंजे ई खर्च ते। दिलीप कुमार राव साल 1980 ई. में परलोक पधारियो। उन खां अगु, किनि किताबनि में पाण मोहन शहाणीअ लाइ शुभ भावनाऊं ऐं आसीसाऊं लिखियूं हुआई ऐं हिकिडो किताबु त अर्पण ई खेसि कयो हुआई। मथिएं परिषद जे बारे में उनजे महामंत्री पंडित किशनचंद जेटली खां खबर पियमि त हीउ मोहन शहाणी परिषद जो प्रेजीडंट त आहे पर संदसि किताबु 'कालीदास जो मेंघदूत' संस्कृत तां सिंधी शइर में तर्जुमो कयल, पंहिंजे हडां खर्चु करे छपाए रहियो आहे!

इहो पंडित साहिबु पाउ सदीअ खां लिखपढ़ रस्ते वाकुफु हुआमि। हू मुंहिंजे प्रीतम डॉक्टर मुरलीधर जेटली जो पिता आहे। पंडित किशनचंद वटि ब्रियो हिकु विद्वान लेखक नाले श्री संतदास किशनाणी मिलियुमि, जंहिं खां मालूम थियुमि त वटिसि श्री मोहन शहाणीअ जो सिंधु में लिखियलु ऐं छपायलु किताबु, सिंधी इस्तलाहनि जो, संदनि अंग्रेजी तर्जुमे मां हुआ, जा गाल्हि बि मोहन शहाणीअ पाण मूं सां कान कई हुई।

11. मथे जिकिरु कयल ऐं ब्रियूं केतिरियूं हकीकतूं जेके ध्यान ते आयूं अथमि, तिनि मूंखे हैरत में विझी छडियो आहे। अजु कल्ह हवा अहिडी पेई लगे, जो के वडा नाम कुठिया बि पहिंजे दुहिल ते त पहिंजो डौंको पाण पिया ठोकींदा आहिनि, पर ब्रियनि खां बि हिते हुते नगारा वजाराईदा आहिनि। लीडरनि जो अंदाजु वधंदडु त आहे पर जेको तेको पहिंजीअ में ई पूरो आहे। मगर, हीउ यारु, हेतिरी शेवा, निष्काम, बिना नाले कंदो पिए रहियो आहे। सो हिकु न्यारो मिसालु आहे। भाती त आहे ई नामवर शहाणी दानवीरनि ऐं इल्म में अकाबरनि जे आकहि जो। संदसि पिता, दीवान जोतसिंह थधोमल, सिंधु में घुरिजाऊ घरनि जे वडवरि कन्याउनि जे उकिलाअ लाइ गुझ गोह में पियो मदद कंदो हो। संदसि चाचो दीवान अनंदाराम त नालेरो विद्वानु हुआ, जंहिं सिंधु में तोड़े सिंधु छडिण बैदि हिते अची केतिरियूं ई डिक्शनरियूं जोड़े छपायूं। संदसि ब्रियो चाचो, श्री किशनचंद थधोमल शहाणी, निवेदन में जाणायल नमूने में ऐं बीअ तरह जेका शेवा करे रहियो आहे, उहा गुझी कान रहिजी सघी आहे। बाकी हू संदसि चाचो, मुंहिंजो दिलि घुरियो दोस्तु दीवान डयाराम थधोमल शहाणी, जंहिं खे पाण हीउ पुस्तक अर्पण कयो अथसि, तंहिंजो यूनीवर्सिटी प्रोफेसरनि ऐं ब्रियनि वडनि तालीमदाननि सां घाटो सम्बंधु हूंदो हो। इहा बि खबर अथमि त हू इंडो अमेरिकनि सोसाइटीअ जो केतिरा साल हिकु बर्खु मेम्बरु थी रहियो आहे। ईश्वर वटि त मोहन शहाणी अवसि ब्रियनि सगूरनि सां लेखिबो, पर उतां जे सड काणि सीडिणो पवंदुसि। गीता में श्री

कृष्ण जेको उपदेश, हेठींअं रीति अर्जन खे ङिनो आहे, उनजी पैरवी हीउ
पूर्ण तरह पियो करे-

“फ़र्जु तुंहिंजो आहे, कर्म तूं कंदो रहु,
पर फल इच्छा समूरी फिटी करि;
कर्म फल मंशा न रखु तूं अंदरि,
नकी की अकर्म में तूं अड़।”

शेवा में

झमटमल खूबचंद भावनाणी

ए-2, 'शरन', टैगोर रोड,

सातां क्रूज़ (वेस्ट), मुम्बई-54.

फोन: 532375



गंजु पहिरियों नाट्य शास्त्र सिद्धांत

1. **काव्य (Poetry)**— प्राचीन संस्कृत वारनि विद्वाननि पटांदर भारती साहित्य में आदि खां काव्य ई मूल साहित्यिक रचना ठहिरायल आहे। गद्य याने नसुरु (Prose), पद्य याने नज़्म (Verse) ऐं मिश्र याने बिन्हीं जी गडियल सडियल रचना, इहे टेई काव्य जा अंग-अंश शुमारिजण लाइकु आहिनि। पद बिना रचना आहे गद्य, पर जे गद्य असुल आहे ई पद रहित, त उनजो मतिलबु इहो मूरु नथो थी सघे त गद्य काव्य जे मूल गुणनि जो अधिकारी बि असुल नथो थी सघे। जे काव्य, कवीअ जे क़लब अंदर उत्पन्न थींदड़ उमंगनि जो वाहण वसीलो आहे त गद्य मंझि बि समूरा भाव, संदनि भिन्न-भिन्न सरूप, अनुभाव ऐं रस समाइजी सघनि था। गद्य बि रसात्मक काव्य जा उहे गुण पिराए सघे थो, जेके पद्य मंझि पधिरा थी सघनि था। कवी पंहिंजीअ मन-मौज सां गद्य मंझि बि माधुरिय याने मेठाजु (Sweetness) विझी सघे थो, कवी पंहिंजे अंदर वारनि उमंगनि सां गद्य मंझि बि उहो औजु, उहा उडाम (Elevating Power), उहो उतांहियूं पसाईंदड़ उहाउ समाए सघे थो, जहिं जे प्रभाव सां गद्य पढंदड़ बुधंदड़ जी आत्मा पिण अनंत आकास वारनि अण-डिठनि अस्थाननि डे उडामी सघे थी। कवी पंहिंजे रचना जे प्रसाद सां, सलासत (Perspicuity) सां, गद्य पढंदड़ बुधंदड़ जूं दिलियूं, गद्य पढंदे बुधंदे ई उते जो उते शब्द अर्थ जे कठिनाई न हुअण सबबि पंहिंजीअ दिलि सां गूढे सघे थो। भाषा अलंकार (Figures of Speech), पद्य काव्य जी निजी सामग्री कीन आहिनि; उहे गद्य काव्य खे पिण अलंकृत करे, सींगारे, वधीक आनंददायक बणाए सघनि था। बराबर पद्य काव्य जो संगीत सां घोर

सम्बन्ध आहे, जंहिं कारण प्रेरणा याने इल्हाम (Inspiration) जे असर हेठि पद्य रचना जहिडी उपजि, अचिंतित (Voluntary), वधीक खुदि-रवि (Spontaneous), वधीक मन-मानी थिए या लग्ने थी। पर ब्रिए तरफ रसात्मक गद्य रचींदे, रचींदडु छंद विद्या जे बंधननि खां छुटलु रहे थो।

2. काव्य ऐं कविता- कविता आहे काव्य जो टुकरो या हिकिडी काव्य रचना। अंग्रेजीअ में काव्य खे चइजे थो 'Poetry' ऐं कविता खे चइजे थो 'Poem'। जेतोणीकि गद्य, पद्य रचना जियां काव्य जो भागु सडिजण लाइकु थी सघे थो, तंहिं हूंदे बि आम तरह कविताउनि जो पद्य सां अहिडो त गहिरो सम्बन्ध थी वियल आहे, जो कविता जो सरूप ई गद्य सरूप खां न्यारो लेखिजे थो, एतिरे कदुरु जो गद्य खणी काव्य जो किस्मु कोठिजे थो त बि कविताऊं पद्य रचनाऊं करे लेखिजनि थियूं। रूप में गद्य खां असुल अलहदियूं। कविता जी आत्मा आहे काव्य, कविता जो सरीर आहे पद्य। पर पद्य-रहित गद्य-सरीर में पिण काव्य-आत्मा समाए सघे थी।

3. कवीअ जूं मनोकामनाऊं- हर कंहिं कलाकार जूं मनोकामनाऊं ब हूंदियूं आहिनि- हिकिडी इहा त पंहिंजी कला रचना मंझि पंहिंजा कलात्मक गुण समायां, इहो आहे संदसि पंहिंजीअ कला जे रचना बनस्वति अंदरूनी, विषयी-गति (Subjective) वीचार; बी इहा त मुंहिंजीअ पंहिंजीअ कलात्मक रचना जो ब्रिया कदुरु कनि जीअं मुंहिंजो नामचारो पखिडिजे; इहो आहे संदसि बाहिरूनी विषय-गति (Objective) वीचार। कवीअ जी इहा बी मनोकामना कडहिं कडहिं इहा उणि-तुणि भरी इहा मंशा पूरी थी सघे थी, ब्रियनि जे बुधण ऐं डिसण जे हवासनि जुरिये।

4. काव्य जा विभाग- कवीअ जे मर्थीअ बीअ मन-मुराद जे मद-नजर काव्य ब्रिनि मुख्य विभागनि मंझि विरिहायल आहे- हिकिडो सडिजे थो 'श्रव्य काव्य' (Shravya Kavya - Aural Poetry) ऐं ब्रियो सडिजे थो 'दृश्य काव्य' (Drashya Kavya - Audio-Visual Poetry)।

5. श्रव्य काव्य- श्रव्य काव्य उहो काव्य आहे, जेको सुणी सघिजे थो (श्रवण = सुणणु) ऐं जेको सुणंदे आनंद पडिपी सघे थो। अखियुनि सां डिंसी ऐं पढी बि आनंद पिराए सघिजे थो। पर, पढी आनंद सिर्फ पढियल ई था पिराए सघनि। अणपढ (Illiterates), बियनि खां, पढंदडनि खां, सुणी ई मजमून जो मजो माणे सघनि था। श्रवण मँझि आनंद पिराइण जी एतिरी त शक्ती आहे, जो पढियल बि पँहिंजनि कननि ज़रिये बियनि जो पढणु पाण बुधी, हर्ष हासिलु करे सघनि था। मुशाइरनि मां उहे बि मौज हासिलु करे सघनि था। श्रव्य काव्य जो मूल उदेश आहे कवीअ जे हदे वारनि भावनि (Emotions) ज़रिये रचियल रसनि (Flavours) समायल कविताउनि सां पढंदडनि ऐं श्रोताउनि (सुणंदडनि) जे हदे अंदरि सागिया ई भाव उत्पन्न करणु।

6. दृश्य काव्य- कवीअ जूं उहे रचनाऊं, जेके कंहिं न कंहिं नमूने में असांजे डिसण सां, पर न रुगो पाण पढण सां असांखे आनंद डेई सघनि थियूं, से शुमारिजनि थियूं 'दृश्य काव्य' मँझि। 'दृश्य' शब्द जो अर्थ आहे 'डिसणु'; 'दृष्ट' माना नज़र दृश्य टिनि नमूननि जा थी सघनि था-

(क) **नृत** = नज़ारा (Spectacles, Views), जेके डिसिजनि था बिना कंहिं आवाज़ जे, जीअं त 'स्वांग' या 'सांग' (Pantomimes), 'प्रदर्शिनियू' (Exhibitions) वगैरह।

(ख) **नृत्य** = नाच (Dances), जिनि हलंदे या ताडियुनि जो ताल, या साजनि जो आवाज़, या मधुर संगीत गडोगडु पियो बुधिजे।

(ग) **रूपक** = (Dramatic Representation) जंहिं सां हिन गंज जो मुख्य प्रयोजन आहे ऐं जंहिं शब्द जी व्याख्या, समुझाणी अगिते हली डियण में ईंदी। मथियां टेई बि काव्य आहिनि, इहे बि मन खे मौज डींदड आहिनि। इहे टेई 'अनुकरण' याने नकुल आहिनि। नकुल करण सां बि चडो ई लुत्फु डेई सघिजे थो। अनुकरण (Imitation) एडो त आनंदु थो डिऐ, जो खसीस अहल (Mimicry), बिना कंहिं सजावट जे चडो ई रस थी डिऐ, पर अहलनि

वारे अनुकरण में हास्य रस (Comic Sentiment) समायल हुजे, लेकिन किस्में किस्में नृतनि, नृत्यनि ऐं रूपकनि मंझां तरह तरह जा उमंग उथी सघनि था। दृश्य काव्य जो मूल उदेश आहे ई हर किस्म जे अभिनय (Acting) द्वारा अभिनेताउनि (Actors) ऐं अभिनेत्रियुनि (Actresses) जा अनुकृत कयल रस (Flavours), तिनि सां रंग भूमीअ (Theatre) वारनि दर्शकनि ऐं श्रोताउनि जे दिलियुनि अंदरि भाति भाति जा भाव (Emotions) पैदा करणु।

7. अभिनय (Stage Representation Forms)– रंग भवन में, मंच (Stage) ते जेके दृश्य डेखारिया वजनि था, तिनि खे भरत मुनीअ चइनि हिसनि में विरिहायो आहे-

(क) **आंगिक अभिनय** = Physical Representation (By Limbs)

(ख) **वाचक अभिनय** = Verbal Representation (By Speech)

(ग) **आहार्य अभिनय** = Equipmental Representation

(By Scenic Effect)

(घ) **सात्विक अभिनय** = Emotional Representations

(By Involuntary Actions)

भरत मुनीअ नाट्य शास्त्र जे सज्जनि सारनि बिनि अध्यायनि मंझि हिन विषय जो विस्तार कयो आहे। हिन वाचक, आंगिक ऐं सात्विक अभिनय खे गडे 'सामान्य अभिनय' कोठियो आहे। छो त टिन्हीं जो मदारु सागिए सागिए पात्र ते रखे थो, पर आहार्य अभिनय जो वास्तो घणे भाडे सूत्रधार (Stage Director or Producer) सां आहे। आहार्य अभिनय निस्वत हिन नाट्य अलंकारनि ते घणो जोरु डिनो आहे। भरत मुनीअ हिकिडे समूरे अध्याय में 'चित्र अभिनय' जो पिण जिकिरु कयो आहे, जहिं मंझि हिन मौके मौके मूजिबु जरूरी अंधारनि, रीचकनि वगैरह जो वर्णन कयो आहे। जेतोणीकि इन्हीअ विषय ते हिन बिया अध्याय पिण लिखिया आहिनि। नाट्य दर्पण जे लेखकनि रामचंद्र ऐं गुणचंद्र चित्र अभिनय खे अलगि हैसियत न डेई, खेनि

आंगिक अभिनय मंझि शुमारियो आहे। वाचक अभिनय जो घणो वास्तो रूपक रचींदड सां आहे ऐं बाकी नमूननि वारे अभिनाय जो तालुक पात्रनि ऐं सूत्र-धार सां आहे। घणो करे सभिनी नाट्य शास्त्रियुनि सात्विक अभिनय खे घणी अहमियत डिनी आहे छो त पात्र जेकडहिं पंहिंजो मन अभिनय (Acting) सां नथो लगाए त संदसि वाणी (Speech) भुती पेई भासंदी। रूपक रचींदड बि कडहिं कडहिं हरहिक पात्र जे वाचक हिसे में, सात्विक अभिनय बनस्वति हिदायतूं लिखी छडींदा आहिनि पर तामील न करण जो मदारु पात्रनि ते आहे।

8. नृत्य (Dancing)– नाचु बि हिक किस्म जो ‘अभिनय’ आहे। नाट्य शास्त्र में बिनि नमूननि जा नृत्य समुझायल आहिनि–

हिकिडो, शिव भगुवान जो डसियल ‘तांडव’ नृत्य, जो हुल बखेडे, गोर घबोर वारो नाचु आहे। अजु कल्ह उहो ‘तांडव’ नृत्य कोन कयो वेंदो आहे।

बियो, पारपतीअ जो डसियल ‘लास्य’, लसो, नरमु, कोमल भावनि वारो नृत्य, जेको गान (Music) ऐं गति (Gait) वगैरह सां गडु करे डेखारियो वेंदो आहे। भरत मुनीअ डहनि नमूननि जा लास्य नृत्य समुझाया आहिनि ऐं सागियनि नाचनि जो वर्णन पोइ वारनि सभिनी नाट्य शास्त्रनि कयो आहे। इहे डह लास्य नृत्य हेठींअ रीति आहिनि–

(क) **ज्ञेय पद** (ज्ञेय = गाइणु)– हीउ हिकु उम्दो दृश्य आहे। मंझिसि नृतणी ठही जुडी, सितार खणी, वेठे ई पाण वजाए पाण गाईदी आहे। संदसि वेसु, संदसि विहण जो नमूनो, सितार ते आडुरु हलाइण जो नमूनो, वक्ते हथु खणी आलापिण जो नमूनो ऐं रखी रखी चेहरे ते भावनि प्रघट करण जो नमूनो; हिन लास्य खे चडो कशशी दृश्य थो बणाए।

(ख) **आसीन** (आसना = वेठलु)– हिन लास्य में स्त्री बिना जेवरनि जे, बिना हार सींगार जे, सादनि वस्त्रनि में सांति करे वेठल हुजे, चिंता में व्याकुल। रागु साजु थिए ई कीन। हीउ नृत्य घणो तणो आंगिक अभिनय जो

किंस्मु आहे ऐं पात्रणीअ जो ज़ोरु सात्विक अभिनय ते थींदो आहे, छाकाणि त संदसि अभिनय हलंदे, संदसि चेहरे ते लाग्नापियल भाव पिया डेखारे डींदा आहिनि, जहिडोकि विशाद (मायूसी), दैन्य (गुणित्ती), निरवैद, स्मृति (दुखी कंदडु कारणनि जी यादगीरी) वगैरह।

(ग) **स्थित पाठ** (स्थित = हिक हंधि, बिना चुरिपुरि जे)- हिन लास्य जी मुख्य खासियत इहा आहे त नृतणी, प्रेम में फाथल, हिक ई हंधि वेठे या बीठे, मुनासिब तकरीर में पूरे ढंग सां पंहिंजा वीचार ज़ाहिरु कंदी आहे। वक्ते, बिना ग़ाल्हाइण जे आंगिक अभिनय (Acting) ज़रिये, वेठे का चिठी लिखंदी आहे, पर जे सूत्रधार चाहे त चिठीअ में जेकी वेठे लिखंदी आहे, उहो पढंदी बि वेंदी आहे।

(घ) **पुष्प गणडक** (प्राचीन ज़माने में उज्जैन जे भरि वारो हिकु स्थान)- हीउ प्राचीन उज्जैन वासियुनि जो नृत्य चयो वजे थो। हिन में पुरुष स्त्रियुनि जो वेसु पहिरीनि ऐं स्त्रियूं पुरुषनि जो वेसु पहिरीनि ऐं इन्हीअ रीति वाणियूं पिण उबतियूं बोले, हास्य रस पैदा कनि। हीउ हिकु रूपक नृत्य आहे।

(ङ) **परछेदक** (परछेदक = टोड़ण = अंजाम शकनी)- हिन नृत्य में अहिडियुनि नारियुनि जो दृश्य थिए, जेके पंहिंजे वेसाह घाती पुरुषनि खे ज़णु त खिम्या थियूं डियनि ऐं पोइ ताना तुनका बि थियूं हणनि त वरी भाकुर बि थियूं पाईनि। नृत्य जो समूरो करण (Posture) भाकुर पाइण ते ई ब्रधल थिए थो।

(च) **त्रि गूढ़** (त्रि = टे, गूढ़ = गुप्त)- हिन नृत्य में बदिलायल पोषाक, वाणीअ ऐं हलति, टिन्हीं जो गड्डु उपयोग थिए थो। गड्डोगड्डु मधुर गीत ऐं पूरो ताल मिले थो। विश्वानाथ जो 'साहित्य दर्पण' में चवणु आहे त हीउ नाचु मर्द, ज़नाना वेस पहिरे कंदा आहिनि। हीउ पुष्प गणडक वांगुरु हास्य रस वारो नृत्य आहे।

(छ) **उक्त प्रतियुक्त** (उक्त = चवणु, प्रतियुक्त = जवाब)- हीउ नृत्य प्रश्न-उत्तर, सुवाल-जवाब, सुवाल जे जवाब में सुवाल; इन्हीअ नमूने प्रियतमा जे नखरनि, अलोलियुनि, ताननि तुनकनि जे इज़हार ऐं मधुर भाषणनि (Sweet Recitations) सां कयो वेंदो आहे। हिन में वाचक अभिनय सर्व उत्तम थिए, जेहिंजो दारोमदारु रूपक रचींदइ ते ई थिए थो। पर पात्र खे आंगिक अभिनय लाइ कारीगरीअ खां कमु वठिणो थो पवे ऐं पूर्ण सफलता हासिलु करण लाइ पात्र खे सात्विक अभिनय जो तुज उपयोग करिणो थो पवे।

(ज) **द्व मूढहक** (द्व = आकास = Orbit, मूढह = मूढ = मथो = चोटी = Apex)- हीउ नृत्य गोल चकर में कयो वेंदो आहे। संदसि मधुर गीतनि, संदसि प्रेम भाव ऐं उन जे अनुभावन जे शानदार किरिणनि (Postures) ऐं रीचकनि (Facial Expressions) ऐं संदसि उत्तम आहार्य अभिनय सां नृत्यक (Dancers), डिसंदइनि जे आत्माउनि खे आकास डे अहिडे नृत्य वसीले नेई सघनि था। विश्वानाथ जो 'साहित्य दर्पण' में चवणु आहे त हीउ नृत्य रूपकनि जे आरम्भ (Commencement) ऐं प्रयत्न (Endeavour) वक्त न फ़कति पाण आलीशान लगंदो आहे, पर सजे रूपक खे मथे खणी छडिंदो आहे। आरम्भ ऐं प्रयत्न रूपक जू कहिड़ियूं अवस्थाऊं आहिनि, रूपक जा कहिड़ा वक्त आहिनि, उन विषय जो जिकिरु अगिते हली कयो वेंदो।

(झ) **उत्तमोत्तम** (उत्तम में उत्तम)- हिन नृत्य सां गडु अनेक गीत थींदा आहिनि, अनेक मधुर साज वज्जंदा आहिनि, खिल खुशीअ जा भाव प्रघट थींदा आहिनि ऐं कडहिं कडहिं थोरी खेचल बाजी पिण थींदी आहे। वक्ते हिन नृत्य में स्त्री पुरुष खे ताना हणंदी आहे ऐं पुरुष संदसि ईर्खा कढण ऐं क्रोध लाहिण जी कोशिश कंदो आहे ऐं पछाडीअ में परिची वेंदा आहिनि। आंगिक अभिनय जी मंझिसि प्रधानता थींदी आहे, छाकाणि त मंझिसि अनेक अंगार (Movement of Limbs), किरण (Posture) ऐं रीचक (Facial

Expressions) इस्तेमालु कयल हूँदा आहिनि। ताननि जा इशारा, शर्माइण जा इशारा, परिचाइण जा इशारा, हरकहिं गाल्हि लाइ इशारा ऐं परची वजण जा रीचक, जिनि मिडनेई जूं भरत मुनीअ लंबियूं लंबियूं यादाशतूं डिनियूं आहिनि। उहे सभु लागापियल सात्विक अभिनय सां, किस्म किस्म जे भाव ऐं अनुभाव प्रघट करण सां अहिडे नृत्य खे उत्तम में उत्तम करे सघनि था।

(ज) **सैधव का** (सिंधु देस जो)– हीउ ब हज़ार वरिह्य झूनो नृत्य, प्राचीन सिंधू देस जो नृत्य भरत मुनीअ पंहिंजे नाट्य शास्त्र में चडीअ तरह वर्णन कयो आहे। हिन नृत्य जो वाचक अभिनय, लाजमी तौर सिंधू देस जे उन वक्त वारीअ ‘प्रचलित प्राकृत’, ‘सैधव’ प्राकृत में थियणो हो। हिन नृत्य जो पात्र को निरास थियल प्रेमी या का निरास थियल प्रियतमा हुजे ऐं संदसि निरासाईअ जो कारण इहो हुजे त संदसि प्रियतमा या संदसि प्रेमी ठहिरायल वक्त ऐं हंधि न आयल हुजे। इहा निरासाई ज़ाहिर करण लाइ पूरीअ रीति मिलायल साजनि जी सहायता वरितल हूंदी आहे। तुज अंधार, किरण ऐं रीचक इस्तेमालु कयल हूँदा आहिनि। जे पंहिंजे निरासाईअ जो इजहारु पाण सां भुणि भुणि में करे त उन भुणि भुणि सां बि साज पूरीअ तरह मिलायल हुजनि। मुख्य पात्र, कंहिं सहायक पात्र खे बि इशारनि सां पंहिंजी निरासाई समुझाए सघे थो। विश्वानाथ पंहिंजे ग्रंथ ‘साहित्य दर्पण’ में चयो आहे त ‘सैधव’ नालो उन्हीअ देस जे प्राकृत जो आहे, जिते जा घोड़ा मशहूर हुआ ऐं जिते ‘संधो’ लूणु हूंदो हो। शिणग भूपाल नाले हिक विद्वान पंहिंजे ग्रंथ ‘रसार्णव सुधारिका’ में ऐं सागर नंदन नाले ब्रिए विद्वान पंहिंजे ग्रंथ नाले ‘नाटक-लक्षण रतन कोश’ में पिण ‘सैधविका’ नृत्य खे सिंधू देस जो नृत्य कोठियो आहे पर हू ब्रई चवनि था त हिन नृत्य में हरूभरू हिकु ब पात्र न हुजनि, भली वधीक हुजनि पर सभेई सिंधू देस जी ‘सैधव भाषा’ में वाचक अभिनय (Verbal Acting) कनि ऐं आहार्य अभिनय (वेस ऐं सींगार) बि सिंधू देस सां ठहिकंदड़ हुजेनि। सागर नंदन इएं बि चवे थो त सैधव जे नर्तकनि खे उन वक्त जा सिंधी कोडु ऐं ब्रिया अहिड़ा टुकरा पहिरण घुरिजनि, जिनि मां बि

पथिरो हुजे त हू सिंधू देस जो नृत्य करे रहिया आहिनि। सभिनी विद्वाननि, नृत्य जो हीउ नालो वधीक समुझाईदे, इहो पिण चयो आहे त नृत्य हलदे, अभिनय मॉझि शोक ऐं निरासाई इऐं मिलायल हुजनि, जीअं उहो निरासाई शोक रस (Sentiment of Pathos) में लूण-पाणीअ मिसलि मिलियल डिंसिजे ऐं अंधारनि, किरणनि ऐं रीचकनि जी चुरिपुरि, सैधव घोड़े जी चाल मिसलि हुजे।

भरत मुनीअ जे नाट्य शास्त्र जा के छापा आहिनि, जिनि में ब वधीक लास्य नृत्य समुझायल आहिनि पर विद्वाननि खे इऐं थो समुझ में अचे त इहे असुली दस्तखत में पोइ टुंबियल आहिनि ऐं हिन रीति आहिनि-

(अ) **विचित्र पद**- हिन नृत्य में प्रेम में फाथल पात्र पंहिंजीअ प्रियतमा जे तस्वीर अगियां पाण विंदुराए थो ऐं हाजिरीननि खे पंहिंजे आंगिक ऐं सात्विक अभिनय सां आनंदित करे थो।

(ठ) **भावत**- हिन नृत्य मॉझि हिक महासुंदरी सुपने में पंहिंजो प्रीतम डिंसी थी जागे ऐं सोच वीचार में पइजी, तरह तरह जा भाव ऐं अनुभाव प्रघट थी करे।

9. गति (Gaits)- हलण जा नमूना, पात्रनि जे दर्जे (Status) सां ठहिकंदड़ विखूं, उन्हनि जी डेघि ऐं हरहिक विख जो धरतीअ ते पूरो पूरो दाब, तिनि खे बि भरत मुनीअ का घटि अहमियत कीन डिंनी आहे। हर किस्म जे अनुकरण खे साख्यात ठहिकाइण जो ज़रूर दुहिराए, हुन चयो आहे त ऊच पदवीअ वारनि जी विख पुख्ती ऐं धीरे धीरे वधंदड़ हुअणु घुरिजे ऐं मध्यम दर्जे वारनि जी विख कुझु तेज हुअणु घुरिजे; बाकी तकिड़ा कदम ऐं बिरांधूं अधम जे दर्जे वारनि सां ई ठहिकनि। न्यारियुनि हालतुनि जो बि जिकिरु कयो अथसि। जीअं त बीमारनि जो हलणु, बुख में पाहि थींदड़नि जो हलणु, खौफाइती खबर सुणी वारदात डे वजणु, विछिड़ियलनि जो पंहिंजे सिर वैरागी हलणु या विछिड़ियलनि वटि हली वजणु; सभिनी जी गति समुझाई अथसि। गति जे सिलसिले में भांति भांति जूं यादाशूं, अंधारनि

जूं, किरणनि जूं, रीचकनि जूं, असुल जोड़ियल भरत मुनीअ जूं, तिनि जा वडा ग्रंथ अंग्रेजीअ, हिंदीअ ऐं बियुनि बोलियुनि में जाहिर थियल आहिनि ऐं अजु कल्ह जा फिल्मी तोड़े मंच जा सूत्रधार (Producers) मंझाउनि घणो ई की पिराए रहिया आहिनि।

10. गीत (Vocal Music)— हिन विषय खे बि भरत मुनीअ वड़ी अहमियत डिनी आहे ऐं खांडसि पोइ ई भारत जे संगीत विद्या जोरु पकिड़ियो आहे। नाट्य कला जे बारे में चयो त गीत बाबति घणो ई अथसि, पर हिते के अहम गाल्हियूं ई दुहिराइणु जरूरी आहिनि। हरकहिं खेल जो आरम्भ, नांदी (Invocation), राग में करणु लाजमी ठहिरायो अथसि। मौसमनि जा गान अहिडा ई पेशि करण लाइ लाजमी ठहिराया अथसि, जिनि हलंदे, चालू मुंद जो पूरो वायूमंडल काइमु थिए। सनेहा ऐं चिठियूं चपाटियूं, तिनि खे बि गीतनि में वर्णन करण जी सलाह डिनी अथसि। समुझायो अथसि त मंच तां, डीहं रात जा अठ ई पहर संगीत में कीअं कीअं नृत्य करे सघिजनि था। हरहिक भाव लाइ तुज गीत ऐं तुज साज बुधा अथसि। रूपकनि जे समूरे कार्य ऐं वस्तूअ (Plot) लाइ पंजनि किस्मनि जा धुव गीत समुझाया अथसि—

(क) **प्रवेशकी धुव पद** (प्रवेश = घिड़णु = घुसणु = Entry)— हिन ध्रुव पद जरिये रूपक जे आरम्भ जी पधिराई कजे ऐं को मुख्य पात्र मंच ते अचिणो हुजे, तंहिंजी बि हिन ध्रुव पद जरिये पधिराई कजे।

(ख) **निष्कर्मकी ध्रुव पद** (निष्कर्म = घर खां बाहिरि वजणु)— पात्र मंच छडिण ते हुजे (Exit Time), का गाल्ह खतमु थियण ते हुजे, को पर्दो लहिणो हुजे, तंहिं समें लाइ आहे इहो ध्रुव पद।

(ग) **आक्षेपकी ध्रुव पद** (आक्षेपक = उछिलाइण लाइ, खेंचण लाइ)— हीउ ध्रुव पद हलंदइ गीत वगैरह जी ओचितो लय बदिलाइणी हुजे, तडहिं जणु त विच में उछिले विझिबो आहे। अंग्रेजीअ में चइजेसि— Interlude. ओचितो ई ओचितो, को भाव या विभाव बदिलाइणो हुजे, तडहिं बि हीउ ध्रुव पद कतब आणिजे।

(ध) **प्रसाद की ध्रुव पद** (प्रसाद = सुंदर चीज)- आक्षेपी ध्रुव पद सां विधल रुखने खे सुधारण लाइ रूपक विच में का बात बिगिड़ी वजे त उन खे सुधारण वक्त इहो ध्रुव पद कतब आणिबो आहे। रंग (Audience) खे रंग महल में राजी रखण लाइ इहो ध्रुव पद मुफ़ीद आहे। अंग्रेज़ीअ में चइजेसि- Decorative.

(ग) **इन्द्रो (Intervenang Song)**- रूपक हलंदे इत्फ़ाक़ सां को पात्र बेहोश थी किरी पविणो हुजे, या को जौलान अचिणो हुजेसि, या ज़हर वगैरह जे असर हेठि आयल हुजे या संदसि पोषाक या को हार सींगार बदिलाइणो हुजे त उन विच में अंतरो कतब आणिजे, जीअं अण सहाईदइ ग़ाल्हियूं ढकिजी वजनि। किनि विद्वाननि वरी अंतरे खे अंक जे ख़तम थियण वेल जो गीतु ठहिरायो आहे, प्रवेशकी ध्रुव पद जे उबतड़ि।

11. **रूपक**- सिंधु में हुआसीं, तड़हिं सभिनी किस्मनि जे Dramas लाइ सिंधी लफ़्ज़ु 'नाटक' कतब ईदो हो। उते हिन सिलसिले में 'रूपक' शब्द बुधबो कीन हुआ। परमानंद मेवाराम जी सिंधु में निकितल अंग्रेज़ी-सिंधी डिक्शनरी, तंहिं में 'Drama' जा सिंधी लफ़्ज़ पढ़ियासीं। फ़क़ति 'नाटक' ऐं 'खेल' ऐं सिंधी-अंग्रेज़ी डिक्शनरी, तंहिं में 'रूपक' लाइ अंग्रेज़ी लफ़्ज़ु पढ़ियोसीं फ़क़ति 'Allergy'; पर 'Drama' जो तुज सम-अर्थी शब्द (Synonym) आहे 'रूपक'। इन्हीअ शब्द जी अखरी माना त पधिरी पेई आहे; राम सीता जो 'खेल' थो थिए; को पात्र रामचंद्र जो 'रूपु' थो धारे, का पात्रणी या को पात्र सीता जो 'रूपु' थो धारे, मंच खे सींगारे खेसि दशरथ जे महल जो 'रूपु' थो डिनो वजे, को असां जहिड़ो इंसान जोगो वेसु पहिरे, पाण खे पुठियां अगिड़ीअ जहिड़ो पुछु टुंबे, बांदर हनुमान जो 'रूपु' थो धारे; इहो मांडाण आहे बि 'रूपक' ऐं सडिजे बि 'रूपक'। भरत मुनीअ जे नाट्य शास्त्र में 'नाटक' जो चडो चोखो वर्णन थियल आहे। पर इहो 'नाटक' नाट्य शास्त्र खां वठी बिनि हज़ार सालनि वारनि सभिनी भारती ग्रंथनि में

जाणायल आहे, ड़हनि मुख्य 'रूपकनि' में हिकिड़ो 'रूपक'। सभेई 'रूपक' नाटक कीन था सड़िजनि। 'नाटक' हेठियनि ड़हनि रूपकनि मां हिकिड़ो रूपक आहे-

(क) नाटक (ख) प्रकरण (ग) भाण (घ) वया योग (ङ) समवकार (च) डम (छ) ईहा मृग (ज) उत्सर्षटांक (झ) व्यथी (ञ) प्रहसन।

इन्हनि ड़हनि रूपकनि खे गडे भरत मुनीअ जे वक्त खां वठी कोठीनि 'दस रूपक'। भरत मुनीअ उन वक्त जे हालतुनि मूजिबु पाण जोड़िया या अगे ई बर्पा थियल वर्णन कया ड़ह रूपक, फ़क़ति नाट्य कला जे वीचार खां। खांडसि सदियूं पोइ धनंजय नाले विद्वान पैदा थियो, जौंहिं पंहिंजे ग्रंथ नाले 'दश रूपक' में बि वरी दुहिराया उहे ई सागिया ड़ह रूपक, जेतोणीकि हुन इन्हीअ अंग 'दश' खे रंगु ड़िनो धर्म जो, जीअं त पंहिंजे ग्रंथ में चयाई त रूपक ड़ह आहिनि। छाकाणि त भगुवान विष्णूअ बि ड़ह अवतार धारिया। 'नाट्य दर्पण' जे रचींदड़नि रामचंद्र ऐं गुनचंद्र बुधाया बि वधीक रूपक, सबबु इहो ड़ेई त संदनि जैन धर्म जा हुआ बारहं आगम, सो रूपक थियणु घुरिजनि बारहं ऐं न विष्णू भगुवान जे अवतारनि जेतिरा ड़ह! ड़ह की बारहं, पर मिडेई सदियुनि खां सड़िजनि 'रूपक', जिनि मां फ़क़ति हिकिड़ो आहे 'नाटक', जेको बराबर सभिनी खां लंबो 'रूपक' थिए थो। हरहिक किस्म जे रूपक जे नायक (Hero), नायिका (Heroen), बियनि पात्रनि या नटनि, बियुनि पात्राणियुनि या नटियुनि वगैरह बाबति भरत मुनीअ ऐं पोइ वारनि नाट्य कलाकारनि घणेई क़ानून ठहिराया आहिनि। हरहिक किस्म जे नायक या नायिका, नट या नटिणीअ खे कहिड़नि कहिड़नि इंसाननि जा कहिड़े कहिड़े नमूने में अनुकरण करिणा आहिनि, उहे नेम हरहिक किस्म जे रूपक लाइ अलगि अलगि आहिनि, जेतोणीकि के क़ानून मिड़िनेई रूपकनि सां आम तौर बि लागू आहिनि, जिनि जो अभ्यासु हिन बैदि कंदासीं; पर इहो दिलि सां हंडाए छड़िण घुरिजेऊं त नाटकु हिक किस्म जो रूपकु आहे।

12. वेस धारी ऐं सभु इंसान- हर कंहिं किस्म जे रूपक में घणो करे इंसाननि जे चरित्रनि जो अनुकरण (Imitation) थो थिए। ‘रूपक रचींदड़’ लाइ (न फ़क़ति ‘नाटक नवीस’ लाइ !) तोड़े हर किस्म जे रूपक जे सूत्र धार (Producer) लाइ इहो ज़ाणणु ज़रूरी आहे त सभिनी इंसाननि जा मुख्य गुण अवगुण कहिड़ा कहिड़ा थींदा आहिनि, जिनि जो अनुकरण करिणो आहे। भरत मुनीअ, इंसाननि खे संदनि चरित्र पटांदर हेठियनि टिनि तबक़नि में विरिहायो आहे-

(क) उत्तम इंसान = High Type

(ख) मध्यम इंसान = Middling Type

(ग) अधम इंसान = Low Type

(क) उत्तम इंसाननि जा गुण हेठियां बुधाया अथसि-

1. जितेंद्रिक याने इंद्रियुनि खे जीतण जो गुण
2. ज्ञान = Wisdom
3. शिल्प कलाउनि में होशियारी = Proficiency in Fine Art
4. गंभीरता = Sedateness, Staidness
5. उदारता = Broad Mindedness
6. धीरणा = Resoluteness
7. विज्ञान शास्त्रनि (Sciences) जो अभ्यासु
8. त्यागु = Sense of Sacrifice to Benefit Others

(ख) मध्यम इंसाननि जा गुण-

1. लोक वहिंवार में चतुराई
2. शिल्प कलाउनि ऐं विज्ञान शास्त्रनि जी कुझु ज़ाण
3. मधुरता = Affable Manners

(ग) अधम इंसाननि जा अवगुण-

1. क्रोधी भाव
2. रोगी वाणी = Sickening (Vulgar) Talk
3. दह शीलता = सुशीलता जे उबतडि = दुष्टता
4. पशुता = चुगल खोरी
5. मित्र द्रोह = Treachery in Friendship
6. अकृतघ्नता = Ingratitude
7. कलह प्रीता = झेड़ा गोरी
8. पापी जीवन
9. पर दर व्यापहरता = पराई पूंजी हड़प करणु

13. ऊच नायकनि जा गुण- इहे भरत मुनीअ हेठियां बुधाया आहिनि-

(क) चरित्र शोभ- जीअं त वडनि लाइ इज्जत, नंढनि लाइ हमददी, सूरमता, हुनरमंदी।

(ख) विलास- जीअं त फुडिताई, पुख्तो कदम, पूरो डिसणु, निहारणु ऐं गाल्हाइणु ऐं गाल्हाइण वक्त मुंहं में मुश्क।

(ग) माधुर्य- सभिनी सां मिठो सुभाउ।

(घ) धत्रिय या स्थरीय = महकम मिजाजी = Steadfastness

(ङ) तेजस = Brilliance

(च) ललिता = Pleasant Speech

(छ) उदारता = Magnanimity

(ज) गंभीर्य = Sedateness

14. नायकनि जा मुख्य किस्म- घणो करे हरकांहिं रूपक जी वस्तू (Plot) संदसि नायक जे जीवन बाबति ई जुड़ियल हूंदी आहे, रूपक जो समूरो

कार्य (Denounment) उन्हे नायक बनस्वति ई उथिलंदो आहे। अंत में कार्य जो समूरो फल याने Fruit या Motif बि उन्हे नायक खे ई पलइ पवंदो आहे। नायक या नेताऊं, अलगि अलगि वस्तुनि पटांदर हेठियनि चइनि किस्मनि जा थी सघनि था-

(क) **धीर उदात (Exalted & Firm)**- उदात चरित्र वारो नेता तंहिंखे ठहिरायल आहे, जो निहायत गंभीर, क्रोध या शोक पैदा कंदड़ हालतुनि हेठि सदाई अडोल ऐं अटल, पंहिंजी वड्डाई (अभिमान) न कंदड़, अहंकार खां आजो, खिम्यावान ऐं कृपावान हुजे।

(ख) **धीर उधत (Haughty)**- उधत नायक घमंड वारो, हठीलो, जुरिर्यती, ईखां भरियल, वक्ते वेसाह घाती, फिरिणो घिरिणो, स्त्री सम्बंध में बे भरोसे, दौलाबी ऐं वक्ते गंदे सुभाव वारो हुजे।

(ग) **धीर ललित (Light Hearted)**- ललित चरित्र वारो नेता कोमल सुभाव वारो, सुख दरसी (Optimistic), सदाई बे चिंतो, वणंदड़ सुभाव वारो, ज़बान जो मिठो ऐं वक्ते शिल्प कलाउनि (Fine Arts) जो काडियो हुजे।

(घ) **धीर प्रशांत (Calm)**- प्रशांत नायक माठीणे सुभाव वारो, वक्ते सहजी (Easy-Going), संओं सूधो पर न्यारियुनि हालतुनि हेठि कुझु रमजी ऐं अटिकली हुजे।

15. बियनि बियनि नमूननि जा नायक- भरत मुनीअ ऐं बियनि विद्वाननि नायकनि जी विरिहासत हेठींअ रीति पिण कई आहे-

(क) **कुंवारा या परिणियल-**

1. पति नायक बाकाइदे परिणियल स्त्रीअ वारो।
2. उप-पति नायक, बिना शादीअ जे, हिकिडीअ स्त्रीअ वारो।
3. वैशक, वैश्या वटि वजी प्रेम वंडिण वारो।

(प्राचीन समे में के राजाऊं बि उप-पति या वैशक हूदा हुआ)।

(ख) ऊच मुरादुनि वारा-

1. धर्म वीर नायक
2. युद्ध वीर नायक
3. दया वीर नायक
4. दान वीर नायक

(ग) चरित्र पटांदर परिणियल नायक-

1. अनुकूल- जेको पहिंजीअ हिकिडीअ परिणियल स्त्रीअ सां वफादार हुजे।
2. दक्षना- जेको सभिनी परिणियल स्त्रियुनि सां हिक जहिडो पूरो वरिताउ करे।
3. शठ- जेको पहिरींअ खां लिकी लिकी बीअ वटि वेंदड़ हुजे।
4. धृशठ- जेको निरलजो हुजे ऐं खुलियो खुलायो बियनि स्त्रियुनि जो पीछो करे।

16. नायकनि जा दर्जा- जिनि रूपकनि में वस्तूअ (Plot) जी जरूरत पटांदर हिक खां वधीक नायकनि जी जरूरत थिए थी, उन्हनि नायकनि खे भरत मुनीअ हेठियनि दर्जनि में विरिहायो आहे-

(क) नायक Hero

(ख) अनु नायक Subsidiary Hero

(ग) प्रति नायक Adversary Hero

नायक रूपकनि में मुख्य दर्जो वालारे थो, पर अनु नायक रूपक जे उप कथा (Subsidiary Plot or By Plot) जो अनु नायक कोठिजे थो। रूपकनि में नायक जो विरोधी या खलनायक (Villain) प्रति नायक कोठिजे थो। (खर! खराब थिएं, हया! हचारा! शाह)।

17. ब्रिया पात्र- नायक खे पंहिंजे फल (Motif) हासिलु करण लाइ उन्हीअ फल जे किस्म पटांदर जेके सहायक पात्र घुरिजनि था, तिनि खे भरत मुनीअ टिनि मुख्य वर्गनि में विरहायो आहे-

(क) **धर्म वर्ग-** नायक जे धर्म-फल प्राप्त करण लाइ सहायक पात्र हुजनि- जोगी, तपस्वी, ब्रह्मण, शासन सलाहकार वगैरह।

(ख) **अर्थ वर्ग-** दुनियवी कार्जनि सिद्ध करण लाइ अलगि अलगि नमूने जा सहायक हुजनि- सुलह सांत समे, इंतजामी कमनि में मददी, धारियनि काहनि खां बचाव जारी रखण जे कम में मददी, जोगि जे समे फौजी मददी, ऐं ब्रियनि अहिङनि कार्जनि लाइ नायक जा सहायक घणो करे संदसि मंत्री ऐं ब्रिया कार्य कर्ताऊं थियनि था, जिनि जे लियाकतुनि बाबति बि भरत मुनीअ घणो ई बुधायो आहे।

(ग) **काम वर्ग-** प्रेम जे कार्जनि लाइ, रूपक जे समूरियुनि नाजुक हालतुनि पटांदर भरत मुनीअ धूत (Male Agents) ऐं धूतियूं (Female Agents) तिनि बनस्वति बि घणो ई बुधायो आहे। अगियनि वक्तनि में भारती राजाडनि खे हरम खाना (Harems) बि हूँदा हुआ; संस्कृत हिंदीअ में ज़नानखाननि खे चवनि 'अंत पुर' या 'अंत घर' (अंत = अंदिरियों)। रूपक जी वस्तू (Plot) याने कथा, कंहिं बि अहिङे प्राचीन राजा बनस्वति हुजे, तंहिं लाइ अंत पुर जा शेवाधारी पात्र भरत मुनीअ बुधायो आहिनि, जेके आहिनि 'कंचूकी', 'वर्षावर', 'प्रतिहार', 'वृद्ध' वगैरह।

18. विदूषक (Jester)- नाट्य शास्त्र में हिन पात्र खे घणी अहमियत डिनल आहे। अखिरी अर्थु हिन रीति आहेसि- व = अनेक रूपता, दूषक = दोषु या डोहु डींदु। विदूषक, अधिकारी नायक जो घाटो मित्र हुजे। विदूषक हेठियनि चइनि मां हिकिडो हुजे-

1. सन्यासी 2. ब्रह्मण 3. राजा जो नौकर 4. सेखड़ाट या विद्यार्थी।

विदूषक हुजे सियाणो पर बाहिरींअ रीति डिसण में अजाया सजाया डोह डियण या हरूभरू फेटारो विझणु ऐं सागिए वक्त पँहिंजे वाक्य वाणीअ सां दिलि बहिलाइण में कारीगरु हुजे। छाकाणि त संदसि मुख्य कमु आहे हास्य रस पैदा करणु, तँहिंकरे बाहिरिएं रूप ऐं वेस बाबति बि भरत मुनीअ घणियूं हिदायतूं डिनियूं आहिनि। जीअं त-

1. बदन जी बेडौलाई ऐं बदिजेबाई; तमामु सन्हो ऐं तमामु डिघो, गंजो, ठोड़हो, लूलो लंगडो, भुडो, कुबो वगैरह हुजे।

2. वेस खिलाईदडु, जीअं त तमामु डिघा कपिड़ा या बिल्कुल नंढा कपिड़ा, वक्ते कपिड़नि ते चतियूं लगल, अजीब गरीब नमूननि जा हार गले में वगैरह।

3. गाल्हाइण में बखी, बक बक, पर चतुराई।

नाट्य दर्पण में विदूषक जा गुण हेठींअ हिकिड़ीअ तुक में डिना विया आहिनि-

‘विकृत आंग वाचो वेसह विदूषकह’

याने त विदूषक बदन, ज़बान ऐं वेस में विकृत हुजे, असाधारण हुजे, गैर रवाजी हुजे।

19. नायिका (Heroine)-

(क) मुख्य किस्म- जीअं नायकनि जा चार मुख्य किस्म ठहिरायल आहिनि, तीअं नायिकाउनि जा बि अहिड़ा ई चार किस्म ठहिरायल आहिनि। छाकाणि त आम तौर वस्तुअ जे फल हासिलु करण लाइ नायक खे पाण जहिड़ी जीवन साथिण वधीक कारगर थिए थी। इहे चइन मुख्य किस्मनि जूं नायिकाऊं आहिनि-

1. धीर नायिका- धीरज वारी
2. ललित नायिका- मौजीली
3. उदत नायिका- सूरमी
4. नभ्रत नायिका- गंभीर, माठीणी।

(ख) नायिका जे गुण पदवीअ पटांदर- हेठियनि चइनि नमूननि जूं नायिकाऊं बुधायल आहिनि-

1. दिव्य नायिका Divine Consort
2. नृप नायिका या क्षत्रिया Royal Consort
3. कुलजा, कुल स्त्री Noble Consort
4. गणिका या पुण्य कामिनी या मुल्ह खरीद कामवती Courtesan

(ग) वहीअ पटांदर प्रियतमाऊं-

1. मुग्धा Youthful
2. मध्या Adolescent
3. प्रगल्या Mature

(घ) पुरुष स्त्री सम्बंध पटांदर-

1. स्वय नायिका- नायक जी परिणियल स्त्री
2. प्रक्य नायिका- नायक जी कुंवारी प्रेमिण या रखियल सरीयत
3. साधारणी नायिका- वैश्या या नर्तकी, जेहिं कामी नायक जे दिलि खसी हुजे।

(ङ) घटि वधि प्रेम पटांदर-

1. जेशनाऊं Senior Consorts
2. किंशनाऊं Junior Consorts

(च) प्रेमियुनि जे हालतुनि पटांदर-

1. वासक सज्जा नायिका (वासक = अंग, सज्जा = सजाइणु)- उहा नायिका, जेका हार सींगार करे तयारु थी आहे, जो संदसि प्रियतम खेसि अची गडिजिणो आहे। हीअ 'समभोगी' नायिका बि चइजे। (सम्भोग = Union)।

2. **विरह उत्कंठा** (विरह = विछोड़ो, उत्कंठ = परेशान)- उहा नायिका, जेका नायक खे मिलण लाइ परेशान रहे।

3. **स्वधीन भर्तरिका** (स्वधीन = पंहिंजे वस में आंदल, भर्तरिका = भतार वारी)- वासक सज्जा वांगुरु हीअ बि समभोगी नायिका आहे। पहिरींअ जो समभोग थियणो आहे, हिन जो थी चुको आहे।

4. **कलह अंतरिका** (कलह = झेडो झटो, अंतर = विच में)- हिन नायिका जो नायक सां हसद वगैरह कारण झगिडो थी पवे थो, पर हालतूं बदिलजनि ऐं नायिका पछिताव जाहिरु करे।

5. **खंडता** (खंडन = टोड़णु)- जंहिं नायिका सां नायक अंजामु टोड़े।

6. **विप्र लब्धा** (विप्र = धोखो)- धोखे खाधल नायिका।

7. **परवशत प्रिया** (परवशत = परदेस वियल पिरिंअ जी नायिका)- रूपक में इहा नायिका उचा वस्त्र पहिरणु ऐं हार सींगार करणु छडे डे।

8. **अभिसारिका** (अभिसार = गडिजण लाइ रवानो थियणु)- हिन किस्म जी नायिका या पाण पिरिंअ वटि हली वजे या नीढ डेई प्रेमीअ खे पाण वटि घुराए। अभिसारिकाऊं वरी टिनि नमूननि जूं बुधायल आहिनि-

(i) **ज्योतिषिनी या शिकिल अभिसारिका**- हीअ नायिका चांदनी रात समें अछा सादा वस्त्र पहिरे नायक डे रवानी थिए।

(ii) **कृष्ण अभिसारिका या नीला**- हीअ आधीअ रात जो कारो घूंघट पहिरे (कृष्ण = कारो) पिरिंअ डे वजे।

(iii) **दिवस अभिसारिका**- हीअ डीहं डिठे जो खुलियो खुलायो प्रियतम डे वजे।

भरत मुनीअ खां पोइ वारनि नाट्य शास्त्रियुनि अहिडियुनि नायिकाउनि जे अंदाज खे पिए वधायो आहे, तां जो भानू दत्त 'रस मंजरी' में जुमिले 1152 किस्मनि जूं नायिकाऊं वर्णन कयूं आहिनि।

20. प्रियतम ऐं प्रियतमाऊं- रूपकनि जूं कहाणियूं घणे भाडे पुरुष स्त्रीअ जे प्रेम बनस्वति थींदियूं आहिनि। अगिते हली ब्रिए कांड में बुधायल आहे त इंसान जे दिलि अंदरि जेके उमंग थियनि था, जेके भाव उत्पन्न थियनि था, तिनि में मुख्य में मुख्य आहे प्रेम भाव (Erotic Emotion), जेहिंजो सम्बंध आहे श्रृंगार रस (Aesthetic Sentiment) सां। भरत मुनीअ नाट्य कला जे सिलसिले में पुरुष स्त्री संजोग ऐं विंजोग वगैरह जे बारे में रूपक रचींदड़नि ऐं सूत्र धारनि लाइ घणेई नेम जोड़िया समुझाया आहिनि, जिनि जो सरसरी अहवालु हेठि डिजे थो-

(क) पुरुष में कशशी गुण- भरत मुनीअ बुधायो आहे त नाट्य कलाकारनि खे पुरुष जा हेठियां कशशी गुण ध्यान में रखणु घुरिजनि-

1. पुरुषता या मर्दीअ वारो सरीरु Manly Physique
2. शोभनीक रूपु Beautiful Features
3. सुडौल अंग Symmetrical Features
4. कशशी आकृत या डेख Comely Appearance
5. गोरो रंगु Fair Complexion
6. ऊच जनमु High Birth
7. जुवानी Youth

(ख) पुरुष जा कशशी कारनामा-

Man's Attracting Accomplishments

1. वीरता जा कम Deeds of Valour
2. साहसी कमनि में सोभ Success in Exploits
3. दुश्मननि खे जीतणु Conquests Over Enemies
4. बाजुनि जी वीरता Feats of Arms
5. शिल्प कलाउनि में जसु खटणु Fame For Fine Arts

6. विद्वत् Scholarship
7. उचित कर्म या नेक अफ़ाल Righteous Deeds
8. उदारता Magnanimity
9. रॉदियुनि में होशियारी Sportsmanship
10. खुदि कुर्बानीअ जो मिसालु Examples of Self Sacrifice
11. काफ़ी पूंजी Ample Resources
12. बाला दस्ती Dominating Power

(ग) नारीअ मंझि कशशी विभाव-

1. नारीअ जी अवस्था The Female Age
2. नारीअ जो रूपु आकारु The Female Lineaments
3. नारीअ जी रूप प्रियता The Female Loveliness
4. नारीअ जी सुंदरता The Female Beauty
5. नारीअ जो लुभाव The Female Charm
6. नारीअ जी मधुरता The Female Sweetness
7. नारीअ जी कोमलता The Female Delicacy

(घ) नारीअ जूं कशशी जोभन अवस्थाऊं-

1. युव जोभन अवस्था Adolescence
2. नई जोभन अवस्था Fresh Youth
3. फूहु जोभन अवस्था Blooming Youth
4. पूर्ण जोभन अवस्था Full Youth

(ङ) नारीअ जूं अनुभावक वाणियूं-

1. आलाप वाणी = चिंतवन करणु, प्रभाइणु Coaxing Speech
2. विलीप वाणी Speech of Affliction

3. संलाप वाणी, प्रेम जूं मिठियूं बातियूं Witty Talk With Lover
4. प्रलाप वाणी, विफलणु Incoherent Chatter
5. अनुलाप वाणी, हर घड़ीअ लीलाइणु Repeatedly Entreating
6. अपलाप वाणी, चई उमालक फिरी वजणु Vacillating Speech
7. संदेश वाणी Language of Missive to Lover
8. अत्यदिश वाणी या बिए ज़रिये (रगु या साज सां)
External Medium
9. उपदेश वाणी Exhortation of Lover
10. निर्देश वाणी Kindling of Love By Mentioning Own Name
11. व्यपदेश वाणी

Expression of Own Desire And So Create Needed Situation

(च) रुठल प्रेमीअ खे परिचाइण जूं वाटूं-

1. साम = पड़ाए परिचाइणु Conciliation By Flattery
2. भेद = पहिंजी वड़ाई करे परिचाइणु Conciliation By Boasting
3. दान Conciliation By Making Gifts
4. निती = माफी घुरणु Conciliation By Begging Pardon
5. अपेक्ष = बेपरवाह Conciliation By Indifference
6. रसासरम = रुठल जे Conciliation By Tricks

मिजाज बदिलाइण जा तरीका-

जीअं त ओचिती बीमारीअ जो ढोंगु

शींहं जे गजगोड़ जो आवाजु जोड़े

डिजी वजण जो ढोंगु करे,

डोड़ी वजी चुबिड़णु वगैरह।

21. सहायक पात्रणियूं- नाट्य शास्त्र ऐं नाट्य दर्पण में नायिका जूं हेठियूं साथिणियूं वर्णन कयल आहिनि-

1. धात्रेणी- जेका नायिका जो बारु धाराए
2. लंखणी- Nun
3. प्रातिवेषिका- जेका सजो वक्तु नायिका जे वेझो हुजे
4. शिल्पनी- जेका शिल्प कलाऊं ज्ञाणे
5. चीटिका = नौकिरियाणी
6. सखी = सहेली
7. धूती = Female Agent

नोट- नायक तोड़े नायिका जे सहायक पात्रनि मंझि धूतियुनि खे नाट्य शास्त्र में कुझ अहमियत डिनल आहे ऐं मंझिसि हेठियनि किस्मनि जूं धूतियूं वर्णन कयल आहिनि-

1. **नसृष्ट अर्था** (Shrewd), जेका बिन्हीं धुरियुनि जे दिलियुनि जे गुझ खां वाकुफु हुजे ऐं तंहिंकरे पंहिंजे सिर बि ठाह जे शर्तुनि फ़ेसल कराइण जो बारु खणी सघे।

2. **मठ अर्था** (Reserve Type), जेका पंहिंजी ज़बान बंदि रखे।

3. **संदेश हारिका**, जेका रुगो न्यापा पहुचाए, पर बियो कुझ न करे।

भरत मुनीअ ब्र हज़ार वरिह्य अगे इहो बि बुधाए छडियो त धूतियुनि जे कम लाइ पाड़े वारियूं, लीपाजी माताऊं, धोबणियूं, दायूं, चालाक सन्यासणियूं, नंढियूं छेकिरियूं ऐं पकियूं साहेडियूं, तिनि मंझां सहायक पात्रणियूं हुअणु घुरिजनि जीअं तडहिं सचीअ हयातीअ में बि हो!

22. वस्तू (Plot)- नाट्य शास्त्र ऐं पोइ वारनि ग्रंथनि में वस्तू, संदसि निकास कथाउनि पटांदर हिन रीति विरिहायल आहे-

(क) निकास या बुनियाद जे मदेनजर वस्तू-

1. प्राख्यात Well Known
2. उत्पादय Devised By Playwright
3. मिश्र Mixed

(ख) कथाउनि जे मदेनजर वस्तू-

1. घणो करे हरहिक रूपक में बू कथाऊं हूंदियूं आहिनि- हिकिड़ी मूल कथा (Main Story), जहिं खे नाट्य शास्त्र में कोठियो अथनि अधिकारिक वस्तू, छाकाणि त मूल कथा जे नायक खे ई इन्हीअ मूल वस्तूअ जे फल (Motif) प्राप्त करण जो अधिकार आहे।

2. बी कथा हूंदी आहे उपकथा (By Plot), जहिं खे नाट्य शास्त्र में प्रासंगिक वस्तू कोठियो वियो आहे। छाकाणि त प्रासंगिक वस्तूअ जो नायक, जहिं खे 'अनु नायक' कोठियल आहे, तहिं खे अधिकारिक वस्तूअ जे नायक जो प्रसंगी याने सहायक थियणो आहे।

23. पूरव रंग (Preliminaries of Drama)- भरत मुनीअ, हिन सिलसिले में जुमिले 19 इस्म बुधाया आहिनि, जिनि मां 17 इस्म आहिनि पर्दे पुठियां तयारियुनि करण जा। मंझिनि रूपक जी समूरी सामग्री कठी करण जूं हिदायतूं साज्जनि खे ठीक ठाक करण जूं हिदायतूं हरहिक पात्र खां अंधारनि, किरिणनि ऐं रीचकनि जी रिहर्सल याने दौर जा इस्म, ऐं वस्तू (Plot) जे शुरू करण खां अगे जेकी बि थियणो आहे, सो सभु समुझायलु आहे। इन्हनि सभिनी खे गडे चइजे थो 'पूरव रंग'। ('रंग' शब्द जी हिक माना आहे Auditorium. रंग भवन में हिकिड़ो आहे 'मंच' (Stage) ऐं बियो बाकी आहे 'रंग'। 'पूरव' माना अगियां। मिसला 'पूरव जनमु = अगियों जनमु)। इन्हनि 19 इस्मनि मां 17 मंच पुठियां थियणा आहिनि ऐं बू मंच ते, रंग अगियां थियणा आहिनि ऐं उहे आहिनि 'नांदी' ऐं 'पर रोचना'।

(क) **नांदी (Invocation)**– हीउ थई खासि प्रार्थना जो गीतु, खासि मौके लाइ जोड़ियलु। ‘नांदी’ शब्द जुड़ियो आहे ‘आनंद’ जे धातूअ मां। भरत मुनीअ जो चवणु आहे त नांदी सूत्रधार (Stage Manager) खे ई गाइणु घुरिजे। मंझिसि रूपक, रूपक जे पात्रनि, रूपक जे बियनि लागापियल माणहुनि, रूपक जे रचींदड ऐं पिण रंग (Audience) जे सुख आनंद लाइ प्रार्थना करिणी आहे। सरस्वती देवी ऐं चंद्रमा, तिनि जी आसीस पिण नांदीअ मंझि घुरिणी आहे।

(ख) **पर रोचना (Laudation)**– पर रोचना शब्द जी माना आहे उत्साहु पैदा करणु। हिन में सूत्र धार खे सभिनी पात्रनि जे रंग में आयलनि सां सुजाणप कराइणी आहे ऐं अहिडीअ रीति पात्रनि तोडे रंग में उत्साह पैदा करिणो आहे। ‘रुची’ शब्द सिंधीअ में ताजो आयलु आहे ऐं अर्थु अथसि चाह, सवाद, बुख (Appetite) वगैरह।

पर रोचना, पूर्व रंग जो आखरीनि इस्मु खतमु करे, सूत्र धार खे मंच छडे वजिणो आहे। घणो करे सूत्र धार जी कार्वाई रूपक जे कंहिं मुख्य अदाकार खे ई हलाइणी थी पवे। तंहिं खे हिन वक्त मंच छडे वजण सां वस्तूअ लाइ पंहिंजी तयारी करण जो वक्तु थो मिले।

24. स्थापना (Introduction)– स्थापन शब्द जो अर्थु आहे खडो करणु, जमाइणु, Established करणु वगैरह। सूत्र धार पर रोचना पूरी करे मंच छडे वजे, तंहिं बैदि हिकदमु संदसि जाइ ‘स्थापक’ खे वठिणी आहे, जंहिं खे मंच ते अची रंग वारनि सां वस्तूअ जे मुख्य गाल्हियुनि जी वाक्फ़ियत कराइणी आहे ऐं उन वक्त कथा में जेको जेको भारत (Actor) वर्णन कंदो आहे, उहो बिना वेस जे, रंग अगियां पेशि कयो वेंदो आहे। स्थापना जे काज में, स्थापक लाइ वक्ते हिक नटीअ (Actress) खां या विदूषक खां सहायता वठणु जरूरी थींदो आहे। स्थापक खे जंहिं नमूने में कार्वाई हलाइणी आहे, उन जा 4 भागु ठहिरायल आहिनि–

1. प्रस्तावना Laudation
2. व्यथी Avenue
3. प्रहसन Humour
4. आमुख Insertion or Introduction

प्रस्तावना में मुंद जो गीतु गाए, रंग वारनि खे बि रूपक जे खूबियुनि सां गडे साराहिणो आहे।

व्यथीअ में बोल चाल जा 13 नमूना समुझायल आहिनि, जिनि पटांदर भारती वृति थियणी आहे, पर उन्हीअ डेघि में हिते वजण जो ज़रूर कीन आहे।

प्रहसन में हास रस पैदा करण जा 10 तरीका समुझायल आहिनि, जिनि जो वर्णन अगिते हली करण में ईंदो।

आमुख में स्थापक, रंग वारनि खे रूपक जे नाले, रूपक पेशि करण जे कारणनि ऐं ओसरि, ऐं पिण रूपक जे रचींदड़ सां वाक्फ़ियत कराइणी आहे। प्रस्तावना ऐं स्थापना जा कार्ज अलगि आहिनि, जेतोणीकि बिन्हीं जो उदेश सागियो आहे।

25. वस्तूअ जा कार्ज– रूपकनि जे वस्तूअ जो पेशि करण बनस्वति, नाट्य शास्त्र में हेठियनि टिनि नमूननि में वस्तू पेशि करण जा तरीका बुधायल आहिनि–

(क) **सूच्य वस्त्र (The Indication)** ('सूचना' शब्द सिंधीअ में कतब ईंदड़ आहे)। हिन वर्ग में जेके हेठियूं पंज तरतीबूं समुझायल आहिनि, उन्हनि मां पधिरो आहे त कहिड़ा दृश्य (Scenes) वस्तूअ जे सूच्य वर्ग में शुमारिजनि था–

1. **विषखंभ (Explanatory Scene)**– हिन दृश्य (Scene) या विभाग (अंक जे भाडे) ज़रिये, दर्शकनि याने परीक्षकनि (Audience) जी कठिनाई दूर करण लाइ जेकी थी गुज़िरियो आहे, उहो थींदड़ विभाग सां गढिणो आहे।

2. **प्रवेशक (Introductory Scene)**– हिन तरीको ऐं विषखंभ विच में भेद हीउ आहे जो भरत मुनीअ जे वक्त में विषखंभ में संस्कृत बोली वरितायल हूंदी हुई पर प्रवेशक में प्राकृत बोली वरितायल हूंदी हुई। खासि कार्ज प्रवेशक जो इहो आहे त बिनि विभागनि विच में जेकी विसिरी वियो हुजे या रहिजी वियो हुजे, उहो परीक्षकनि अगियां साफ करिणो आहे।

3. **चौलिका (Intimation Scene)**– हीउ तरीको आहे पर्दे पुठियां गाल्हाइण जे आवाज सां हाजिरीननि खे समुझाइण जो, अहिडे नमूने बुधंदड़ भाईनि त कहिं अजिगैबी हंथां इहो गाल्हाउ अची रहियो आहे। रूपकनि में अहिडी ज़रूरत वक्ते थींदी आहे। हीउ तरीको श्रव्य (Audible) तरीकनि में पिण शुमारण लाइकु आहे।

4. **अनिक अवतार (Continuation Scene)**– हिन में ईदड़ विभाग जूं कुझु हकीकतूं अगुवाट बुधाइबियूं आहिन।

5. **अनिक मुख या अनिकास्य (Anticipatory Scene)**– हिन में सभिनी ईदड़ विभागनि जूं हकीकतूं अगुवाट बुधाइबियूं आहिन।

नोट– मथियनि पंजनि खे ‘अर्थ उपेक्षक’ बि चवनि। छाकाणि त हिननि ज़रिये वस्तुअ जो ‘अर्थ’ समुझाइजे थो। ‘चौलिका’ खे छडे, बाकी बिया सभु ‘सूच्य’ तोड़े श्रव्य वस्तुअ जा मिसाल आहिन।

(ख) **उनमीय या दृश्य वस्तू (The Visible or Inferential)**– हिननि तरीकनि ज़रिये को पात्र, बियनि पात्रनि खां ज़णु त लिकाए, पाण सां भुणि भुणि कंदो आहे या किनि खां लिकाए बियनि खे चवंदो आहे। अहिडा 4 तरीका नाट्य शास्त्र में समुझायल आहिन, जे आहिन–

1. **स्वगति**– पात्र अहिडे नमूने पाण सां गाल्हाए, जीअं हाजिरीन बुधनि न पर समुझी सघनि (Aside to Himself)

2. **उप वार्ता**– हिकिडे पात्र खे बियनि खां पासीरो करे, कुझु चवण जो नमूनो (Aside to One Actor From Others)

3. **जनानतक**- किनि पात्रनि खां लिकाए, बाकी बियनि खे पासीरो चवण जो नमूनो (Aside to Some From Others)

भरत मुनीअ, जनानतक गाल्हियुनि लाइ हिक खासि अंगार (Limb Movement) डसियो आहे जहिं खे चवनि **तृपटाक**, याने त गाल्हाईदडु चीच ऐं आडूठो भेडे, बाकी टे आडुरियूं उभियूं करे, तिनि जो जुणु विच में पदों ठाहे, बुधण वारनि ऐं न बुधण वारनि विच में उहो पदों आणे।

4. **करणी निवेदय** (कननि में भुणिकणु)- बिए पात्र खे पासीरो करे कन में कुझु भुणिकणु पर डाढियां फ़क़ति इहो चवणु त “बुधुइ? हूअ गाल्हि यादि कजि।” “इहो करि, बाकी पोइ।” वगैरह।

(ग) **श्रव्य वस्तू**- सूच्य वस्तू ऐं उनमीय या दृश्य वस्तू छडे, बाकी सभु तरीका थिया परीक्षकनि जे बुधण जहिडा, रवाजी नमूने डाढियां गाल्हाइण जा नमूना। नाट्य दर्पण में सूच्य वस्तू ऐं उनमीय या दृश्य वस्तूअ खे छडे, बिए समूरे गाल्हाइण जे नमूने खे कोठियल आहे ‘**प्रकाश वस्तू**’ याने पधिरी वस्तू।

26. **अधिकारिक वस्तूअ जूं अवस्थाऊं (Stages of Main Plot)**- भरत मुनीअ अधिकारिक वस्तूअ जूं हेठियूं 5 लाजमी अवस्थाऊं बुधायूं ऐं समुझायूं आहिनि-

1. **आरम्भ (Commencement)**- वस्तूअ जे पहिरिं भाग में नायक पंहिंजी मुराद जाहिरु कंदो आहे, जा रूपक में हासिलु करिणी अथसि।

2. **प्रयत्न (Endeavour)**- बिए भाग में नायक पंहिंजी चाहना लाइ उत्साह ऐं गणिती डेखारींदो आहे।

3. **प्राप्तियास (प्राप्त करण जी आस) Prospect of Success**- टिएं भाग में नायक खे मुराद हासिलु करण जी उमीद जागंदी आहे पर के रुकावटूं दरपेशि ईदियूं आहिनि।

4. **नेतापति (Certainly of Success)**– चोथें भाडे में रुकावटुनि जो मुक्कबिलो करे, उमीद हासिलु करण जी खातिरी कंदो आहे।

5. **फलागम (Consummation)**– पंजें ऐं पोएं भागु में नेता फल प्राप्त कंदो आहे, सोभ पाईदो आहे।

27. **प्रासंगिक वस्तूअ जूं अवस्थाऊं (Stages) ऐं अर्थ प्रकृतियूं (Sub Strata)**– अधिकारिक वस्तूअ (Main Plot) जूं 5 अर्थ प्रकृतियूं थियनि पर अवलि अचो त प्रासंगिक वस्तूअ जूं अर्थ प्रकृतियूं समुझूं, जे आहिनि ई ब। छाकाणि त सुभावीक प्रासंगिक वस्तू, अधिकारिक वस्तूअ खां घणी नंढी थिए, प्रासंगिक वस्तूअ जी कथा, अधिकारिक वस्तूअ जे कथा खां वक्तु बि थोरो खाईदड़ हुजे, छाकाणि त अधिकारिक नायक (Main Hero) खे पधिरो ई पधिरो प्रासंगिक नायक (Subsidiary Hero) खां घणी वधीक अहमियत आहे। प्रासंगिक वस्तूअ में थियनि–

(क) **पताका (Episode)**– अधिकारिक वस्तू रथ (Chariot) सां भेटियल आहे, पर प्रासंगिक वस्तू रथ जे पर्दे सां भेटियल आहे। (पताका = रथ जो पर्दो)। हीउ वस्तूअ जो उहो भागु आहे, जहिं मंझि अहिडे शख्स जे कारनामनि जो प्रयोजन हुजे, जेको अधिकारिक नायक जो सहायक पात्र हुजे। इन्हीअ वीचार खां खेसि 'पताका' नायक बि कोठीनि। पताका मंझि बि पंहिंजो आरम्भ, पंहिंजो प्रयत्न ऐं पंहिंजो फलागम हुजे, पर पताका जो समूरो कार्ज मिडियोई एतिरो वक्तु वटे, जेतिरो वक्तु अधिकारिक वस्तूअ जो आरम्भ वटे।

(ख) **प्रकरी (Incident)**– पताका ऐं प्रकरीअ जे विच में भेद इहो आहे त पताका नायक खे अधिकारिक नायक जे फल जो ओनो बि हुजे त सागिए वक्तु खेसि पंहिंजी का मुराद हासिलु करण जो बि ओनो हुजे, पर प्रकरी नायक खे अधिकारिक नायक जी सहायता वक्तु पंहिंजी का बि गृजं न हुजे। सुभावीक प्रकरी भेट में थोरो वक्तु वटे। (प्र = खासि तौर, कर = करण, सहायता करणु)।

28. अधिकारिक वस्तूअ जूं अर्थ प्रकृतियूं (Sub Strata of Main Plot)- भरत मुनीअ, वस्तूअ जे पंजनि कार्य अवस्थाउनि सां गडोगडु संदसि पंज अर्थ-प्रकृतियूं बि समुझायूं आहिनि। (अर्थु = मुराद = फल; प्रकृति)। इहे वस्तूअ जा भाग, भाडा न आहिनि, पर वस्तूअ जे कार्य (Denouement) जा कारण (Causes), कथा जे वाधारे (Development) जूं वाटूं आहिनि। नाट्य दर्पण में त खेनि कोठियल आहे 'फलस्य हेतवह' याने फल जे प्राप्त करण जा वझ। इहे 5 आहिनि-

(क) **बिज (Germ)**- हीउ आहे कार्य जो आदि कारण; बिज मंझां ई सला उभिरनि था, बूटो उभिरे थो, झार या वणु वडो थिए थो ऐं अंत में फल डिए थो। वस्तूअ जो बिजु, शुरूआति में कार्य अवस्था जे आरम्भ समान ई थिए थो।

(ख) **बिंदू (Drop)**- कथा जे शुरूअ खां नायक जो इंतजार आहे फलागम (Motif) लाइ; बिजु आहे कार्य जी शुरूआति, जहिं बैदि बिजु वधे त थो पर नायक जे प्रयत्न (Endeavour) में विघ्न पवनि था ऐं बिज जे फुटण वधण में रुकावटूं पवनि थियूं, जहिं सबब नायक खे अंदेशो थो थिए त मुबादान असफल थियां, पर कार्ज खे अगिते वधिणो आहे। जहिं करे वस्तूअ में जल्दु ई के बहरतू हालतूं अचियो कड़िकनि, जिनि जे असर हेठि रुकावटुनि जो डहणु शुरू थिए थो। इहो कमु आहे 'बिंदूअ' जो। 'बिंदू' शब्द खे असीं सिंधीअ में उचारियूं 'बूंद'। किनि विद्वाननि जो चवणु आहे त 'बिंदू' आहे पाणीअ जी बूंद, जेका बिज मथां थी पवे इन लाइ त बिजु उसिरे; बियनि जो चवणु आहे त 'बिंदू' आहे सणिभ जी बूंद, जा पाणीअ मथां केराइजे त पखिड़िजी सजे पाणीअ ते सणिभ जो तहु जोड़े, जहिं सबब निड़िटियल पाणी ठीकु डिसण में अचे। 'बिंदू' अर्थ प्रकृति अहिडे अहिडे नमूने में समुझायल आहे। धननजय जे 'दशरूपक' में चयलु आहे त बिंदूअ सां अधिकारिक वस्तूअ खे प्रासंगिक वस्तू गंढे थो।

(ग) **पताका**– जीअं रथ जो झंडो (पताका), संदसि मानु मर्तबो वधाए थो, तीअं ‘पताका’ बि अधिकारिक वस्तूअ जे नायक जो शानु वधाए थो। अधिकारिक नायक खे वस्तूअ जे कथा पटांदर जे प्रासंगिक वस्तूअ जो वसीलो घुरिजे त पताका नायक, प्रासंगिक नायक, मुख्य नायक खे मुराद हासिलु करण में मदद करे थो। ‘पताका’ जी हरूभरू जरूरत न बि थिए छो त केतिरनि ई रूपकनि में प्रासंगिक वस्तू हुजे ई कीन। किनि नाट्य शास्त्रियुनि जो चवणु आहे त जहिं कथा में मुख्य नायक जो सहायक थिए ई कीन, उन में पताका जो कम, पताका नायक बदिरां पताका हालतूं डियनि, जिनि हेठि मुख्य नायक जे कार्य में पियल संकट दूरु थियणो हुजे।

(घ) **प्रकरी**– पताका ऐं प्रकरीअ जे विच में भेद प्रासंगिक वस्तूअ जे सिलसिले में समुझायल आहे। अधिकारिक नायक खे जे सहायक नायक हुजे त उहो वक्ते पताका नायक हुजे, वक्ते प्रकरी नायक हुजे।

(ङ) **कार्य (Denouement)**– हीअ पंजीं ऐं पोई अर्थ प्रकृति आहे। मॉझिसि जेको कार्य समायल थिए थो, उहो आहे सागियो वस्तूअ जो फलागम (Cause of Motif) जहिं ते सारो कार्य (Denouement), सारी वस्तू बुधल आहे। उन्हीअ कार्य जे चौफेर ते वस्तूअ जो मदारु फिरे थो। कार्य फल, कार्य कारण, कार्य मनोरथ, सागियनि टिनि किस्मनि जा थो सघनि था, जिनि टिनि पटांदर हरिको इंसानु पंहिंजो कार्जु सिद्ध करणु थो चाहे। याने त या धर्म फल, या अर्थ फल या काम फल। ‘शुद्ध’ कार्य तहिं खे कोठियल आहे, जेको नायक जो हिकिडो ई कार्य हुजे, जहिं वसीले नायक हिकिडो ई फल चाहींदो हुजे, पर जे नायक हिक खां वधीक नमूननि जा फल थो चाहे त संदसि कार्य ‘मिश्र’ कार्य कोठिजे थो।

29. संधियूं (Junctures)– वस्तूअ जी हरहिक अवस्था ऐं उन जो हरहिकु लागापियल अर्थु प्रकृतीअ सां मेल, तिनि खे चइजे थो ‘संधियूं’। पंज ई संधियूं हेठीअं रीति आहिनि–

नम्बर अवस्था + प्रकृति = संधी

- I. आरम्भ + बिजु = मुख्य संधी Protasis (Opening)
- II. प्रयत्न + बिंदू = प्रतिमुख संधी Metabasis (Expansion)
- III. प्राप्तिपासा + पताका = गर्भ संधी Catastasis (Development)
- IV. नेतापति + प्रकृति = विमर्श संधी Epitasis (Pause)
- V. फलागम + कार्य = निर्वाहण संधी Apodiosis (Consummation)

संधियूं, अवस्थाऊं ऐं अर्थ प्रकृतियूं, टिन्हीं मंझि हिक किस्म जी एकता आहे। अवस्थाऊं आहिनि नायक जा वस्तूअ में शुरूअ खां आखरि ताई, आरम्भ खां फलागम ताई उदम; अर्थ प्रकृतियूं आहिनि वस्तूअ जे कारगुजारीअ जा बिजु पोखण खां वठी वेंदे कार्य सिद्ध करण ताई, दर्जा; संधियूं आहिनि रूपक रचींदड़ जे समूरीअ रिथा जा भाग; पर उदेश मिड़नई जो हिकिड़ो आहे।

30. संधींग (Subsidiary Junctures)- हरहिक संधीअ जा अंग उज्जिवा थियनि। नाट्य शास्त्र में मुख संधीअ जा 12 अंग बुधायल आहिनि, प्रतिमुख संधीअ जा 13, गर्भ संधीअ जा बि 13, विमर्श संधीअ जा 14 ऐं नर्वाहण संधीअ जा बि 14 अंग, जुमिले 66 अंग बुधायल आहिनि। बियनि नाट्य शास्त्रियुनि, भरत मुनीअ सां थोरा घणा मतभेद कया आहिनि, पर भरत मुनीअ जे वीचारनि खे अजां ताई सभिनी खां वधीक अहमियत डिनल आहे। हरहिक संधीअ वसीले रूपक जो घणो करे हिकिड़ो अंक थिए। पर कथा पटांदर, रूपक जे किस्म पटांदर घटि या वधि अंक बि थियनि। हरहिक संधीअ खे पूरीअ तरह असिराइते बनाइण लाइ संदसि संधींगनि जो अभ्यासु जरूरी आहे। रूपक नवीसनि जे सामग्रीअ में इहे संधींग अहमु जगह वालारीनि था। बिनि हजार वरिहानि पुजाणां बि भरत मुनीअ जूं बुधायल हिदायतूं न फकति भारत वर्ष अंदर, पर पश्चिमी देसनि में पिण कबिल नाटक नवीस ऐं सूत्रधार अमल में आणे रहिया आहिनि। रुगो संधींगनि जे विषय ते बि अनेक ग्रंथ, अंग्रेजीअ ऐं हिंदीअ में शायी थियल आहिनि। नाटक नवीसीअ

जा शाइक् संधियुनि मंझि बि घणेई पैदा थी रहिया आहिनि, पर असांजे सिंधी साहित्य में अहिडियूं अमोलक हिदायतूं हेल ताई आंदल न आहिनि ऐं न वरी हहिडे महदूद ग्रंथ मंझि हीउ लेखकु खेनि समाए सघे थो।

31. रूपक जो वक्तु कथणु- हरहिक किस्म जे रूपक में केतिरा अंक (Acts) हुअणु घुरिजनि, उहो हिन खां पोइ ईदड़ स्कंदनि (बाबनि) में नम्बर 32 खां 41 ताई मंझि जाणायल आहे। हरहिक अंक जा केतिरा भाग (Scenes) हुअणु घुरिजनि, उहो कथा ऐं उनजे कार्य (Denouement) ते मुनहसर आहे। नाट्य नवीस खे वक्तु जो वीचारु करे, रूपक जे किस्म जो वीचारु करे, हरहिक संधीअ जे ज़रूरी अंगनि जी डेघि वक्तु जे वीचार खां नंदी वड़ी, ज़रूरी या गैर ज़रूरी ठहिराइणी आहे। वक्तु मापण लाइ, नाट्य शास्त्र में डिनल आहिनि 'मुहूर्त' ऐं 'नाड़कियूं'। 'नाड़की' ऐं 'घड़ी' गाल्हि सांगी आहे। अंग्रेजनि जे अचण खां अगे सिंधु में कलाक ऐं मिन्ट कीन चइबा हुआ, पर हिंदुनि तोड़े मुसलमाननि जे वात में पहर, मुहूर्त ऐं घड़ियूं हूँदा हुआ। तड़हिं डीहं जा गणिबा हुआ 8 पहर, जिनि जा चइबा हुआ 30 मुहूर्त ऐं हरहिक मुहूर्त जूं चइबियूं हुयूं 2 नाड़कियूं या घड़ियूं। इन्हीअ हिसाब सां घड़ीअ या नाड़कीअ में थियनि 24 मिन्ट ऐं मुहूर्त में 48 मिन्ट।

32. 'नाटक' रूपक- मथे, स्कंद नम्बर 11 में जेके 10 रूपक (दश रूपक) बुधायल आहिनि, तिनि में मुख्य रूपक आहे। 'नाटक' रूपक जूं वस्फूं हिन रीति ठहिरायल आहिनि-

(क) **वस्तू-** 'नाटक' जी वस्तू 'प्राख्यात' (22-क) हुअणु घुरिजे। छाकाणि त नाटक जी कथा सभिनी हाजिरीननि खे अगे ई जातल हूंदी आहे। तहिं करे ऐं बीअ तरह बि 'नाटक' जे सूत्र धार जी कड़क समालोचना थी सघे थी। नाटक जो रचींदडु बि या त जग प्रसिद्ध बणिजे यार त पंहिंजी अगोपोइ पति खोहे विज्ञे। कहिं महाकाव्य पटांदर बि नाटक जी कथा वस्तू थी सघे थी, बशर्ते उहा कथा बि अगे ई प्रसिद्ध हुजे।

(ख) **नायक**- नाटक जो नायक बि कथा वस्तूअ जियां नामवरु, इतिहासिक या शास्त्रिक व्यक्ति हुअणु घुरिजे। भरत मुनीअ जो चवणु आहे त नाटक जो नायक 'उदात' चरित्र (14) हुअणु घुरिजे ऐं उहो को राज ऋषि, को श्रेष्ठ सूरमो हुअणु घुरिजे, जहिं लाइ प्रकेशकनि (Men in Auditorium) खे अगे ई वडी इजत हुजे।

(ग) **नायिका**- नाटक जी नायिका, नाटक जे नायक सां ठहिकंदड़ हुअणु घुरिजे। (19)

(घ) **फल**- भरत मुनीअ जो चवणु आहे त नाटक जो फल भली या त धर्म सम्बन्धी या त अर्थ सम्बन्धी या त काम सम्बन्धी हुजे (28-ड)। पर विश्वानाथ जो चवणु आहे त नाटक जहिडो सर्व उत्तम रूपक जो फल फकति 'मोक्ष' (Salvation) हुअणु घुरिजे। भरत मुनीअ जो चवणु ई आम तौर कबूल पियल आहे।

(ङ) **अंकनि जो अंदाज**- नाटक रूपकनि में घटि में घटि 5 अंक हुअणु घुरिजनि, हरहिक अवस्था (26) लाइ हिकिडो अंक (Act), पर वधि में वधि 10 अंक बि थी सघनि था। 10 ऐं उन्हनि खां वधीक अंकनि वारो नाटक कोठिजे 'महा नाटक'।

(च) **अंकनि जी डेघि**- भरत मुनीअ जो चवणु आहे त नाटक रूपक जे अंकनि (Acts) ऐं उन्हनि जे विभागनि (Sub-Divisions or Scenes) जी डेघि हुअणु घुरिजे। 'गरु-पुछ-आकार' जहिडे, याने त गांइ जे पुछ जे वारनि समानः आरम्भ- बिज वारो अंक नढो, प्रयत्न- बिंदूअ वारो कुड्डु डिघो, प्राप्तिवास- पताका वारो अजां वधीक डिघो; नेतपति- प्रकृतीअ वारो सभिनी खां डिघो ऐं फलागम कार्य वारो वरी बि नढो, लगभग आरम्भ- बिज वारे अंक जेडो हुअणु घुरिजे। हिक खां वधीक अंक बि गर्भ-संधीअ ऐं विमर्श संधीअ में ई हुअणु घुरिजनि। (29) संधियुनि जा अंग नाटक रूपक में मिडेई

समायल हुजनि त बहितरु ऐं विभागनि में अंकनि जी विरिहासत जो मदारु उन्हनि अंगनि ते हुअणु घुरिजे। भरत मुनीअ, संधियुनि जे अंगनि खां सवाइ अनेक 'संधी-अंतर' (Intervening Touches) वर्णन कया आहिनि ऐं उहे नाटक या महा नाटक लाइ कारगर जाणाया अथसि।

(छ) **नाटक जो वक्तु**- नाटक रूपक टिनि कलाकनि खां वठी पंजनि कलाकनि जेतिरो वक्तु वठी सघे थो, तंहिं खां वधीक वक्त वारो नाटक थिए महा नाटक।

(ज) **संगीत ऐं नृत्य**- नाटक रूपकनि जी डेघि अनुसार ध्रुव पदनि (10) ऐं नृत्यनि (8) जो उपयोग जरूरी आहे ऐं इन्हीअ तरह बि ककि कंदड़ रीघट (Monotony) खां बचाव करे सघिजे थो।

(झ) **हार सींगार**- जीअं त नाटक जी वस्तू प्राख्यात थिए थी ऐं देव लोक जी कथा श महा काव्य (Epic) जी कथा पटांदर थिए थी, तंहिं करे मंझिसि नाना प्रकारनि जा दृश्य समाइणा था पवनि। रंग मंच ऐं नाट्य अलंकारनि बाबति भरत मुनीअ ऐं ब्रियनि शास्त्रियुनि वडा अध्याय लिखिया आहिनि ऐं हिन विषय में एडो ऊन्हो विया आहिनि, जो इहो बि चयो अथनि त जे मंच ते गुलनि फुलनि जा चित्र हुजनि त उन्हनि जी सुगंध पिण छिटकारियल हुअणु घुरिजे। मृघ जहिडो आवाजु ऐं कोयल, मैना कंठ, सारस, चात्रिक वगैरह जूं लातियूं पिण हाजिरीननि जे कन ताई पहुचणु घुरिजनि।

(ह) **मूल रस**- भाव ऐं रस जे विषय बाबति हिन खां पोइ ब्रिए प्रकाश में भरत मुनीअ ऐं ब्रियनि विद्वाननि जा जाहिर कयल वीचार, तिनि जो थोरे में अहवालु डिनो वियो आहे। हिते फकति एतिरो ध्यान में रखी छडिण काफ़ी आहे त रस, नायक जे फल सां ठहिकंदड़ हुअणु घुरिजे, जीअं त फल जे काम फल हुजे (28-ड) त नाटक जो मूल रस 'शृंगार' रस (Aesthetic) थींदो।

33. 'प्रकरण' रूपक-

(क) वस्तू- 'प्रकरण' रूपक जी वस्तू 'प्राख्यात' न पर 'उत्पाद्य' हुअणु घुरिजे। प्रकरण जे रचींदड़ जी लियाकृत ऐं कल्पना जी परख हिन रूपक ज़रिये वधीक थी थिए ऐं सूत्र धार जे सोभ जो दारो मदारु बि घणे भाडे प्रकरण जे रचनात्मक गुणनि ते ई आहे, छाकाणि त वस्तूअ जी असुलियत (Originality) हरिका क़ाबिलियत थी घुरे।

(ख) नायक- प्रकरण जो नायक बि उदात चरित्र जो हुअणु घुरिजे पर देव लोक जो असुल न। घणो करे उहो को ब्राह्मण, को राज मंत्री, को राजदूत या को वैश्य हुजे पर नायक जियां उत्तम पुरुष हरूभरू न बि हुजे। मध्यम चरित्र वारो मनुष (12-ख) बि प्रकरण जो नायक करे सघे थो।

(ग) नायिका- प्रकरण जी नायिका कुल स्त्री बहितरु लगे त देव कन्या या नृप कन्या असुल न। प्रकरण में गणिका बि नायिका करे सघिजे थी। (19)

(घ) फल- नाटक रूपक जहिड़ो।

(ङ) अंकनि जो अंदाज़- नाटक रूपक जेतितो (प्रकरण ऐं महा प्रकरण)

(च) अंकनि जी डेघि- नाटक रूपकनि समान।

(छ) वक्तु- नाटक रूपकनि जेतितो।

(ज) संगीत ऐं नृत्य- नाटक रूपकनि खां घटि बि थी सघनि।

(झ) हर सींगार- नाटक रूपकनि खां घटि बि थी सघनि।

(ञ) मूल रस- नाटक रूपकनि समान। (डिसो बियो गंजु)

34. 'भाण' रूपक (Monologue)-

(क) वस्तू- उत्पाद्य।

(ख) नायक- धीर ललित।

(ग) नायिका- हुजे ई ना।

(घ) फल- को बि, पर आम तरह रवाजी।

(ङ) अंकनि जो अंदाजु- भाण एकांकी रूपक (One Act Play) थिए।

(च) अंक जी डेघि- मंझिसि फ़क़ति ब संधियूं मुख संधी (Protasis) एं निर्वाहण संधी (Apodosis) थियनि, पर हिकिड़े ई अंक में।

(छ) वक्तु- ब मुहूर्त बसि थियनि।

(ज) संगीत एं नृत्य- हिन रूपक खे आकर्षी (Interesting) करण लाइ सभेई लासींग नृत्य (8) मंझिसि हुआणु घुरिजनि।

(झ) हार सींगार वगैरह- हार सींगार नाटक रूपक वांगुरु हुजनि पर उन्हनि खे एतिरी अहमियत आहे, जेतिरी अहमियत भाण रूपक जे बीअ गाल्हि जी आहे, उहा सुभावीक आहे वाचक अभिनय (Oral Acting) जे वाणीअ जी क़ाबिलियत। हिकिड़ो पात्र हुजे सजे रूपक में, जेको बियनि गैर हाज़िर पात्रनि सां बातचीत फेरायल आवाज़नि एं नमूननि में करे। जीअं त बिए तरफ़ निहारे चवे- “छा थो चवीं?”, “पोइ भला?” “नेठि” वगैरह एं उन्हनि जा जवाब पाण डिए। हिक खां वधीक पात्र गैर हाज़िर हुजनि त सुवाल हिन नमूने जा पूछे- “तूं छा थो चवीं!”, “एं भला तूं?”, “एं तूं?” वगैरह पर वाचक अभिनय सां गडु आंगिक, आहार्य एं सात्विक अभिनय जी कारीगरी बि भाण रूपक लाइ ज़रूरी थिए। (7)

(ञ) मूल रस- घणो करे भाण हास्य रस (Comic) वारो थींदो आहे। (डिसो बियो गंजु)

35. ‘व्या योग’ रूपक-

(क) वस्तू- हिन रूपक जी वस्तू ‘प्राख्यात’ त थिए थी पर कथा कंहिं दुनियवी युद्ध बाबति हुजे।

(ख) नायक- घणो करे धीर उदात हुजे।

(ग) **नायिका**- हिन में घणो करे नायिका हुजे ई कीन।

(घ) **फल**- तकरार कंहिं स्त्रीअ जे गाल्हि तां न पर बिए कंहिं कारण बाबति हुजे।

(ङ) **अंकनि जो अंदाजु**- हीउ एकांकी रूपक थिए।

(च) **अंक जी डेघि**- हिकिडे ई अंक में मुख संधी, गर्भ संधी ऐं निर्वाहण संधी समायल हुजनि; प्रतिमुख संधी ऐं विमर्श संधी हुजनि ई कीन।

(छ) **वक्तु**- अटिकल टे मुहूर्त।

(ज) **संगीत ऐं नृत्य**- घणो करे असुल न।

(झ) **हार सींगार ऐं विशेष गाल्हियूं**- हार सींगार घटि, जंगी दृश्य ऐं चित्र, पुरुष पात्र घणा ऐं स्त्री पात्रणियूं थोरियूं या न बि। पात्रनि जी वाणी झेड़ा गोरीअ जहिडी हुजे।

(ञ) **मूल रस**- वीर रस (Heroic) ऐं करुण (Furious) मुख्य रस हुजनि। (डिसो बियो गंजु)

36. 'समवकार' रूपक-

(क) **वस्तू**- हीउ रूपक हर तरह विशेष नमूने जो ऐं हर तरह दिलचस्पी पैदा कंदु थिए। टे अंक थियनि पर नायक थियनि सजा सारा 12, सो हरहिक अंक में चार चार नायक पंहिंजे पंहिंजे अलगि फल जे प्राप्तीअ जो यत्न कनि। धर्म वर्ग, अर्थ वर्ग ऐं काम वर्ग, टिन्हीं फलनि जे अलगि अलगि प्राप्तीअ लाइ चइनि चइनि नायकनि जा टेई गिरोह हरहिक अंक में पाण में अलगि अलगि नमूने अटिकनि। अहिडीअ तरह रिथियल वस्तू, जिनि जो पाण में सम्बंध हुअणु नामुमकिन हुजे, इहा गाल्हि किनि नाट्य शास्त्रियुनि अमली तौर अण-थियणी या असम्भव ठहिराई आहे। नाट्य दर्पण में चयलु आहे त पहिरिएं अंक में 4 नायक हिकिडे फल लाइ पाण में अटिकनि, हिक धुरि उहो फल प्राप्त करे; बिए नंढेडे अंक में वरी बिया चार नायक इएं अटिकनि ऐं टिएं अंक में बिन्हीं पहिरियनि अंकनि में सोभ पातल धुरियुनि जे बिन्हीं

फलनि जो मेल जोल। बाकी बचियल 4 नायक पंहिंजे कार्य सां पैदा कनि जीअं अंत में, टिएं नंढे अंक जे पछाड़ीअ में साफ़ थी पवे त हीउ रूपक बि कहिं हिकिड़ीअ मुकररु रिथा पटांदर जोड़ियलु आहे। अहिड़ीअ तरह वस्तू जोड़ण लाइ कारीगरी बराबर घुरिबी हूंदी पर अहिड़े नमूने जा समवकार हिन ज़माने में घणो करे अदम पैदा आहिनि।

(ख) **नायक**- 12 नायकनि जो धीर उदत चरत्रि हुजे ऐं 12 ई देव, विद्या धर, गंधर्व, अश्व मुख ऐं बिया अहिड़ा आकाशी लोक हुजनि। दुनियवी इंसाननि जहिड़ा पात्र हिन रूपक में कीन थियनि। नायक सभु प्राख्यात हुजनि।

(ग) **नायिका**- 3 नायिकाऊं अलगि अलगि नमूने जूं हुजनि।

(घ) **फल**- अगे ई बुधायल आहे त अलगि अलगि फल हुजनि।

(ङ) **अंकनि जो अंदाज**- 3 अंक थियनि।

(च) **अंकनि जी डेघि**- पहिरिएं अंक में मुख सिंधी ऐं प्रति मुख सिंधी थियनि ऐं वक्तु 6 मुहूर्त वठनि। बिए अंक में विमर्श संधी थिए, जेका 2 मुहूर्त वठे ऐं टिएं अंक में निर्वाहण संधी थिए जा हिकु मुहूर्त वठे; जुमिले 9 मुहूर्त लगनि। (31) हिन तरह, वस्तू ऐं फल पाण में मेल खाईनि, तंहिं लाइ हिकु तरीको इहो ड़सियल आहे त पहिरिएं अंक में काम श्रृंगार वारीअ नायिका बाबति कथा जी, बिए अंक में अर्थ श्रृंगार वारी नायिका (पैसनि ते हथि कयल औरत) बाबति कथा हुजे ऐं टिएं अंक में धर्म श्रृंगार वारीअ नायिका जे ज़रिये बिन्हीं पहिरियुनि नायिकाउनि ऐं उन्हनि सां लागापियल नायकनि खे उपदेश ड़िनल हुजे।

(छ) **वक्तु**- अगे ई बुधायल आहे जुमिले 7 कलाक 12 मिन्ट।

(ज) **संगीत ऐं नृत्य**- मुनासिबु।

(झ) **हार सींगारु**- मुनासिबु।

(ञ) **मूल रस**- घणे ई रस। (ड़िसो गंजु बियो)

37. 'डम' रूपक (डम = झेड़ो झटो)-

(क) वस्तू- प्राख्यात। कथा झेड़नि झटनि सां भरपूर हुजे।

(ख) नायक- प्राचीन संस्कृत में 'डम' रूपकनि में 16 नायक आहिनि। उहे देवताऊं, गंधर्व, यक्ष, राकस सां साणुसि गड़ोगडु भूत, प्रेत, पिशाच वगैरह बि थियनि, सुभाव में उदत हुजनि।

(ग) नायिका- जे हुजे बि त मूल नायक जे चरित्र जहिड़ी उदत सुभाव वारी हुजे।

(घ) फल- देव लोकनि जे झगिड़नि जो मूल कारण हुजे बल जी आजमाइश- देवताउनि जी धुरि, दर्इतनि जी धुरि खे जीते, उहो आहे फल।

(ङ) अंकनि जो अंदाज- 4 अंक थियनि। गर्भ संधी कान थिए।

(च) अंकनि जी डेघि- समवकार रूपक खां कुझु वधीक।

(छ) वक्तु- समवकार रूपक खां थोरो वधीक।

(ज) संगीत, नृत्य- नाटक रूपक समान।

(झ) हार सींगार ऐं विशेष गाल्हियूं- नाटक रूपक समान हार सींगार, पर विशेष गाल्हियूं डम जूं हीउ आहिनि त मंझिसि जादूअ जा कारनामा, सिज ग्रहण, चंड ग्रहण, पुछड़ तारा ऐं बिया खौफनाक हादसा हुजनि।

(ञ) रस- मंझिसि प्रेम रस, हास्य रस ऐं शांत रस छड़े, बाकी सभेई रस हुजनि। (डिसो बियो गंजु)

38. 'ईहा मृग' रूपक (ईहा = इच्छा, मृग = मृगणीअ जहिड़ी महा सुंदर नारी)-

(क) वस्तू- समूरो कार्य कंहिं सुंदर नारीअ जे हथि करण बाबति हुजे। वक्तु, सुर्ग जे अप्सरा लाइ ई समूरो तकरार हुजे। पछाड़ी शोक जनक (Pathetic) जे दुखांती (Tragedy) हुजे त भरत मुनीअ जी इहा आम हिदायत पूरी करणु घुरिजे याने त मौत जो दृश्य पर्दे जे पोयां हुअणु घुरिजे। कथा प्राख्यात या उत्पाद्य या मिश्र, का बि हुजे।

- (ख) नायक- धीर उदत, देवता या इंसानु।
- (ग) नायिका- अप्सरा या का बि पृथ्वीअ जी सुंदर नारी।
- (घ) फल- अप्सरा या सुंदर नारीअ जो प्रेमु।
- (ङ) अंकनि जो अंदाज़- 1 अंक या 4 अंक।
- (च) अंकनि जी डेघि- हिक अंकी त व्या योग जेड़ी डेघि, न त डम जेड़ी डेघि।

- (छ) वक्तु- डम जेतिरो।
- (ज) संगीत ऐं नृत्य- सभेई लासींग नृत्य।
- (झ) हार सींगार- नाटक समान।
- (ञ) रस- वीर रस, भयानक रस ऐं शोक रस। (डिसो बियो गंजु)

39. 'उतसृष्ट' अंक (उतसृष्ट = त्याग डिनल, जुदा थियलु)

(Melodrama One Act)-

(क) वस्तु- प्राख्यात या उत्पाद्य आम तौर समूरी कथा हिक मरणींग इंसान जे पोयें वक्तु बाबति हुजे पर जेतोणीकि मंझिसि स्त्रियुनि जा दिलि डारिंदड़ रोदन पिटका हुजनि ऐं दुख तोड़े पछिताव भरियल भाषण हुजनि त बि पछाड़ी शोक जनक न थिएसि।

- (ख) नायक- धीर ललित।
- (ग) नायिका- नायक सां ठहिकंदड़।
- (घ) फल- त्याग डिनल प्रेमीअ जो प्रेमु।
- (ङ) अंकनि जो अंदाज़ो- हिकिड़ो अंक।
- (च) अंकनि जी डेघि- व्या योग जेतिरी।
- (छ) वक्तु- व्या योग जेतिरो।
- (ज) संगीत ऐं नृत्य- घटि।
- (झ) हार सींगार- घटि।
- (ञ) मूल रस- करूण रस। (डिसो बियो गंजु)

40. 'व्यथि' रूपक (One-Act Comedy)-

- (क) वस्तु- उत्पादय, घणो करे प्रेम कथा।
- (ख) नायक- धीर ललित।
- (ग) नायिका- नायक सां मेल जोल खाईदड़।
- (घ) फल- नायिका जो प्रेमु।
- (ङ) अंकनि जो अंदाज- हिक अंकी।

(च) अंकनि जी डेघि- जेतोणकि मंझिसि फ़क़ति ब्र संधियूं, मुख संधी ऐं निर्वाहण संधी हुजनि त बि छोटीअ कथा अंदरि सभेई अर्थ प्रकृतियूं समाए सघिजनि।

(छ) वक्तु- मुनासिबु।

(ज) संगीत ऐं नृत्य- सभेई लासींग नृत्य जरूरी आहिनि।

(झ) हार सींगार वगैरह- जीअं त हिन रूपक में आम तौर बिनि खां वधीक पात्र कीन थियनि, तंहिं करे उनमीय वस्तु पेशि करण खां सर्सु कमु वठिजे। (25)

(ञ) रस- मूल रस श्रृंगार रस हुजेसि। (डिसो बियो गंजु)

41. 'प्रहसन' (Comic)-

(क) वस्तु- भाण जियां खिल चर्चे जी हुजे पर भाण आहे हिकिडे ई पात्र जो रूपक, प्रहसन में वधीक पात्र थियनि।

(ख) प्रहसन जा किस्म- प्रहसन रूपक टिनि किस्मनि जा थियनि-

1. शुद्ध (Regular Comic)- हिन पात्र जा बावा, बांभण, नास्तिक (Heretics) ऐं अहिड़ा बिया थियनि।

2. संकरण (Irregular Comic)- हिनजा पात्र लुच, लफंगा, छाड़ता ऐं तरह तरह जा रत-चूसक (Parasites) हुजनि।

3. **विकृत (Deformed)**– हिनजा पात्र हिंजड़ा (Eunuchs), वैश्याऊं, रंगीलियूं, जोगिणियुनि जे वेस में पुरुषनि पोयां पवदंड स्त्रियूं वगैरह हुजनि। हिन नमूने जो प्रहसन नाट्य शास्त्र में जाणायल कीन आहे पर धननजय पहिंजे दश रूपक में इहो जाणायो आहे ऐं खांडसि पोइ बियनि किनि नाट्य शास्त्रियुनि पिण उनजो वर्णन कयो आहे।

(ख) **नृत्य**– हिन रूपक सां गडु लास्य नृत्य जा सभेई नमूना सूंहेनि, पर नृत्य जे इस्मनि पेशि कंदे सूत्र धार खे किरिणनि (Postures) ऐं रीचकनि (Grimaces) जी चूंड, भरत मुनीअ जे डिनल यादाशतुनि मां चडीअ तरह करणु घुरिजे।

(घ) **रस**– जीअं त हीउ रूपक हास्य रस वारो रूपक आहे, तंहिं करे हिन रूपक बाबति कुझु वधीक हकीकतूं बिए गंज में डिनल आहिनि।

42. **बियूं विषयूं**– भरत मुनीअ बियनि अहम विषयनि जो पिण वर्णन कयो आहे, जे हेठीअ मूजिबु आहिनि–

(क) **नाला**– रूपकनि जा नाला कहिड़ा कहिड़ा रखिजनि, रूपकनि जे नायकनि, नायिकाउनि ऐं बियनि पात्रनि जा नाला कहिड़ा कहिड़ा रखिजनि ऐं गुफ्तगू में हरहिक खे छा करे कोठिजे, उन बाबति नाट्य शास्त्र में केतिरा ई ‘साम्य’ (Conventions) जाणायल आहिनि।

(ख) **भाषाऊं**– कहिड़ा कहिड़ा पात्र संस्कृत में गुफ्तगू कनि ऐं कहिड़ा कहिड़ा पात्र प्राकृतियुनि में कनि, उन बाबति बि ‘साम्य’ बुधायल आहिनि।

(ग) **वृत्तियूं**– हिन विषय जो वर्णन गंज टिएं में, वृत्य अनुप्रास अलंकार जे सिलसिले में ऐं गंज चोथें में कयो वेंदो।

(घ) **रीतियूं (Styles)**– हिन विषय ते कुझु रोशनी चोथें गंज में विधी वेंदी।

(ङ) **गुण ऐं दोष**– हिन विषय जो वर्णन पिण चोथें गंज में कयो वेंदो।

(च) अंगार (Movement of Limbs) किरण (Postures) ऐं
रीचक (Grimaces Etc.)- उन विषय बाबति अगे ई चयलु आहे त भरत
मुनीअ हिननि जूं अथाहु यादाशतूं समुझाणियुनि समेति ङिनियूं आहिनि, जिनि
जे अभ्यास लाइ मूल ग्रंथ आहे 'अभिनय दर्पण' रचयल नंदकिशोर जो ऐं
तांजोर सरस्वती मंडल वारनि जो नाट्य शास्त्रनि वारो अध्यायनि जो अनुवाद।

(छ) हिन गंज में वर्णन कयल 10 रूपक, तिनि खां सवाइ के उप
रूपक पिण नाट्य शास्त्रनि में वर्णन कयल आहिनि।

43. नाट्य शास्त्र- हिन गंज में ङिनल आहे नाट्य शास्त्र जे अमोलक
पदार्थनि जो रुगो ततु। भरत मुनीअ जा हेठियां वचन ध्यान में धारण जहिडा
अवसि आहिनि-

“न तजज्ञानम न तजछपलम न सा विद्या न सा कला !

न ततकर्म न योगससोइ नाटकी यन दृशेती !!”

अर्थु त को बि ज्ञान, का बि शिल्प, का बि विद्या, का बि कला- कोई
बि अहिडो कार्यक्रम न आहे, जेको नाट्य जे विषयनि खां ब्रुहिरि आहे।



गंजु बियो रस शास्त्र सिद्धांत

1. **कवी-** भारती ग्रंथनि में प्राचीन समें खां, आदि जुगादि खां वठी कवीअ खे सर्व उत्तम पद्वी डिनल आहे ऐं कवीअ जी महिमा सभिनी महापुरुषनि खां सर्सु गातल आहे। यजुर्वेद में जाणायल आहे त **‘क्व रमुनेषी प्रभू स्वयंभू’**, इन्हनि शब्दनि सां कवीअ खे रुगो प्रभूअ समान न पर प्रभू पाण करे जाणयल आहे। श्रीमद् भागवत में चयलु आहे त **‘तीने ब्रह्म हृदाय आदि कवीये’**, अर्थु त ब्रह्मा पाण आदि कवी आहे। संस्कृत अमरकोश में ‘कवी’ शब्द जी व्याख्या (Definition) हिन रीति आहे त **‘कवीयत सर्व जानात सर्व वर्णीतेत क्व’**, याने त सभु कुझु जाणंदड (जाणी जाणणहारु) ऐं सभु कुझु वर्णन कंदड, तंहिं खे ई कोठिजे थो कवी। अग्नी पुराण वारे वेद व्यास जा अमोलक वचन हीउ आहिन त **‘अपारी काव्य संसारी क्वरेव प्रजापतिः यथा समीअ रोचते विश्वम तथैव पर वृतते’** याने त काव्य जो संसार अपार आहे। ब्रह्मा जियां कवी पंहिंजीअ दुनिया जो प्रजापित आहे ऐं पंहिंजे काव्य संसार अंदरि जेकी बि खेसि वणे थो, उहो ई थो करे।

2. **कवी, कवीत्व ऐं काव्य-** कवीअ खे अर्पण कयल ईश्वरी शक्ती, कवीअ जी डाति, कोठिजे कवीत्व (Kavitva)। कवीत्व जो फल कोठिजे थो ‘काव्य’। ‘ध्वयन-लोक-लोचन’ में आनंद वर्द्धन लिखियो आहे त **‘क्वनियम काव्यम’**, याने तत काव्य रचना जी सदाई साराह करण जुगाए।

ऋगवेद, नाट्य शास्त्र खां घणो वधीक प्राचीन ग्रंथ, तंहिंजे प्रकाशक पंहिंजीअ काव्य डाति लाइ, कवीत्व लाइ चयो आहे त “मां पंहिंजे कवीत्व

खे आकासी बादलनि मां वसियल पावस जी धारा थो समुझां।” विद्याधर पहिंजी एकावलीअ में लिखियो आहे त ‘क्वतेत कोः तस्य कर्म काव्यम’, याने त कवी उहो आहे जेको रचे, संदसि कर्म आहे ई रचणु, छो त काव्य ई रचना आहे।

3. सतो, रजो, तमो- मिडनेई जीव धारियुनि में, माणहुनि में तोड़े मिरुनि में ज्ञानी ध्यानी पुरुषनि, ऋषियुनि ऐं मुनियुनि में टिनि किस्मनि जा गुण (अवगुण बि) डिठा बुधायी आहिनि, जेके आहिनि- सत्व, रजस ऐं तमस। गाल्हि बोल्हि में, हिंदीअ वारा तोड़े विषय में दिलचस्पी रखंदड़ सिंधी चवनिन सतोगुण, रजोगुण ऐं तमोगुण। मनुष जो उहो गुण, जेको खांडसि सुकर्म थो कराए, सो आहे सतोगुण; उहो गुण, जेको खेसि भोग विलास ऐं बनावटी बातियुनि डे थो निऐ सो आहे रजोगुण; बाकी उहो गुण, जेको खांडसि कुकर्म थो कराए, सो आहे तमोगुण। हिन किताब जे पहिरिएं गंज वारे अंक 12 में उत्तम इंसाननि जा लछण जेके वर्णन कयल आहिनि, उहे सतोगुण सम्बन्धी लछण आहिनि ऐं अधम इंसाननि जा जेके कुलछण बुधायल आहिनि, उहे तमोगुण सम्बन्धी कुधनि करतूतनि जा मिसाल आहिनि। बाकी रजोगुण, तंहिं सां लागापियल मिसालनि जी कमी कान आहे। आम तौर, रजोगुण घणो ज़ोरु आहे, तमोगुण किनि में घटि किनि में वधि, पर तमोगुण सां भरपूर इंसाननि में बि कडहिं कडहिं सतोगुण निकिरी निरवारु थिए ऐं खांडनि को न को उत्तम कर्म थो कराए। कठोर डुखोईदड़नि खां बि वक्ते रहमु थी थो पवे! पर टिन्हीं नमूननि जा गुण इंसान जे हृदे अंदरि भावनाऊं पैदा था कनि। इंसान जा सुख ऐं दुख सम्बन्धी भाव; सतो, रजो ऐं तमोगुणनि जी उपजि आहिनि। अधम इंसाननि में तमोगुण ज़ोरु थिए, उत्तम इंसाननि में सतोगुण ज़ोरु थिए; उत्तम इंसाननि में बि रखी रखी तमोगुण जागे छो त एबनि खां बिनह आजो को बि इंसान कोन थो थी सघे। बाकी सचनि साधू पुरुषनि खे छडे, बियनि सभिनी इंसाननि में रजोगुण ज़ोरु आहे ऐं मुख्य तौर इन्हे गुण सबबि तरह तरह जा भाव हरकंहिं इंसान जे दिलि में उत्पन्न थियनि था।

4. **भाव ऐं रस-** भरत मुनीअ जी हीअ हिक तुक अजु बि जगु प्रसिद्ध आहे त 'निः रसादरते किश्चद रथः प्रवृत्ति'। मतिलबु त जिते जिते रस न आहे, उते अर्थ जो हुअणु ई असम्भव आहे, नामुमकिन आहे, रस रहित रचना काव्य मँझि शुमारिजण लाइकु थी न थी सघे। नाट्य शास्त्र खे, भरत मुनीअ काव्य शास्त्र जो हिकिडो विभागु ठहिरायो आहे। छाकाणि त आदि जुगादि खां, साहितिक पद्य तोडे गद्य, जिनि में रूपक रचिजनि था, उहे काव्य सरूप ज़ाणायल आहिनि। भरत मुनीअ अहिडी रचना खे 'काव्य' ठहिरायो आहे, जेका कोमल हुजे, ललित पदनि वारी हुजे, गूढ़नि ऐं औखनि शब्दनि तोडे मुँझियल अर्थनि खां आजी हुजे, जेका सहिजे ई कविताउनि, नृत्यनि ऐं रूपकनि जो वाहण थी सघे ऐं जेका रस जे भाँति भाँति धाराउनि जी वसाईदड़ हुजे। अनेक उत्तम वीचारवाननि काव्य मँझि हेठियां चार मूल तत ज़ाणायल आहिनि-

(क) बुद्धी (ख) कल्पना (ग) भाव (घ) कला।

पर सागियनि ई विद्वाननि, हिननि चइनि ई ततनि मां भाव खे सर्व प्रमुख तत, सभिनी खां मुख्य तत लेखियो आहे। बुद्धी ऐं ज्ञान घणे भाडे अभ्यास जो फल थियनि था पर बुद्धीअ द्वारां सृष्टीअ जे वस्तुनि मां रस प्राप्त करे, हदे अंदरि उमंगनि छेड़ण जी शक्ती जेकडुहिं उत्पन्न थी सघे त न कवीत्व उत्पन्न थींदी, न काव्य रचिबो ऐं न ई कवी प्रसिद्ध थी सघंदो। कल्पना खे बि वडी अहमियत आहे पर ऋगवेद जे प्रकाशक जो पँहिंजीअ कवीत्व खे वर्षा जे धाराउनि समान समुझिबो, सो न फ़क़ति संदसि कल्पना जे बल जे सहारे पर कल्पना वसीले बादलनि मां रस वर्षा वसाइण जे ई सहारे। प्रकृतीअ जो रस अहिडा ई उमंग उथारे, जहिडा कीहिं रूपक जे नायक नायिका वारो रस उथारे। भाव रस जो आदि पक्ष पालक भरत मुनी, तँहिं नाट्य शास्त्र में हिकिडे हँधि चयो आहे त 'न भाव हेनोसत रस, न रस हेनोसत भाव।' याने त न भाव रस बिना स्थिर रही सघे या काइमु रही सघे, ऐं न ई रस

भाव बिना उपिजे ऐं जटाउ धारे सघे। ‘साहित्य दर्पण’ में विश्वनाथ लिखियो आहे त ‘वाक्य रसात्मक काव्य’ मतिलबु त काव्य कोठिजे थो रसात्मक वाक्यनि याने जुमिलनि खे। भरत मुनि, वेद व्यास, विश्वनाथ ऐं अनेक ब्रिया जेके भाव रस खे काव्य जी जड़ ज़ाणाईनि था, तिनि खे ‘रस सम्प्रदाय’ (Rasa School of Thought) मँझि शुमारियल आहे। ब्रिया प्राचीन विद्वान पैदा थिया, जिनि ‘रस सम्प्रदाय’ वारनि जो विरोध कयो। उहे सडिजनि ‘अलंकार सम्प्रदाय’ वारा या ‘रीतवाद’ वारा या ‘ध्वन वादी’ सम्प्रदाय वारा वगैरह। पर उन्हनि पँहिंजनि ग्रंथनि में पँहिंजी विरोधी वाद विवाद जारी रखंदे, पाण बि किथे न किथे रस ऐं भाव जी महानता मजी आहे। जीअं त भामह नाले अलंकारीअ चयो आहे त ‘युक्तम लोक स्व भावें रसैश्च सकलैः प्रथक’ याने त जीअं मनुष जी ज़ाण पछाण संदसि सुभाव मां पइजी सघे थी, तीअं कविताउनि जी ज़ाण पछाण मँझिसि समायल रसनि ज़रिये ई थी सघे थी, छो त काव्य जो दारो मदारु मँझिसि समायल रस ते ई आहे। ब्रिए अलंकारीअ नाले दंडीअ चयो आहे त ‘कामी सरूपिय अलंकारो रस्म अर्थ निश्चित’, मतिलबु त अलंकृत रचना मँझि सभिनी रसनि खां वधि, काम याने श्रृंगार रस ते पूरो अर्थु समाए सघे थो।

पधिरो आहे त ब्रियनि सम्प्रदायनि जे विरोध हूंदे बि भरत मुनीअ जे नृत्य कयल भाव रस वीचार खे अजु बि सभ खां घणी अहमियत आहे। संदसि हीउ वचन बि जगु प्रसिद्ध आहिनि- ‘विभाव अनभाव व्यभचार संयोगात रसनश्पत’ याने विभाव, अनुभाव ऐं व्यभचारी भाव, तिनि जे संजोग, मेल जोल सां रस नश्पति, रस जी पूरी पधर थी थिए। भाव छा आहिनि ऐं रस छा आहे, तँहिं विषय बाबति थोरी ज़ाण अगे ई अथऊं, पर रस जे नमूननि, भावनि जे नमूननि, विभावनि, अनुभावनि, व्यभचारी भावनि वगैरह जो कुझु अभ्यासु असां सिंधियुनि खे बि ज़रूरु करणु घुरिजे।

5. प्रेम ऐं 'रती'— मुख्य में मुख्य भाव आहे पुरुष स्त्रीअ सम्बन्धी प्रेम। प्राचीन भारती देव कथाउनि में काम देव जो चडो ई वर्णन थियल आहे। जहिं देव जो नालो असां सिंधियुनि जे ज़बान ते बि घणो ई आहे। काम देव जी स्त्रीअ जो नालो हो 'रती'। असां सिंधियुनि में अगे 'रती' घणियुनि किकियुनि जो जनमी नालो रखिजण में ईदो हो। 'रती' शब्द जो बुनियादी अर्थु आहे ई स्त्री पुरुष जो काम सम्बन्धी प्रेम। प्रेम या प्यारु स्त्री पुरुष विच में बि थिए, माउ पुट विच में बि थिए, भाउ भेण विच में बि थिए, पर स्त्री पुरुष काम सम्बन्धी प्रेम लाइ संस्कृत ऐं हिंदीअ में शब्द आहे 'रती'; असां सिंधियुनि में इहो शब्द कतब ईदड़ न आहे। फ़ारसी लफ़्जु 'इश्कु' जो आहे स्त्री पुरुष जो काम सम्बन्धी प्रेम। उहो लफ़्जु सिंधी हिंदुनि जे घरनि में कतब ईदड़ न आहे। सिंधी हिंदू नाटकनि में बि प्रेम शब्द ई कतब ईदड़ आहे। 'प्रेम भाव' हरहिक किस्म जे प्रेम वारो भाव आहे। 'रती' भाव, प्रेम भाव जो अहम रूपु आहे।

6. शृणगार रस— सचीअ हयातीअ में, कहिं पुरुष जे हृदे अंदरि, कहिं स्त्रीअ लाइ प्रेम भाव, जो सचु-पचु रती भाव आहे, सो छो थो पैदा थिए? सबबु इहो आहे त उन्हीअ स्त्रीअ मंझां उन्हीअ पुरुष खे को 'रस' थो अचे। इन्हीअ रस खे कोठीनि 'शृणगार रस'। हिंदीअ ऐं सिंधीअ वारो 'सींगार' शब्द, उन्हीअ 'शृणगार' शब्द जो बियो रूपु आहे। बराबर स्त्रीअ जे हार सींगार करे बि मंझांउसि पुरुष खे रस प्राप्त थो थिए पर रुगो हार सींगार कीन थो पुरुष जे हृदे अंदरि रती भाउ उत्पन्न करे सघे। स्त्रीअ जी सूंहं मंझि मुख्य रस थिए थो ऐं उन्हीअ सूंहं जो रस ई थो बिए हार सींगार हूंदे या न हूंदे, पुरुष जे हृदे अंदरि रती भाउ उत्पन्न करे सघे। 'शृणगार' शब्द जुड़ियो आहे 'शणग' मां। 'शणग' जी माना आहे सिड्डु। देव कथाउनि वारो काम देव, तहिंजी जेका ख्याली तस्वीर चिटियल आहे, उन मंझि हिनखे 'सिड्डु' आहे। उहो रस, जेको काम देव में अहिडो असरु पैदा करे, जहिं हेठि काम देव न फ़क़ति जाग्रत थिए पर एडी त छाल मारे, जो पंहिंजो सिड्डु 'रतीअ'

खे हणे, जहिं करे काम देव जो सिडु रतीअ सां रडिजी पवे। श्रृणगार रस याने त काम देव जे सिड खे काम देव सां गडु बहकाईदड रस, उहो थियो काम जे हदे अंदरि रती भाव, रतीअ लाइ प्रेम पैदा करे। इहो आहे 'रती भाव', 'श्रृणगार रस' जे उपज रूपकनि में घणे भाडे कथाऊं श्रृणगार रस ऐं रती भाव बनस्वति जोडियल थियनि थियूं। सिनेमाउनि मंझि बि घणो करे श्रृणगार रस ऐं रती भाव अवसि समायल थियनि था। इहो बि पधिरो आहे त 'श्रृणगार रस' थो 'रती भाव' जे उत्पतीअ जो कारण बणिजी सघे त 'रती भाव' बि 'श्रृणगार रस' जो कारण बणिजी थो सघे। कहिडी स्त्री आहे, जहिंजे हदे अंदरि कहिं पुरुष लाइ प्रेम जागे त हूअ उन्हीअ प्रेम जे असर हेठि उन्हे पुरुष खे वणण लाइ पाण मंझि सूंहं सींगार वधाइण जा अनेक उपाव न थी करे? भरत मुनीअ जा मथे वर्णन कयल वचन हिन हंधि वरी बि दुहिराइण लाइकु आहिनि।" 'न भाव हीनोस्त रस, न रस हीनोस्त भाव'।

7. विभाव- विभाव आहिनि भावनि जा कारण (Excitants of Emotions)। इहे बिनि वर्गनि में विरिहायल आहिनि- हिकिडा सडिजनि 'आलम्बन' विभाव ऐं बिया सडिजनि 'उदीपन' विभाव। सिंधीअ में हिकिडो लफ़्जु आहे 'ओलाम्बो', ठीकु अर्थु अथसि प्रेम जो सहारो। प्रेम जो सहारो हिकिडो आहे प्रेम कंदड पुरुष ते या नायक ते ऐं बियो आहे प्रेम कंदड स्त्रीअ ते या नायिका ते। उहे बू शख्स या व्यक्तियूं 'आलम्बिक विभाव' सडिजनि। बिया विभाव आहिनि उन्हनि व्यक्तियुनि जूं चेष्टाऊं, हालतूं, जेके भाव उत्पन्न करण में 'आलम्बन' जा सहायक कारण बणिजनि थियूं। 'उदीपन' शब्द जो अर्थु आहे 'भरकाउ'। उदीपन विभाव आहिनि आलम्बन विभावनि (पुरुष ऐं स्त्रीअ) खे भडिकाईदड विभाव। नायक ऐं नायिका आहिनि **आलम्बन विभाव**, गंज पहिरिं वारे अंक नम्बर 20 में डिनल आहिनि **उदीपन विभाव**, आलम्बन विभाव खे अंग्रेजीअ में चइजे Personal or Essential Excitant ऐं उदीपन विभाव खे चइजे Enhancing Exitant.

8. व्यभचारी या संचारी भाव- भाव हिकिड़ा आहिनि स्थाई भाव। प्रेम या 'रती' स्थाई भावनि मां हिकिड़ो, पर प्रमुख स्थाई भाव आहे। स्थाई भावनि जो वर्णन अगिते हली कयो वेंदो। जसु आहे भरत मुनीअ खे, जहिं ब हज़ार वरह्यि अगे इंसान जे हृदे में उथंदड़ किस्में किस्में उमंग, जेके समुंड जे लहरुनि समान पिया उभिरनि ऐं उभिरी वरी जल्दु ई गुमु थी वजनि पर जटाउ कीन खाईनि, तिनि जी छंडछाण करे, जुमिले 33 व्यभचारी भाव ठहिराया। इन्हीअ 33 व्यभचारी विभागनि जी यादाश्त अजु बि उहाई आहे ऐं अजु बि उहे 33 ई घणो करे सागिया सागिया, व्यभचारी विभाव सडिजनि था। 'व्यभचारी' शब्द जो अर्थु आहे उहे भाव, जेके स्थाई भाव न आहिनि, जटाउ कंदड़ भाव न आहिनि। अंग्रेज़ीअ में चइजेसि Transitory Emotions. इहे संचारी भाव बि सडिजनि, छाकाणि त उहे स्थाई भावनि खे ज़ोरु वठाईदड़ आहिनि, खेनि वधीक उतेजित कंदड़ आहिनि ऐं तहिं करे अंग्रेज़ीअ में सडिजनि Ancillary Emotions. हिकिड़े हिंदी साहित्यकार ऐं कवीअ हेठियनि टिनि दोहनि में इहे 33 व्यभचारी या संचारी भाव वर्णन कया आहिनि-

- “1. निरवेदौंई, 2. शंका, 3. गरब, 4. चिंता,
 5. मोहु, 6. विशाद, 7. दैन्य, 8. असौया, 9. मृत्य,
 10. मद, 11. अलस, 12. शर्म, 13. उनमाद,
 14. आकर्त-गोपन, 15. चपलता, 16. उपसमार, 17. भय,
 18. गिलां, 19. वरीड़ा, 20. जड़ता, 21. हर्ष, 22. धर्त,
 23. मति, 24. आवर्ग, बखान (ए), 25. उत्कंठा,
 26. निद्रा, 27. स्वप्न, 28. बोध, 29. उग्रता, भाय (बे)
 30. व्याध, 31. अमरश, 32. वितर्क, 33. स्मर्त (से),
 य तेतीस गिनाय।”

व्यभचारी या संचारी भाव

Transitory or Ancillary Emotions

Sindhi	English
1. आपो मारणु	Self-Annihilation
2. शंका	Apprehension
3. गेराभ	Concept
4. चिंता	Anxiety
5. मोहु	Delusion
6. निराशा	Despondency
7. उदासीनता	Depression
8. ईर्खा	Jealousy
9. मृत्यू	Demise
10. मोहु	Intoxication
11. आलस	Indolence
12. थकावट	Lassitude
13. उनमत	Mental Derangement
14. ढोंगु (अवहथ)	Dissembling
15. चंचलता	Unsteadiness
16. उपसमार	Dementedness
17. भोड	Alarm
18. गुरण, झोरी	Pining
19. लजा	Bashfulness
20. जड़ता	Stupor
21. हर्ष	Rapture
22. समभाउ	Equanimity
23. मति, होड	Determination

24. घबराहट	Agitation
25. उत्कंठा	Longing
26. गृहीर	Slumber
27. सुपन	Dreaming
28. जाग्रता, सौदाउ	Wakefulness
28. उगराई	Acrimony
30. पीड़ा	Illness
31. क्रोध	Anger
32. बिचतियाई	Indecision
33. सार	Recollection
(ए) डिसिजनि था	Appear
(बे) थियनि था	Become, Are
(से) गुणिजनि था	Are Counted

9. अनुभाव (Ensuaunts of Emotions)– मिडिनेई भावनि जा प्रभाव थियनि था, जेके बिनि किस्मनि जा आहिनि– हिकिड़ा सात्विक भाव (Involuntary Emotions) ऐं बिया साधारण भाव। सात्विक भावनि जो घणो प्रयोजन रूपकनि सां आहे ऐं घटि प्रयोजन श्रव्य काव्य सां। उहे जुमिले 8 जाणायल आहिनि। भरत मुनीअ अठनि जा कारण बि डिना आहिनि, जेके हिन रीति आहिनि–

1. **श्वेद** (Perspiration) या पसीनो, इहो निकिरे थो। आम तरह वरजिश, तपति, थकावट ऐं अघाईअ सबबि, पर क्रोध, घणी खुशी, लजा ऐं लोछि सबबां पिण निकिरे।

2. **स्तम्भ** याने थम्भु थी वजणु या थमण (Stupefaction), उहो आहे असर कंहिं बीमारीअ जो, पर विस्मय, क्रोध, भव या मन मौज जे असर हेठि बि थी पवे।

3. **आंसू** (Tears) इहे निकिरनि खुशीअ, आंधि मांधि, उबासियुनि, शोक या हिरास विचां, जोतोणीकि दूहें ऐं सुरमे पाइण सां बि निकिरनि। कवियुनि आंसू बिनि नमूननि जा वणन कया आहिनि- हिकिड़ आनंद अश्रु जेके खुशीअ विचां निकिरनि ऐं कवियुनि जो चवणु आहे उहे थधा गोड़हा हुजनि। बिया शोक अश्रु जेके कंहिंजे मौत या बिए शोक सबब वहनि ऐं उहे गरमु गोड़हा हुजनि।

4. **कम्प** (Trembling) डुकिणी थधि ऐं बुखार सबबि त थिए पर भव, क्रोध, खुशीअ ऐं कंहिं खासि शख्स जे खासि नमूने में छुहण करे बि पैदा थिए।

5. **रोमाच** (Horripilation) हीउ अखरु सिंधीअ में बि आयलु आहे। जेतोणीकि हिंदीअ में चवनि 'रोमांच', माना अथसि वारा खड़ा थियणु (रोम = वार)। इहा हालति कंहिं बीमारीअ में या घणीअ थधिकार में त थिए पर वडे खौफ़, क्रोध ऐं खुशीअ सबबां बि वार उभा थी पवनि।

6. **सुर भेद** (Change of Voice) याने आवाज़ बदलिजण, थधि, बीमारी, नशो ऐं वृद्ध अवस्था सबब आवाजु बदलिजे पर भव, क्रोध ऐं खुशीअ खां उबाईअ में पवण सबब बि आवाजु बदलिजे।

7. **गुशी या ऊंध** (Swoon) या मूर्छा हालित, जंहिं खे नाट्य शास्त्र में कोठियल आहे 'प्रलय', जा थिए धधिके अचण, अण-सह शोक, सख्त कशाले ऐं ओजागे सबब। जेतोणीकि ज़हर खाइण, नशे जे दवाउनि वठण ऐं सख्त मार कुट बैदि बि थिए।

8. **रंगु बदलिजणु** (Pallor) इहो थिए उदासाईअ, दुख, क्रोध ऐं ओचिती असफलता सबब। क्रोध में रंगु कारसिरो गाड़हो थिए ऐं बियनि हालतुनि हेठि ज़र्दो थिए। बीमारीअ सबब पिण पीलाणि थींदी आहे।

बाकी साधारण अनुभाव, मथे जाणायल 33 व्यभचारी भावनि मां हरहिक जा घणेई थी सघनि था।

10. स्थाई भाव (Lasting Emotions)- टेटीहनि व्यभचारी ऐं संचारी भावनि (Ancillary or Transitory Emotion) मंझां ज़ोरु पकिडे, जेके मूल ऐं जटाउ खाईदड़ भाव जुड़नि था, उहे आहिनि हेठियां 9-

1. प्रेम या रती भाव	Love
2. शोक भाव	Grief
3. क्रोध भाव	Anger
4. उत्साहु	Zeal
5. भोउ	Terror
6. हास	Humour of Mirth
7. धिकार (जगप्सा = निंदा, नफ़रत)	Hatred
8. विस्मय	Amazement
9. शम	Concord

धननजय पंहिंजे 'दश रूपक' में चयो आहे त नाट्य शास्त्र में फ़क़ति 8 स्थाई भाव शुमारजण लाइकु आहिनि, पर भरत मुनीअ ऐं ब्रियनि शम भाव ऐं साणुसि लागापियल 'शांत रस' खे नाओं भाव ठहिरायो आहे।

11. स्थाई भावनि जो रस हेठियनि नमूननि जो रस (Flavour) आहे, जेहिं रस पिराइण सां मथियां 9 भाव मनुष जे हृदे अंदरि उत्पन्न थी सघनि था-

1. श्रृणगार रस	The Erotic or Aesthetic
2. करूण रस	The Pathetic
3. रूद्र रस	The Furious
4. वीर रस	The Heroic
5. भयानक रस	The Frightful
6. हास्य रस	The Comic
7. बिभीत्स रस	The Disgustful
8. अद्भुत रस	The Marvellous
9. शांत रस	The Quietistic

12. शृणुगार रस- अग्नी प्राण जे रचींदड वेद व्यास चयो आहे त सभिनी रसनि जो प्रधार रस शृणुगार रस आहे। बियनि केतिरनि ई प्राचीन काव्य शास्त्रियुनि बि शृणुगार रस खे प्रमुख रस जाणायो आहे। हिंदीअ जे बि अनेक विद्वाननि इहो ई दुहिरायो आहे, मिसला कवी पद्याकर चयो आहे त “अव रस में सींगार रस, श्री कहत सब कोइ।” हिन रस बनस्वति हेठियुनि हकीकतुनि जोगो ध्यान लहिणो-

(क) **आलम्बन विभाव-** शृणुगार रस जे आलम्बन विभाव (Excitant) बाबति, मथे अंक 6 मंझि कुझु जाणायो वियो आहे। पहिरिणं गंज में अंक 19 में नायिकाउनि बनस्वति जेके हकीकतूं वर्णन कयल आहिनि, उहे मुख्य तौर शृणुगार रस जे आलम्बन विभाव बाबति ई आहिनि।

(ख) **शृणुगार रस जा भेद-** इहे ब आहिनि- हिकिडो ‘संयोग रस’ ऐं बियो ‘वियोग रस’।

(ग) **संयोग रस-** हिन खे हिंदीअ में ‘संजोग रस’ ऐं ‘संभोग रस’ बि कोठियो अथनि। संजोगी शृणुगार रस जो घणो प्रयोजन काम शास्त्र ऐं किनि बियनि शास्त्रनि सां आहे। पर नाट्य शास्त्रनि में जो हिन विषय जो कुझु वर्णन कयल आहे, सो इन्हीअ करे जो जीवन जे हरहिक पहलूअ जो अभिनय रूपकनि में थिए थो ऐं शृणुगार रस सम्बंधी विषयनि जो त रूपकनि में चडो ई विस्तार थिए थो। काम शास्त्र में संजोग रस जे बारे में स्त्रीअ जे सुंदरता लाइ, संदसि अंगनि उजिवनि जा 32 लछण चिटीअ रीति बुधायल आहिनि। सिंधीअ में चडबो आहे त बांहं बूटीह लछणी हुजे, उनजो वास्तो बांहं जे चरित्र सां न हूंदो आहे पर संदसि हरहिक अंग उजिवे जे सुडौल हुअण सां।

2. साणिए सिलसिले में भरत मुनीअ सत सील वारियुनि नायिकाउनि जा हेठियां विशेष अलंकार वर्णन कया आहिनि-

(क) नायिका अंग अलंकार (Personal)-

1. भाव (Feeling)- जुवान कन्या में प्रेम भाव अवलि उत्पन्न थिए, उन वक्त संदसि खासि ड़ेखु।

2. हाव (Emotions)- थोरी वड़ेरी थिए, तड़हिं संदसि मन में आधि मांघि जी शुरूआति थिए। तड़हिं संदसि चेहरो, भिरुनि जो घटिजणु वगैरह।

3. हीला (Passion)- याने संजोगी जज़्बे जी जाग्रता, उनजो बखणु।

(ख) नायिका अयक़नी अलंकार (Natural) याने बिना जतन जे, बिना कौहिं उदम जे।

4. शोभा (Beauty)

5. कांत (Grace)

6. दीप्त = आब (Lustre)

7. माधुर्य (Sweetness)

8. धीरज (Restraint)

9. निमाणाई (Meekness)

10. प्रगल्भ = साहस (Boldness)

नायिका स्वभाविक अलंकार (Inborn)

11. लीला = क्रीड़ा (Sportiveness)

12. विलास = नाजु नख़िरो (Dalliance)

13. विच्छती = वस्तू लज़ा (Deceny in Dress)

14. विभर्म = अलट पुलट सींगारु (Disarray)

15. किलकिंचित = खुशी, रोदनु, क्रोधु ऐं भोड, गड्डु सड्डु
(Hysterical Delight)

16. **मोटायत** = प्रीतम सां पाणमुरादो हा में हा मिलाइणु
(Submissiveness)
17. **कटमत** = मित्र सां कौड़ो क्रोधु (Affected Anger)
18. **विरोक** = ढोंगी, बेपरहवाही = अलबेलाई
(Affected Indifference)
19. **ललित** = अंग कोमल नमूने चोरणु, प्रीतम खे हिरखाइण लाइ
(Voluptuous Grace)
20. **विकृत** = लुछ सबब बुधो अण-बुधो करणु
(Suppression due to Shyness)
21. **मद** = आकड़ि (Arrogance)
22. **तपणु** (Pining)

(घ) **व्यभचारी ऐं संचारी**- संयोगी श्रृणगार रस पैदा करण ऐं उनखे जोरु वठाइण लाइ मथे अंक (7) वारनि 33 भावनि जी यादाश्त में घणेई आनंद पैदा कंदड़ भाव आहिनि ऐं घणेई जेके शोक पैदा कंदड़ आहिनि, उहे वियोगी सींगार रस जा मददगार थियनि था।

13. करूण रस (Pathetic)-

(क) **श्रृणगार रस ऐं करूण रस**- मथे, अंक 11 में 'संयोगी श्रृणगार रस' जो कुझु अहवालु डिनो वियो आहे पर श्रृणगार रस जे बिए भेद 'वियोगी श्रृणगार रस' जो वर्णन हिन हंधि करणु जरूरी आहे। जिते जिते श्रृणगार रस प्रधान रस आहे, उते घणो करे करूण रस जरिये प्रेम भाव जोरु वठे थो। आदि खां वठी, डिटो वियो आहे त जडहिं जडहिं विछोडो थिए थो, तडहिं तडहिं प्रेमु वधे थो। का बि प्रेम जी कहाणी न थिए, जहिं मंझि प्रेम जी राह अणांगी न हुजे। प्रेम अजा उत्पन्न थिए त अभिलाखा थिए, उकीर वधे, आंधि मांधि थिए, जहिं कारण शोक प्रेम पैदा थियण सां ई पाण बि

उत्पन्न थिए! प्रियतम ऐं प्रियतमा जी हिक ब्रिए सां दिलि लग्गे, जंहिं पुजाणां वरी संदनि राह में रंडकूं बि अवसि पैदा थियनि। अभिलाखा खां पोइ चिंता वधे ऐं सभु कष्ट वधनि। तंहिं करे करूण रस खे बि काव्य शास्त्र मॉझि चडी महानता डिनल आहे। आचार्य भव भूत चयो आहे त ‘करूण एवं एको रस’, मतिलबु त “उहो करूण हिकिडो ई रस आहे।”

(ख) **आलम्बन विभाव (Personal Excitant)**– जीअं प्रेम उत्पन्न थियण ऐं ज़ोर वठण जो मूल दारो मदरु काव्य कथाउनि में प्रियतम ऐं प्रियतमा ते आहे ऐं रूपक कथाउनि में नायक ऐं नायिका ते आहे, तीअं शोक रस जो आलम्बन विभाउ पिण मथिनि ई मुनहसर आहे।

(ग) **संचारी भाव**– 33 संचारी भावनि जी जेका यादाश्त मथे ड़िनी वेई आहे, तिनि में जेके बि भाव वियोगी श्रृंगार रस जा साथी आहिनि, उहे ई करूण रस जा साथी आहिनि, उन्हनि मंझां ई स्थाई भाव शोक उत्पन्न थिए थो ऐं ज़ोरु वठे थो।

(घ) **अनुभाव (Ensuaunts)**– करूण रस ऐं साणुसि लाग्गापियल शोक भाव जा सात्विक अनुभाव (Involuntary Ensuaunts) जेके मथियनि 33 संचारी भावनि जी शदाश्त में ज़ाणाय आहिनि, उन्हनि जियां फ़ारसी शाइरीअ में बयान कयल हेठियां अनुभाव, उहिजाण, उहे असीं हिते वारा सिंधी सिंधु मां सिखी आया आहियूं, बजाइ नाट्य शास्त्रनि ऐं काव्य शास्त्रनि में ज़ाणायल अनुभावनि जे।

“आशिकां रा नो निशानी, ऐ पसर!

आहि सरदो, रंगु ज़रदो, चश्म तरि!

इंतज़ारी, बेकरारी, बेसबुरु!

कम ख़ोरुदिनी, कम गुफ़्तगी, ख़्वाबी हराम!”

14. रूद्र रस (The Furious)-

(क) आलम्बन (Excitant)- रौद्र रस याने कावड़ि गुस्से जो शख्सी कारणु आहे दुश्मन या उहो शख्सु, जेको अण सहाईदड़ गाल्हि चवे या करे। रूपकनि मझि कावड़ि जो कारण थिए विरोधी नायक या खलनायक या नायक जो शत्रू।

(ख) अनुभाव (Ensuaunts)- रूद्र रस जा अनुभाव थियनि मुंहं ऐं अखियुनि जी लालाई, डुंद कड़िटणु, डुंद भेड़णु, चप भेड़णु, भिरूं घुंजाइणु, अजायो गरिजणु, डुकणु, हथियार पकिड़ण जी कोशिश करणु, रोमाच माना वार उभा थियणु वगैरह। तंहिं खां सवाइ कावड़ि में आवाज बदलिजे ऐं पघरु पसीनो बि निकिरे।

(ग) संचारी- स्थाई भाव क्रोध जा संचारी थियनि उगिराणि, अमरश, मद, आवेग, ईर्खा वगैरह।

(घ) रूद्र ऐं वीर रस- हिननि बिन्हीं जा आलम्बन विभाव हिक जहिड़ा ई थियनि।

15. वीर रस (The Heroic)-

(क) आलम्बन- चइनि किस्मनि जा वीर नायक हिन रस जो आलम्बन थी सघनि था। धर्म वीर, युद्ध वीर, दया वीर ऐं दान वीर। (डिसो गंजु पहिरियों अंक 15)। शत्रु या खलनायक बि वीर रस जा आलम्बन थियनि था।

(ख) संचारी- गीरब, दया वगैरह।

(ग) स्थाई भाव- उत्साहु।

16. भयानक रस (The Frightful)-

(क) आलम्बन- नायक, दुश्मन वगैरह।

(ख) संचारी- गीरब, नफरत, जोश, दया वगैरह।

(ग) अनुभाव- रोमाच, कंप वगैरह।

17. कर्ष या भीभत्स रस (The Disgustful)-

(क) आलम्बन- को बि नफ़रत पैदा कंदडु जीवु या का बि कराहत पैदा कंदडु चीज़।

(ख) संचारी- उपसमार, उगिराणि वगैरह।

(ग) अनुभाव- अखियूं बूटणु, नकु बंदि करणु, थुकूं उछिलाइणु।

18. हास्य रस (The Comic)-

(क) आलम्बन- विकृत रूप वारा इंसान, विकृत वेस धारी, संदनि विकृत वचन ऐं विकृत करतूत।

(ख) संचारी- मुश्कणु, खिलणु वगैरह।

(ग) भेद- भरत मुनीअ हास्य रस ब्रिनि वर्गनि में विरिहाया आहिनि-

1. आत्मस्थ हास्य- पाण तां खिल कराइणु।

2. प्रस्थ हास्य- पाण ब्रियनि खे खिलाराइणु।

(ध) अनुभाव- भरत मुनीअ हास्य जा हेठियां 6 नमूना वर्णन कया आहिनि-

1. सिमत (Simat)- झीणी मुश्क, जहिं सां गडु अखियूं फाटनि (Gentle Smile)

2. हस्त- मुश्कण महिल डुंद कुझु डिसिजनि (Smile)

3. वहस्त- नंढे आवाज़ में खिलणु (Soft Laughter)

4. उपहस्त- आहिस्ते खिलण सां मथो धोडुणु (Soft Laughter with Shaking of Head)

5. अपहस्त- डाढियां खिलणु ऐं उन वक्तु अखियुनि में पाणी अचणु (Loud Laughter with Tears)

6. अतिहस्त- डाढियां खिलंदे सजो बदन धुडणु (Loud Laughter with Shaking of Body)

(ङ) **चरित्र पटांदर हास**- गंज पहिरिएं जे 12 अंक में बुधायलु आहे त चरित्र पटांदर, इंसान टिनि दर्जनि जा थियनि था। भरत मुनीअ ऐं ब्रियनि पटांदर हरहिक दर्जे वारे इंसान जो ठीक हास जो नमूनो हेठिएं मूजिबु आहे-

उत्तम इंसान- संदनि हास मथे डिनल सुमत ऐं हस्त नमूने में थिए।

मध्यम इंसान- वहस्त ऐं उपहस्त नमूना।

अधम इंसान- अपहस्त ऐं अतिहस्त नमूना।

रंग मंच ते पिण मुनासिब नमूना अभिनय (Acting) मंझि हुअणु घुरिजनि।

19. भयानक रस (The Frightful)-

(क) **आलम्बन**- स्त्रियूं नीच इंसान, हिंसा ते भाडींदड इंसान, बालक, जुल्मी दुश्मन, मसाणा ऐं कब्रस्तान, भूत प्रेत वगैरह।

(ख) **अनुभाव**- रूमाच, कंबणु, रोदनु वगैरह।

(ग) **हास ऐं भयानक रस**- रंग मंच ते भयानक रस जे अनुभावनि पेशि करण में आलम्बन वारनि पात्रनि जी असफलता थिए त भयानक रस बदलिजी मागहीं हास रस बणिजी पवे। छाकाणि त इन्हनि पात्रनि जे अभिनय में जेकडहिं पूरो गोहर या काबिलियत न आहे त हू भव पैदा करण बदिरां उल्टो ठठोली ऐं खिल पैदा करे विझंदा।

20. अद्भुत रस (The Marvellous)-

(क) **आलम्बन**- देवताऊं ऐं ब्रियूं अलौकिक व्यक्तियूं ऐं संदनि वेस धारी।

(ख) **अनुभाव**- अखियुनि जो फाटणु, थम्भु थी पवणु, वार उभा थियणु (रूमाच), गद् गद् थियणु, मुख मां वाह वाह निकिरणु, ताडियुनि जो फहिको थियणु वगैरह।

(ग) **वीर रस ऐं अद्भुत रस**- हीउ ब्रई पाण में लागापियल आहिनि। छो त वीर रस जे कारनामनि खे अद्भुत रस अनुभावनि पैदा करण जी वडी शक्ती थी सघे थी।

21. शांत रस (The Quietistic)– भरत मुनीअ फ़क़ति पहिरियां 8 रस ठहिराया आहिनि ऐं हिन ‘शम’ स्थाई भाव खे व्यभचारी ऐं संचारी भाव करे लेखियो आहे। हीउ नाओं स्थाई भाव नाले ‘शम’ सतीं सदीअ खां स्थाई भाव करे लेखियो वियो आहे। पर पोइ बि विद्वाननि मां किनि जो चवणु आहे त शांत रस फ़क़ति श्रव्य काव्य में समाइण लाइकु आहे ऐं न दृश्य काव्य में। मुख्य तौर इहो रायो प्रभाकर भट जो संदसि ग्रंथ ‘रस प्रदीप’ में दुहिरायल आहे। ब्रिए तरफ़ जगन्नाथ जो ‘रस गंगाधर’ में चवणु आहे त मुनासिब दृश्यनि जे सहारे सां रूपकनि में शांत रस समाए सघिजे थो।

22. वत्सल्य रस (The Parental Affection)– संस्कृत ऐं हिंदीअ में ‘वत्स’ माना बालक, बचो, विश्वनाथ पहिजे ‘साहित्य दर्पण’ मंझि माता पिता जे बार लाइ प्यार जे, गुरुअ जे गोदि में वरितल नएं शिष्य जे प्रेम खे ऐं इन्हीअ नमूने ‘रती’ खां अलगि नमूने जे प्रेम खे ‘वत्सल्य’ रस ठहिरायो आहे ऐं ब्रियनि जो चवणु आहे त अहिडे किस्म जो प्यारु दाइमी ऐं जटदार न आहे, तहिं करे उहो रसनि में शुमारजण लाइकु न आहे।

23. भाव ऐं रस निस्वति ब्रियूं विषयूं– भरत मुनीअ भाव ऐं रस खे हर किस्म जे काव्य जो प्रमुख ततु दुहिराईदे, ब्रियनि बि घणनि ई लागापियल विषयनि जो लम्बो छोटो विस्तार कयो आहे। ब्रियनि केतिरनि ई प्राचीन विद्वाननि पिण हिन सिलसिले बाबति अनेक आलिमाणा वीचार जाहिरु कया आहिनि। मिसला स्थाई भावनि जे मंझांउनि पैदा थींदड़ रस सां भेट, रस जो सरूप, रसनि जो पाण में सम्बंध ऐं मंझिनि हिक ब्रिए जो विरोध, रस, भास ऐं भाव रस दोष वगैरह। भाव ऐं रस बाबति जिनि सिद्धांतनि जो अभ्यासु असांखे करिणो हुजे, उहे शामिल सहायक पुस्तनि जे सूचीअ वारनि असुली ग्रंथनि या संदनि अनुवादिनि द्वारां करे सघूं था। सागिए सिलसिले में ‘ध्वन’ (धन) सम्प्रदाय ते थोरी रोशनी चोथें गंज में विधी वेंदी।

गंजु टियों अलंकार शास्त्र सिद्धांत

1. **सिंधु में अलंकार विद्या**— सिंधु में हुआसीं त उते असांखे अंग्रेजी बोली पढ़दै, अंग्रेजी Figures of Speech जो कुछ अभ्यास करिणो पवंदो हो ऐं गड़ोगडु फ़ारसीअ जे 'सनाया बदाया', 'तजनीस' जे किस्मनि, 'इस्तारा', 'मिजाज़ मरसल', 'कन्नाय' ऐं सिंअतनि वगैरह जो पिण अधोगाबरो अभ्यास करिणो पवंदो हो। उते 'अलंकार शास्त्र' विरले कहिं बुधो बि हो। इन्हीअ विषय खां असांजा उते वारा अदीब बि एतिरो त अज़ाण रहियल हुआ, जो खुदि असांजे आँला आलिम परमानंद मेवाराम जे डिक्शनरियुनि में न फ़क़ति अनेक अलंकारी शब्दनि जो क़ता रहिजी वियो पर जेके थोरा लफ़ज़ दर्ज कयल हुआ, तिनि जा अर्थ किथे किथे दुरुस्त करे, पर किथे किथे अणपूरा या अशुद्ध पड़जी विया। हिन गंज में मुनासिब हंधनि ते अलंकार विद्या जे घणनि हिंदी परिभाषिक शब्दनि जा तुज अंग्रेजी लफ़ज़ डिना विया आहिनि ऐं किथे किथे संदनि हम माना फ़ारसी लफ़ज़ बि डिना विया आहिनि। 'अलंकार' शब्द जो आम अर्थु आहे 'जेवर, हार सींगार'।

2. **काव्य जा सम्प्रदाय (Schools of Poetry)**— 'सम्प्रदाय' शब्द सिंधी बोलीअ में अगे ई आयलु आहे। डिसो परमानंद जी अंग्रेजी-सिंधी डिक्शनरी, जौहें में 'Sect' जू मानाऊं डिनल आहिनि— सम्प्रदाय, फ़िरक़ो, कोफ़ो, पख, मति वगैरह। ब्र हज़ार वरिह्य अगे भरत मुनीअ रस खे काव्य जो मूल ततु ठहिराए जेकी ज़ाहिरु कयो हो, सो वरी बि हेठि दुहिराइजे थो—

‘निः रसादरते किश्चद रथ’

याने त जिते रस न आहे, उते अर्थु बि कदाचित नथो थी सघे। भरत मुनीअ खां अटिकल 8 सदियूं पोइ, आनंद वर्धन पंहिंजे उत्तम ग्रंथ 'ध्वनिय लोक' में 'ध्वन काव्य' खे उत्तम काव्य ठहिरायो, पर वरी आनंद वर्धन खां अगे जो किनि आचार्यनि अलंकृत काव्य खे ऐं किनि 'रीत काव्य' खे ऐं खांडसि पोइ किनि 'विरोक्त काव्य' खे उत्तम में उत्तम काव्य करे दुहिरायो, सो काव्य शास्त्रियुनि मंझि जुदा जुदा सम्प्रदाय जुडी पिया, जिनि जी सरसरी जाण असां सिंधियुनि खे बि हुअणु जुगाए-

(क) **रस सम्प्रदाय-** भरत मुनी, जो रस जे विषय में अवलि अवलि बेहद ऊन्हो वियो हो, सो पोइ वारनि सुभावीक खेसि रस सम्प्रदाय जो हर्ता कर्ता करे लेखियो आहे। जेतोणीकि संदसि प्रयोजन मूल रीति नाट्य विद्या सां हुओ त बि हू नाट्य जे हरहिक पहलूअ में ऊन्हो वियो। अभिनय (Acting) खे चइनि किस्मनि आंगिक (Bodily), वाचक (Verbal), आहार्य (Scenic) ऐं सात्विक (Emotional) मंझि विरिहाए, हिन वाचक तोड़े आंगिक तोड़े आहार्य अभिनय खे सात्विक अभिनय जा लाजमी साथी जाणाया। भरत मुनीअ जे मुख्य पोइलगु विश्वनाथ पंहिंजे ग्रंथ 'साहित्य दर्पण' में चयो त 'वाक्य रसात्मक काव्य' याने त रस भरी रचना ई काव्य चइजे। भरत मुनी अलंकारनि जे विषय में पिण वियो हो पर संदसि समें ताई अजां चइनि अलंकारनि जा नाला वठण में ईदा हुआ, जेतोणीकि बिना नाले भाषा जा सींगार आदि खां अनेक हुआ। भाषा अलंकारनि जा हिन फ़क़ति 4 नाला जेके वर्णन कया, से आहिनि-यमक (Pun), उपमा (Simile), रूपक (Metaphor) ऐं दीपक (Illuminator)। भरत मुनीअ घणो ध्यान डिनो नाट्य अलंकारनि डे, रंग भवन ऐं रंग मंच ऐं नटनि नटियुनि जे हार सींगार डे।

(ख) **ध्वन सम्प्रदाय-** 'ध्वन' शब्द जो पूरो अर्थु समुझण लाइ अवलि इहो जाणणु ज़रूरी आहे त भाषाउनि जे हरहिक शब्द जा अर्थ तिनि किस्मनि जा थी सघनि था। हरकहिं शब्द खे तिनि नमूननि जी शब्द 'शब्द शक्ती' आहे, जीअं त-

1. **वाच्य अर्थ (Denotation)** याने पधिरा अर्थ। संस्कृत व्याकरण में हिन अर्थ खे 'अभधा' अर्थ बि चवनि (अभ = बाहिरियों)।

2. **लक्ष अर्थ (Indicative Meaning)** याने त पधिरा अर्थ न पर बियो को अर्थ जहिंजो कुझ लक्ष, का लिख डिनल हुजे, जहिं लिख वसीले उहो अर्थ कढी सघिजे।

3. **व्यंजनिक अर्थ (Suggestive Meaning)**– अभधा अर्थ ऐं लक्ष अर्थ, जिनि खे 'अभधा मूलक' ऐं 'लक्षणा' बि चवनि, तिनि खां सवाइ टिएं किस्म जो अर्थ जेको हरकहिं शब्द मंझां प्रकाशित थी सघे थो, जेको लेखक जे मनो भावना पटांदर चिमकाट डुई, पढंदडनि बुधंदडनि जे दिलियुनि अंदरि चुभे थो ऐं चुभंदे चेन आनंद डिए थो, उहो आहे व्यंग अर्थ जहिंखे 'व्यंजना' बि चवनि। 'व्यंजना' लाइ बियो शब्द जेको संस्कृत मां आयल आहे, सो आहे 'ध्वन', 'ध्वनिय अर्थ'। ध्वनिय अर्थ खे उहा शक्ती आहे, जो अगिले खे धुन में विझी थो सघे। उहा धुन, अभधा अर्थ या लक्ष अर्थ वसीले लगणु मुमकिन न आहे पर जे बि मुमकिन हुजे त बि महा कठिन।

भरत मुनीअ खां अटिकल 8 सदियूं पोइ 'ध्वनिय लोक' जे रचींदड आनंद वर्धन, 'ध्वनिय सम्प्रदाय' जो पायो विझंदे जाहिरु कयो त–

‘काव्या आत्मा ध्व नृत बुधै, समामतात पूर्वे’

अर्थ त प्राचीन आचार्यनि ध्वन खे ई काव्य जी आत्मा ठहिरायो आहे।

लगभग सागिए ई सिलसिले में हिक अंग्रेजी ग्रंथकार नाले Greene पहिंजे किताब The Arts and the Art of Criticism मंझि हीअं चयो आहे–

".... Three types of meanings,
Conceptual, Imaginative
and Emotive - Connotive...."

याने त हिन बि शब्द जा टिनि किस्मनि जा अर्थ बुधाया आहिनि-
हिकिड़ो अखरी जाहिरी, बियो ख्याली, टियों भावना जाहिरु कंदडु। अगिते
हली इन्हीअ ग्रंथकार चयो आहे त कलाकार, कवी ऐं साहित्यकार जी मुख्य
मुराद आहे-

".... to express and communicate
to his follows some pervasive
human emotion...."

याने त प्रवेश कंदडु को इंसानी भाव बियनि ताई पहुचाए। पधिरो आहे
त 'ध्वनिय सम्प्रदाय' ज़ोरु पकिड़ियो, मुख्य तौर हिन सबब करे जो हिननि
ध्वनिय अर्थ जो भाव रस सां घाटो सम्बंध काइमु रहियो।

(ग) **रीति सम्प्रदाय-** हिन सम्प्रदाय जो पायो विज्ञंदडु वामन आचार्य
हुओ, जहिं अठौं सदीअ धारे पहिंजे ग्रंथ नाले 'काव्य अलंकार सूत्र' में 'रीति'
(Style) खे काव्य जी आत्मा ठहिरायो। हिन अलंकार सम्प्रदाय वारनि जो
विरोधु कयो ऐं रीति जे बारे में चयो त-

‘विशिष्टा पद रचना रीति, विशेषो गुण आत्मा’

याने त गुणनि (माधुर्य, ओजसु ऐं प्रसाद) भरियल रचना “रीति काव्य
आहे ऐं उहा ई काव्य आत्मा आहे।” रीति (Style) बाबति चोथें गंज में
अहमु हकीकतूं पेशि कयूं वेदियूं।

(घ) **विक्रोक्त सम्प्रदाय-** हिन सम्प्रदाय जो पायो कश्मीरी पंडित
राजालक कंतक ड़हीं सदीअ धारे विधो। जड़हिं हिन पहिंजे ग्रंथ नाले
'विक्रोक्त जीवति' में जाहिरु कयो त-

‘विक्रोक्त, काव्य जीवतम’

याने त विक्रोक्त (Striking Expression) काव्य जी आत्मा आहे। हिन
जो चवणु हो त अलंकार तड़हिं काव्य जी आत्मा बणिजी सघनि था, जड़हिं

मंझिनि 'विक्रोक्त' आहे। ध्वन बि तडुहिं ई आनंदित थिए, जडुहिं ध्वनिय अर्थ में 'विक्रोक्त' आहे। रीति बि तडुहिं ई कशशी आहे, जडुहिं रचना में 'विक्रोक्त' आहे ऐं खुदि 'रस' तडुहिं ई प्राप्त थी थो सघे, जडुहिं भाव 'विक्रोक्त' शब्दनि में 'विक्रोक्त' अर्थ सहारे समाइजनि था। 'विक्रोक्त' शब्द जी अखरी माना आहे Crooked Speech. किनि पछमी अनुवादकनि, अलंकार नाले 'विक्रोक्त' जो तर्जुमो डिनो आहे Equivoque. आचार्य कंतक जी विषय तमाम गूढ़ी, गंभीर ऐं औखी आहे। पर उन बारे में कुझु वधीक वर्णन चोथें गंज में कयो वेंदो।

(ड) अलंकार सम्प्रदाय- मथे जाणायो वियो आहे त ब हजार वरिह्य अगे भरत मुनीअ सिर्फ चइनि अलंकारनि जो जिकिरु कयो हो, खांडसि पोइ 'अग्नी पुराण' में 16 अलंकार बुधाया विया ऐं 'विष्णू धर्मोत्तर पुराण' में बि फ़क़ति 18 अलंकार बुधाया विया। सागिए वक्त भटी नाले हिक विद्वान पंहिंजे ग्रंथ 'भटी काव्य' में 38 अलंकार बुधाया, पर इन्हनि अलंकारनि जा सिद्धांत जोड़े, जणु त अलंकार शास्त्र जो पायो विधो। छहीं सदीअ धारे विद्वान भामह आचार्य, जहिं पंहिंजे नाम्यारे ग्रंथ 'काव्य अलंकार' में चयो त-

'काव्यम ग्राहीम अलंकारात सौंदर्यम अलंकार'

याने त अलंकारनि द्वारां ई काव्य स्वीकार करण लाइकु थिए थो ऐं अलंकार ई सूंहं आहिनि। भामह फ़क़ति 38 अलंकार बुधाया आहिनि ऐं संदसि हम उमिरि आचार्य दणडीअ बि पंहिंजे ग्रंथ नाले 'काव्य दरस' में सागिया 38 अलंकार वर्णन कया आहिनि। खांडनि पोइ घणेई विद्वान पैदा थिया, जिनि अलंकारनि खे रस खां बि वधीक अहमियत डिनी। रीति सम्प्रदाय जारी थियो हिन करे जो ब सदि यूं पोइ वामन आचार्य डिटो त अलंकारनि खे हद खां बाहिरि अहमियत डिनी थे वेई। रीति सम्प्रदाय वारनि, ध्वनिय सम्प्रदाय वारनि ऐं विक्रोक्त सम्प्रदाय वारनि भाव ऐं रस जी अहमियत घटि कीन कई। हिननि अलगि अलगि वाट रचना में रस समाइण रचना मां रस प्राप्त करण जी डुसी।

पर त बि अलंकार शास्त्र भाव रस जे सहायक पदवीअ जे हदुनि अंदरि चडो ज़ोरु वरितो ऐं अजु अलंकार शास्त्र में सर्वे अलंकार डिनल समुझायल आहिनि, जिनि मां थोरनि जो ज़िकिरु हिन गंज में कबो।

3. काव्य जा दर्जा- घणो करे सभिनी प्राचीन विद्वाननि काव्य जा टे दर्जा बुधाय आहिनि- उत्तम, मध्यम ऐं अधम। पर सागी विरिहासत आचार्य राजांक ममत करे, जहिं नमूने में हरहिक दर्जे जे काव्य जूं खसूसियतूं वर्णन कयूं आहिनि, उहो आम तरह कबूल पियल आहे। राजांक ममत बि कंतक जियां कश्मीरी पंडित हो ऐं सभेई सम्प्रदाय ज़ोरु पकिड़े चुका हुआ तहिं बैदि ममत जो जगु प्रसिद्ध पुस्तक 'काव्य प्रकाश' रचियो वियो। ममत कहिं बि हिकिड़े सम्प्रदाय जो तरफदान कीन हो पर हुन मिड़नेई सम्प्रदायनि जूं मूल खसियतूं चूड़े पहिंजनि सिद्धांतनि मंझि ग्रहण कयूं, जहिं सबब पश्चिमी विद्वाननि खेसि कोटियो आहे Synthetist याने संयोजक। हिन, टिन्हीं किसमनि जे काव्य जी भेट हेठींअ तरह कई आहे-

(क) **उत्तम काव्य-** ममत 'ध्वन काव्य' खे सर्व उत्तम काव्य जाणाए, सागिए वक्त 'रस' खे वधीक अहमियत डिनी आहे ऐं चयो अथसि त जहिं रचना में 'व्यंग' अर्थ जो चमत्कार, वाच्य अर्थ ऐं लक्ष अर्थ खां वधीक सुंदर आहे, उहा रचना ई अवलि दर्जे जो काव्य सडिजण लाइकु आहे। भाव ऐं रस जे बारे में भरत मुनीअ जार वीचार, तिनि जी मूल रीति पेरवी कई अथसि ऐं हुनजा सभेई परिभाषिक शब्द (Technical Terms) कतब आंदा अथसि। काव्य प्रकाश जे चोथें उलास याने अध्याय में पधिरो कयो अथसि त उत्तम काव्य उहो रसात्मक काव्य आहे, जहिंजो रस शब्दनि जे व्यंग अर्थ (Suggestive Meaning) द्वारां पिराइण में अची सघे। 'ध्वन काव्य' खे उत्तम काव्य हिन करे लेखियो अथसि जो मंझिसि रस बिनह स्पष्ट शब्दनि में न, पर व्यंग अर्थ मूजिबु ज़णु त इशारे तौर समायल थींदो आहे। जेको रस पढ़ंदड़ या बुधंदड़ पहिंजो हदो कवीअ जे हदे सां मिलाए प्राप्त करे सघे थो ऐं न

रुगो शब्दनि जे अखरी अर्थ समुझण सां। उत्तम काव्य जा मिसाल डींदे, हरहिक रस जहिं नमूने में निर्णय कयो अथसि, तहिं मां साधारण पदंदु बि सवलाईअ सां समुझी सघे थो त ध्वनिय अर्थ (Suggestive Sense) ज़रिये रचना मां केडो न आनंद अची सघे थो। हेठि डिनल अंक (4) में के मिसाल ममट काव्य प्रकाश मां ई वरितल आहिनि। हिन लेखक, उन्हनि मिसालनि जो तुज तर्जुमो कीन कयो आहे पर अनुवाद बदिरां उलथो ई कयो आहे।

(ख) **मध्यम काव्य**- ममट विचोले दर्जे जे काव्य खे 'गुणी भूत काव्य' थो कोटे, छाकाणि त जेतोणीकि मँझिसि कवी गुण समाए थो त बि, न ध्वनिय अर्थ सहारे पर स्पष्ट नमूने में ऐं छाकाणि त इन्हीअ तरह रस जे मुख्य गुणनि माधुर्य (Sweetness), ओजसु (Sublimity) ऐं प्रसाद (Perspicuity) खे पधिरो न कयल हूंदो आहे, तहिंकरे रस प्राप्त करणु औखो थी पवंदो आहे।

(ग) **अधम काव्य**- पोयें दर्जे जे काव्य खे 'चित्र काव्य' कोठियो अथसि ऐं चयो अथसि त जहिं काव्य में ध्वन आहे ई कान, रुगो अलंकारनि जो झंझट आहे, उहा बिल्कुल घटि दर्जे जी रचना थिए थी ऐं सचु पचु त उहा काव्य सडिजण लाइकु ई कीन आहे। अलंकारनि खे ममट का घटि अहमियत कान डिनी आहे पर साफ़ कयो अथसि त उहे आहिनि रस खे वधीक रसात्मक बनाइण जी सामग्री।

4. उत्तम कार्य जा मिसाल- हेठियनि मिसालनि मां के ममट जे काव्य प्रकाश मां ऐं के विश्वनाथ जे 'साहित्य दर्पण' मां वरितल आहिनि। जेतोणीकि असुल उहे कालीदास जे नाटकनि मां, ब्रियनि किनि प्राचीन नाटकनि मां ऐं रामायण, महाभारत महाकाव्यनि मां कढियल आहिनि। हरहिक मिसाल पदंदे ध्यान में रखणु ज़रूरी आहे। न फ़क़ति इहा ग़ाल्हि त ध्वनिय अर्थ में केडो न शक्ती आहे, पर इहा ग़ाल्हि पिण त अलंकारनि बिना बि रचना महा आनंदित थी सघे थी।

(क) संजोगी श्रृणगार रस- स्त्री विभाव (Erotic)-

“वीरान अस्थान अंदरि, सेज पलंग ते सुन थी।
 हीअ उथी।
 नेण हेडांहुं, नेण होडांहुं, नेण पुठिते;
 सांति सांति में, पब पब सां लाए, पलंग भेड़े थी।
 अखिड़ियुनि सां खोज वधार्ई पतीअ जे चेहरे में।
 पर, हिनजो गेग अहिड़ो ज़णु त हू हुजे अघोर निंड में।
 मुख भिकेरियाई मुख सां, पूरण निडरता सां
 हिनजे चेहरे ते उमालक आई कंप, पर झीणी;
 लालाई, पर अण-लखी।
 हीअ थी वेई लज में लाल, ऐं कंठ पियसि दुरिकी।
 पोइ, मोट में वसिकारो, छा जो?”

(विभाव = Excitant, निडरता = Buldness, कंप = Tremour)

(ख) पुरुष विभाव-

“ऐ मृघ नैनी! वजेई चोली, वजीमि चीन।
 एतिरो चई, चपटीअ सां छुहियाईसि चोलीअ जे कहियुनि खे।
 सुंदर नारीअ जे गिलनि ते प्रघट थी हर्ष जी लालाई,
 सा डिठी सखियुनि; सो, मुस्कराहट हरहिक जे मुख ते,
 पेरे मिड़नेई जा पुठिते, कंहिं डिनो बहानो, का वई खिसिकी,
 मिड़ेई थियूं अलूप! पोइ?”

(ग) करूण रस (Pathetic)-

“अमी! ओ अमी!
 काडे वेईअं? छडे वेईअं?
 ओ देवताऊं! किथि आहिनि अक्हां जूं आसीसाऊं?
 हाइ! असांजी गोदि वारा अमीअ जा अंग, उन्हनि ते

अभागी अखि भरिकी रही आहे! अडे! अडे!
 हीउ संदसि निर्मल नेण, पजिरी रहिया आहिनि!
 हीउ अमीअ जो मिठिडो मुख,
 ओ हीउ.... मिठिडो.... मुख.... ओ, ओ!”
 “कहिडो न दिलि ड़ारींदडु रोदनु!
 बुधी, प्रतिमाऊं बि जेकर आंसू वहाए विझनि,
 दीवारूं थी जेकर पुर्जा पुर्जा थी पवनि!”
 (प्रतिमाऊं = Statues, आंसू = Tears)

(घ) रूद्र रस (Furious)-

“ठहरो! बीही वजो!
 अडे अक्हीं हैवाननि समान महा दुष्ट इंसानो!
 अक्हां में केरु आहिनि, जिनि हीउ उग्र अत्याचारु कयो?
 केरु आहिनि, जिनि उहो स्वीकारु कयो?
 केरु ड़े, केरु आहिनि जिनि वरी बीही अखियुनि सां ड़िठो?
 तरिसो त इझो थो आऊं चइनि ई ड़िसाउन ड़े, कणो कणो करियांव,
 अक्हां मिडिनेई जो, ऐं पिण भीम जो, अर्जुन जो ऐं पिण
 अक्हांजे कृष्ण जो, हड हड, मास, ततु।”

(ङ) वीर रस (Heroic)-

“बांदरो! अक्हीं जीतामिडा जीव! अक्हीं त उल्को ई कीन करियो!
 ड़िसो, ड़िसो हीउ मुंहिंजा बाण, जिनि इंद्र देवता जे गज जो मंदरु बि छेहूं
 छेहूं करे छडियो। हीउ छेहूं अक्हांजे मैथन ते वसिजनि, सो थींदो मुंहिंजे बाण
 जो अपमान!

ए सुमित्रा जा पुत्र! तूं बि आखरि में न आहींमि! जिते आहीं, उते उभो
 ई रहु! आउ, आउ मेंघनाद, मुंहिंजे शान वटां जे को शिकार आहे त उहो
 आहे रुगो रामु, जहिं अखि छिंभ में हीउ सारो सागर ई बुधी छडियो आहे!”

(च) भयानक रस (Frightful)-

“डिसु, डिसु! हीअं छाल मारींदो, भजंदो वजे, छो?
 पोयूं जूंधूं जणु पेट मंझि टुंबे, साम्हियुनि सां ई सटींदो वजे! छो?
 इझो, हाणि बीही रहियो!
 मणिके जे मोड़, कहिड़े न मोहींदड़!
 हिक अखि आड़ी करे, पुठियां डिठाई हिक ई झलक,
 हिकु ई किरिणो सूरज जो करीसि उन्हीअ आड़ीअ अखि ते;
 ऐं थियो तेज तजलो, इन्हीअ हिकिड़ीअ आड़ीअ अखि में!
 डिठुइ? कंहिं भारी दुर्दशा जो प्रभाव समायल हुअसि
 इन आड़ीअ अखि में!
 छा डिसी वरिताई उन हिकिड़ीअ झलक में
 जो हीअं छाल मारे वरी छूट उड़ाणो?
 ओहियो! वेचारे पसूंअं पोयां, रथ खे सटींदो अचे
 चतुर निशान! उन्हन हथनि में वागु ऐं उन्हन ई हथनि में
 महा घातक बाण! वेचारो मृघ!”

(छ) कर्स या भीभत्स रस (Disgustful) = मकरोह-

“अवलि, लोथ जी चमड़ी लीडूं लीडूं कयाई,
 पोइ, कुल्हा, सथरूं ऐं सरीर जा बिया अंग, तिनि में, चंबा विझी,
 सुजियल ऐं धप वारे मास जा चाणा खुरिड़े वियो गिरिकाईंदो।
 पलीत प्रीत! चौफेर निहारे, डुंद डेखारे, धीमे धीमे,
 पंहिंजीअ गोदि ते धरियल लोथ जे हडुनि तां, संधनि तां,
 रहियो खुहियो बि खुरिड़े, वाछुनि खां लाइ वहाए,
 गिरिकाए पियो, गरियलु मास! छी, छी!”

(ज) अद्भुत रस (Marvellous)-

“कहिड़े न विचित्र सरूपी! सुख महा जोति!
 अचंब प्रतापी! अकथ अकारी! हहिड़ी उते सुंदर नारी!
 आहा! कंहिं डिठी? कंहिं बुधी?”

(झ) हास्य रस (Comic)-

“कहिडी करे कोठियांसि?

इहो शोक न अथमि त मुठियूं ठोकियाईमि;

इहो बि शोक न अथमि त नक ते ठोकियाईमि;

ऐं इहो बि शोक न अथमि त भेड़े भरि करे ठोकियाईमि;

पर, कहिडी करे कोठियांसि? गंदे पाणीअ में बुडल मुठियूं!

वरी थी बोक छडे त ‘अंभ्रत बुरिकियो थी मांइ!’

मथां वरी कुछु इएं पेई मथे, ज़णु त मंत्र उचारे मोक्ष थी अरपियुमि!

इएं पिए रत रुनो विष्णूअ शर्मा!”

(ज) शांत रस (Quietistic)-

“हाणि असीं फल फूल पंहिंजो आहारु करियूं,

चश्मनि जो ऊजल जल पीयूं;

वण छलक वस्त्र पहिरियूं, भूइं ते ई विश्राम करियूं;

फूलनि खे के पहणनि जे ढेर खे सेज समुझूं;

हाणि असां काणि न भाउ न भ्राता, बिना तुंहिंजे ओ शिव शम्भू!”

पढ़ंदड़नि खे असुल विसारण न घुरिजे त रचना में आनंद मंझिसि समायल भाव ऐं रस सबब आहे ऐं भाव रस रहित रचना खे अलंकार शोभनीक बणाए कीन सघंदा। ध्वनिय सम्प्रदाय जे स्थापन कंदड़ आनंद वर्धन पाण बि हिन सिलसिले में चयो आहे त-

‘तथाह अचेतनम शिव शरीरम कण्डला दीपेतम्ब न भात अलंकारीस्या भावातः’

याने त जीअं साह बिना जिस्म खे कण्डल (हार) वगैरह का बि शोभा न डेई सघंदा, सागीअ रीति रस रहित काव्य मंझि अलंकार निर अर्थिक, बे माना भासंदा। आचार्य ममट जो डिठल बियो हिकिड़ो उदाहरण जेको अलंकार रहित आहे त बि रस भरियो आहे ऐं जेको अनेक विद्वाननि दुहिरायो आहे, उहो हिन रीति आहे-

“हीउ मुंहिंजो पति देवता, आहे त अजु बि तहिडो ई,
 जहिडो हो तंहिं राति, जड्हिं अची कंथारपन चवाईमि।
 हीउ रातियूं चेट जूं, डिसिजनि त सागियूं ई महा सुंदर थियूं।
 कादम्ब-कुंज पार खां, मालती फलनि जी सुगंधि सां भरपूर
 हीअ जा लग्गे थी हीर, सा बि त आहे सागी।
 ऐं मां बि त जहिडी हुयसि अगु, तहिडी ई आहियां अजु।
 त बि थो जीउ तडफाएमि त रीवा किनारे वारनि
 लंबू कुंजनि मंझि वजां,
 ऐं उति वजी के प्रेम अलोलियूं करियां।
 पर, कंहिं सां?”

5. अलंकारनि जा वर्ग- वामन आचार्य पंहिंजे ग्रंथ ‘काव्य अलंकार श्रोताणी’ मंझि अलंकारनि खे बिनि वर्गनि, शब्द अलंकार ऐं अर्थ अलंकारनि मंझि विरिहायो। पोइ वारनि विद्वाननि 3 वर्ग काइमु कया आहिनि- शब्द अलंकार, अर्थ अलंकार ऐं उभय अलंकार (Common)। हिन गंज में छहनि शब्द अलंकारनि ऐं नवनि अर्थ अलंकारनि जी समझाणी डेई, कुझु वधीक अलंकारनि जी यादाश्त डिजे थी। वधीक अभ्यास लाइ अंत में डिनल सहायक पुस्तक सूची कतब अची सघे थी।

6. अनुप्रास शब्द अलंकार- हीउ हेठियनि पंजनि किस्मनि जा आहिनि-

(क) छेक अनुप्रास	Single Alliteration (तजनीस हफ़ी)
(ख) वृत्तिय अनुप्रास	Harmonious Alliteration
(ग) श्रुतिय अनुप्रास	Melodious Alliteration
(घ) लाट अनुप्रास	Tautology Alliteration
(ङ) अनित्य अनुप्रास	Rhyming Alliteration (काफ़ियो)

7. **छेक अनुप्रास-** हिकिड़ीअ तुक या सिट में सागिए हर्फ सां शुरू थींदड़ ब लफ़ज़, तिनि सां जुड़े थो हीउ अनुप्रास। किनि प्राचीन विद्वाननि 'छेक' शब्द जो अर्थु डिनो आहे 'महा कारीगरीअ वारो'। सचु पचु त असांजे शाह जे रसाले में इन्हीअ अनुप्रास जो इस्तेमालु वडीअ कारीगरीअ सां कयलु आहे। उनजा के मिसाल हेठि डिजनि था पर गडोगडु इहो पिण डेखारिजे थो त हरहिक मिसाल मझि कहिड़ो कहिड़ो रस समायल आहे, जीअं इहो पिरूड़े सघिजे त अलंकार कहिड़ीअ रीति रस जा सहायक थी सघनि था-

(क) **विंजोगी श्रृणगार रस ऐं करूण रस-**

“सबुर सीउ पियो, न मूं सवड़ि न गबरो,
न मूं कांध न कूत की जोभनु वही वियो,
तिन्हीं हाल कहो, निधर जिनीं निझरा।”

(ख) **भयानक रस-**

“दहिशत दमु दरियाह में, जिति सटाणा सीसार,
बेहदि बागू बहर में, हैबतनाक हज़ार,
सारियां कान सरीर में, ताक़त तव्हां धार,
साहड़! ज़ाम सतार! सिघो रसिजि सीर में।”

(ग) **करूण रस-**

“हकीक़त हिन हाल जी, जे ज़ाहिरु करियां ज़री,
लगे माठि मिरुनि खे, डूंगर पवनि ड़री,
वजनि वण बुरी, ओभर उभिरे कीनकी।”

(घ) **वीर रस-**

“सूहि! मरीं सोभ खे, त दिलि जा वहम विसारि,
हणु भाला, विदु भाकुरिं, आड़े ढाल में ढारि,
मतां तेग़ तरार, मारि न मतारो थिएं।”

(ङ) शांत रस-

“विचींअ वेठा रहनि, सांझीअ रहनि सुम्ही,
 बुख मरंदे बुखिया, कंहिं खां कीन घुरनि,
 पेट न हेरियाऊं पंहिंजा, चोरीअ साणु चशनि,
 फकी फकीरनि, मागियां पिनी माठि जे।”

8. वृत्य अनुप्रास- हिन अनुप्रास जे समुझण लाइ ऐं पिण चोथें गंज में डिनल किनि विषयनि जे समुझण लाइ इहो जरूरी आहे त असीं वर्ण माला वारनि आवाजनि जो अभ्यासु करियूं। आवाजनि पटांदर, वर्ण माला हेठियुनि वृतियुनि मंझि विरिहाए सधिजे थी। ‘वृति’ माना दशा, हालति। ‘वृति’ शब्द असां वटि ‘मन वृति’ शब्द जो हिसो थी कतब आंदल आहे। वर्ण माला हेठियुनि टिनि वृतियुनि मंझि विरिहायल आहे, जिनि पटांदर टिनि किस्मनि जा वृतीय अनुप्रास समुझाईनि था-

(क) **माधुर्य वृतीय अनुप्रास-** मूरधनी आवाज (Cerebrals) याने ट, ठ, ड, ढ, ण ऐं ङ माधुर्य कीन आहिनि। य, र, ल, व जा सिरांत याने मुतहरक (Accented) आवाज बि माधुर्य कीन आहिनि। दत (Diphthongs) ऐं लम्बा संयुक्त वर्ण याने डिघा मरकब (Conjuncts) बि माधुर्य कीन आहिनि। इहे छडे, बिया सभु वर्ण माधुर्य चइजनि। उन्हनि मां हिक हिक या बिनि बिनि जो अनुप्रास ‘माधुर्य वृतिय अनुप्रास’ चइजे थो, मिसला ‘मूमल खे मिजाज जा, अखियुनि में अलमास (‘म’ जो माधुर्य वृतिय अनुप्रास)।

इहो याद करे छडिण घुरिजेऊं त नासिकी आवाज (Nasals) सवाइ ‘ण’ जे, माधुर्य वृतिय अनुप्रास श्रृणगार, करूण ऐं हास्य रस लाइ उचित आहे।

(ख) **ओजस वृतिय अनुप्रास-** मूरधनी आवाजनि जा अनुप्रास ऐं डिघनि मरकब हर्फनि जा अनुप्रास ओजस वृतिय अनुप्रास सडिजनि, जीअं त ‘कन कट कापट कापडी, कन वढिया कनि ढार’, ऐं जहिं तुक में ट ऐं ढ जो

अनुप्रास ओजस वृत्तिय अनुप्रास आहे। 'ड' बि ओजसी वर्ण आहे। हीउ अनुप्रास रूद्र, वीर ऐं भयानक रसनि लाइ उचित आहे।

(ग) कोमल वृत्तिय अनुप्रास- य, र, ल, व, स जा आवाज ऐं नंदा संयुक्त वर्ण, तिनि जो अनुप्रास कोमल वृत्तिय अनुप्रास आहे। जीअं त- 'सिक सिकाए सिक, सिक न आहे सथिडी।' हीउ अनुप्रास शांत, अद्भुत ऐं भीभत्स रसनि लाइ उचित आहे।

१. श्रुतिय अनुप्रास- हिन अनुप्रास समुझाइण लाइ वर्ण माला जो कुझु वधीक अभ्यासु करणु ज़रूरी आहे। हर्फनि जा आवाज वात जे जुदा जुदा भाडनि जे मदद सां जुड़नि था। सज़ी वर्ण माला जा वर्ण हेठिएं मूजिबु आहिनि-

क वर्ग- क, ख, ग, घ, ङ, ग़, ख़। इहे व्यंजन (Consonants) ऐं ब सुर अ, आ, कनंत (Gutturals) आहिनि।

च वर्ग- च, छ, ज, झ, ञ, छ़। इहे व्यंजन ऐं ब सुर इ ऐं ई तानवी (Palatals) आवाज आहिनि।

थ वर्ग- ट, ठ, ड, ढ, ण ऐं ड, मूरधनी (Cerebrals) आहिनि। ड बि हिननि सां गडु शुमारिजे।

त वर्ग- त, थ, द, ध, न, दंत्य (Dentals) आहिनि। ल ऐं स बि दंत्य आहिनि।

प वर्ग- प, फ, ब, भ, म, ब, फ़, ओशिनी (Labials) आहिनि। उ ऐं ऊ बि ओशिनी आवाज आहिनि।

बाक्की आवाज- ओ ऐं औ कंठ ओशिनी। याने त (Gutturo Labials) आहिनि।

ए, ऐ ऐं य कंठ तानवी (Gutturo-Palatal) आहिनि। 'व' दंत ओशिनी (Dento Labial) आहे।

पंजनि ई वर्गनि जो पंजों पंजों वर्ण, याने ग, ज, ण, न ऐं म नासिकी व्यंजन आहिनि (Nasals)। पंजनि ई वर्गनि में ब्रियो वर्ण पहिरिएं जो उपसर्ग (Aspirate) आहे चोथों वर्ण टिएं जो उपसर्ग आहे।

श ऐं स 'ओहम' वर्ण (Sibilants) सडिबा आहिनि। 'ह' वर्ग (Aspirate) आहे।

श्रुतिय अनुप्रास तड्हिं थो जुडी सघे, जड्हिं अनुप्रास मुख जे फ़क़ति हिक हंथां उचारियल आवाज़नि खे सागीअ तुक में कतब आणजे थो। मिसला-

तुंहिंजो दर्सन, निस दिन दाता दिलि में धारियो अथमि धणी!

(त वर्ग जो श्रुतिय अनुप्रास)।

पारब्रह्म प्रभ भगुतनि भगुवन!

मां बार बार पेरनि जे पिणे। (प वर्ग जो श्रुतिय अनुप्रास)।

10. लाट अनुप्रास- हीउ अनुप्रास प्राचीन भारत जे 'लाट देश' याने हाणोके अहमदाबाद ऐं भरूच तरफ़ वारनि जो अनुप्रास चयल आहे। किनि अंग्रेज़ी तर्जुमाउनि 'लाट' लाइ ब्रियो अखरु 'लाड़' बुधायो आहे। हिन अनुप्रास समुझण लाइ हेठियों हिंदी मिसाल डिजे थो-

‘तीरथ ब्रत साधन कहा, जो निस दिन हरगान,

तीरथ ब्रत साधन कहा, बिन निस दिन हरगान।’

पहिरीं तुक में 'तीरथ ब्रत साधन कहा' जो अर्थु आहे त जेको निस दिन हरीअ जा गुण गाए थो, तंहिं खे तीर्थनि, ब्रतनि ऐं साधननि जी ज़रूरत ई कान आहे। पर बीअ तुक में सागियनि लफ़ज़नि जो अर्थु थिए थो त जेको रात डींहं हरीअ जा गुण गाईदे तीर्थ, ब्रत ऐं साधन करे थो, तंहिंजा उहे तीर्थ, ब्रत ऐं साधन अजाया आहिनि।

किनि विद्वाननि लाट अनुप्रास अहिडीअ रचना खे बि कोठियो आहे, जहिं में सागियो हर्फ़ न पर सागियो शब्द दुहिरायल हुजे या सागियो वाक्य दुहिरायल हुजे। जीअं त 'उठ वेरी, ओनार वेरी, वेरी थियडमि डेरा।'

11. अनित्य अनुप्रास (Rhyming)– हिन अनुप्रास जो वास्तो छंद रचना सां आहे, तंहिं करे उनजो वर्णन पंजें गंज में कयो वेंदो।

12. यमक– शब्द अलंकार या ईहाम या तजनीस ताम (Pun)।

रचना जा के शब्द लिखण या गाल्हाइण में सागिए आवाज जा लगनि पर अर्थु अलगि अलगि हुजेनि, उते यमक अलंकार कतब आंदल चइबो आहे। जीअं त–

(क) वर में कोन्हें वरु, डेरपि वरु वडो कयो।

(ख) जतन कजि जतन जो, आया के ईदा।

13. विक्रोक्त– तजनीस मरकब (Equivoque) किनि हिंदी व्याकरणनि में Equivogue बदिरां चयल आहे Crooked Speech. हेठियनि मिसालनि जरिये हीउ अलंकार ऐं यमक खां संदसि भेद समुझी सघिजे थो–

(क) साहड़ मीर समीअ! सा हड़ छड़े साह जी।

(साहड़ = मेहार, सा हड़ = उहा गुंढि)।

(ख) भला बेडी तुहिंजी छुहे आसमान (असामान = आकास)

चढ़नि मथिसि हैदर मिसलि आस मान (आस मान = उमीद सां)

हीअ सच नूह जे कशतीअ जे आ समान।

(आ समान = जहिडी आहि)

शब्दनि जा पद भजणु, या चवंदडु पाण या बुधंदडु बियो बियो अर्थु कढी सघे, तंहिं खे विक्रोक्त अलंकार कोठियल आहे। अलंकार शास्त्र में हिन अलंकार जा अनेक भेद समुझायल आहिनि।

14. श्लेष (Paronomasia)– श्लेष बिनि किस्मनि जो थिए थो– हिकिडो शब्द श्लेष ऐं बियो अर्थ श्लेष। शब्द श्लेष उहो अलंकार आहे, जिते रचींदड़ को अहिडो शब्द कतब आणे, जहिंजा हुजनि बराबर ब अर्थ पर रचींदड़ जी मुराद फ़क़ति हिकिडे अर्थ ज़ाहिर करण जी हुजे ऐं बियो अर्थ उते नामुमकिन हुजे। मिसला–

(क) रावन-सर-सरोज-बनचारी

चार रघुवीर सुलेमुख धारी। (तुलसीदास)

याने त रावण जे सिर ते पग अहिडी बधल हुई, जणु त को बन आहे, जौहं मझि को कंवल गुल आहे। रामचंद्र पहिंजी तीर मझिसि टुंबण लगो, चिटण लगो। 'सुलेमुख' शब्द जूं ब मानाऊं आहिनि- हिकिडी तीर ऐं बी भंवर। हिते अर्थ सिर्फ तीर ते थी सघे थो ऐं न भंवर।

(ख) रहिमान पानी राखिए, बिन पानी सब सून;

पानी गए न ऊबरै, मोती, मानुस, चून। (रहिमान)

टींअं तुक में पाणीअ जा 3 अर्थ थी सघनि था-

1. मणिया या तजलो (मोतीअ में)

2. मर्यादा (इंसान में)

3. जल (चूने = Lime में)।

15. भाषा समक- (तखमीन) रचना जी भाषा हिकिडी हुजे पर मझिसि बीअ कौहिं भाषा जा के लफ़्ज़ या जुमिला डिनल हुजनि, तौहिंखे चइजे थो 'भाषा समक' अलंकार। मिसाल-

(क) बरखेज! बदह साकी! प्यार के पिरीं। (शाह)

(ख) शबां हिजर दराज चून जुल्फ़,
व रोजु मिलत चून उमिरि कोताहु,
सखी! पिया को जो मैं न देखूं,
तो कैसे कटूं अंधेरी रात? (खुसरो)

(ग) जा दिन ते जमना तट,
वांह बजावत बांसुरी नेघर निहारो,
होशम रफ़ता न मांद बदसितम,
भरोस रहै दिन रैन तुम्हारो। (हाफ़िज़)

16. पहेली या मैमा (Enigma)- संस्कृत ऐं हिंदीअ में चवनिस 'प्रहलीका'। विश्वनाथ पंहिंजे ग्रंथ 'साहित्य दर्पण' में चयो आहे त प्रहलीका रस जे विरुद्ध आहे, तंहिं सबबि काव्य अलंकार सडिजण जे लाइकु ई न आहे ऐं "उहा अहिडी रदी बेकार आहे, जहिडो इंसान जे जिस्म ते कुबु" (Hump)। हेठीं मैमा सिंधु पाकिस्तान जे कंहिं ताजीअ मैगुज्ज मां वरितल बराबर इऐं निंदण लाइकु आहे-

“लडे लडे लडण जाओ, तंहिं में जाई माणसि,
माणसि मथो कूड़ायो त पैदा थियो पिणसि!”

(कंवल गुल, पबिणी, लोदु)

पर अमीर खुसरे जूं हेठियूं पहेलियूं आँला दर्जे जा मिसाल, हास्य रस जा आहिनि त अद्भुत रस जा बि आहिनि-

1. देखी एक अनोखी नाड़ी, गुण उत्तम इक सब से भारी,
पढ़े नहीं यह अचिरज आवे, मरना जीना तुर्त बतावे।

(नाड़ी = Pulse)

2. एक थाल मोती से भरा, सब के ऊपर ऊंध धरा,
चारों ओर वो थाल्ही फिरे, मोती उससे एक न गिरे।

(आसमान तारनि समेति)

17. उपमा- (अर्थ अलंकार) = तशबीह (Simile)

अर्थ अलंकारनि में उपमा मुख्य अलंकार आहे ऐं सभिनी अलंकारनि जी राणी कोठियल आहे।

(क) **पूर्ण उपमा (Complete Simile)-** हरकंहिं पूर्ण उपमा में 4 अंग थियनि। मिसला “मोहिनीअ जो नकु अहिडो डिघो आहे, जहिडी अम्ब जी फार।” हिक वाक्य याने जुमिले में हेठियां 4 अंग उज्जिवा आहिनि-

1. मोहिनीअ जो नकु- इहो आहे 'उपमीय' = मशबह
(Thing Compared)
2. अम्ब जी फार- इहो आहे 'उपमान' = मशब बह
(Thing Compared to)
3. डेघि- इहो आहे 'धर्म' = वझु तशबीह
(Common Attribute)
4. अहिडो, जहिडो- इहे आहिनि 'वाचक शब्द' = हर्फ तशबीह
(Comparing Prepositions)

जीअं मथियनि मिसालनि में पधिरा आहे, तीअं उपमा अलंकार में उपमान जो गुण उपमीय जे भेटियल गुण खां बहितरु हुअणु ज़रूरी आहे। अपमान जी डेघि सबबि ई उपमीय जी डेघि खे पडायल आहे- इहो आहे उपमा जो ख़ासि गुण। हीउ अलंकार वेदन जे समें खां वठी भारत जे कविताउनि में कतब आयल आहे। जीअं त-

1. “विष्णू भगुवान तुंहिंजो सरीर सरोज समान पतलो, तुंहिंजा नेण जहिडा ताजा गाडहा फूल, खीर सागर समान निर्मल तुंहिंजी आकासी सेज, तूं पंहिंजे चरननि जे पिणीअ समान मूं अपवित्र खे पवित्र करि।”

2. “सीता जे पेरनि मथां पियल घुंघरू, तिनि जो आवाजु अहिडो कशिशी हुओ, जहिडा काम देव जा नगरा।”

3. “उपमा (अलंकार) हिक नृतणीअ जियां पेई अलगि अलगि वेस ओढे।”

(ख) **लिप्त उपमा (Elliptical Simile)**- को बि कवी जे उमंगुनि जे मव में पइजी, उपमा जो को अंगु या संदसि के अंग छडे थो डिए त अहिडी उपमा कोठिजे थी 'लिप्त उपमा', पर लिप्त उपमा पिण अहिडी वणंदड

लगी सघे थी, जहिड़ी पूरण उपमा। राजांक ममट पंहिंजे काव्य प्रकाश में
19 किस्मनि जूं लिप्त उपमाऊं वर्णन कयूं आहिनि, जिनि मां के हिन रीति
आहिनि- वाचक लिप्त, धर्म लिप्त, उपमा लिप्त, उपमीय लिप्त, धर्म उपमा
लिप्त वगैरह।

(ख) **उपमा जा बिया भेद**- अलंकार शास्त्र में बुधायल त अनेक
भेद आहिनि, पर मंझांउनि हेठियां मुख्य आहिनि-

1. **माल्ह उपमा** (String of Similes)- जिते हिकिड़े उपमय जी सागिए
वाक्य में हिक खां वधीक उपमाउनि सां भेट कयल हुजे।

2. **अननव्य** (Self Comparison)- मिसला “चंड जहिड़ो चंडु, अछो
बि दागी बि।”

3. **उपमेय उपमा** (Reciprocal Simile)- जिते सागिए वाक्य में उपमेय
ऐं उपमा जी मटा सटा कयल हुजे। जीअं त-

“जे रीमा चंड जहिड़ी सुहिणी आहे त चंडु बि रीमा जहिड़ो ई सुंदरु
आहे।”

18. रूपक- इस्तआरो (Metaphor) वाक्य में ‘वाचक’ ऐं धर्म न फ़क़ति
लिप्त हुजनि पर पधिरा ई लिकल, हुजनि ई कीन; रुगे भेट कयल कान
हुजे, हिक जहिड़ाई डेखारियल हुजे, को वेछो ई कीन हुजे, को संधो सेड़हो
ई कीन हुजे, उते जोड़ियलु हूंदो आहे ‘रूपक’ अलंकार। जीअं त-

(क) “माणिक मट संदोमि, ऊंदाहीअ में सोझिरो।” (शाह)

(ख) “चश्म पलथी बाज तुंहिंजा, हथ खंयो भाला भरनि,
चूर था कनि चित चरियनि जा, चुस्त चायो चालियूं।”

(गुल)

(हिन रूपक में पधिरा श्रृणगार रस आहे)।

(ग) “डिसु अदा! ऐ अची करि ही नज़ारो,
आहि नेणनि जी बि फ़र्हत ऐं उजारो,
था खणनि पर्दो मलांक आसमानी,
साणु फ़रमूदे धणी ताला हक़ाली।”
(हिन ‘सुबूह जो नज़ारो’ वारे शइर में अद्भुत रस आहे)।

19. बिया रूपक अलंकार– अलंकार शास्त्र में रूपकनि जा बि कई किस्म समुझायल आहिनि। जीअं त–

(क) **माल्ह रूपक** (Garland of Metaphor)

(ख) **तदरूप रूपक** (Partial Metaphor)
मिसला “कृष्णा बियो चंद्रमा आहे।”

(ग) **अभेद रूपक** (All Prevading Metaphor)

(घ) **समासोक्त रूपक** (Modal Metaphor)

20. उत्प्रेक्ष (Poetic Fancy)– कहिं शइ जो बयानु कंदे, कल्पना (Imagination) खां कमु वरितलु हुजे ऐं ख्याली गुण जाहिरु कयल हुजनि, उते उत्प्रेक्ष अलंकार रचियलु हूंदो आहे। जीअं त–

“नाज़ मंझारां निकिरी, जडहिं पिरिं करे थो पंधु,
भूं बण बिस्मल्लाह चई, राह चुमे थी रंद,
उभियूं घणे अदब सीं, हूरूं हैरत हंधि,
साईअ जो सौगंधख साजन सभिनिआं सहिणो।” (शाह)
(हिते श्रृणगार रस सां गडु अद्भुत रस समायल आहे)।

21. संदेह– तजाहिल आरिफ़ (Dubious)– जडहिं का वस्तू डिसी संदसि कहिं गुण ते वेसाहु ई न कयलु हुजे ऐं मन में जेको संदेह उथियलु हुजे, उहो कशिशी शब्दनि में जाहिरु कयलु हुजे, तडहिं हीउ अलंकार जोड़ियलु चइबो आहे। जीअं त–

(क) हूअ गुलाब? न न, ख़ार किथे?

(ख) छा? हिन खे था कोठियो मर्दु?

22. अर्थु श्लेष (Ideal Paronomasia)– शब्द श्लेष जो वर्णन मथे अंक (14) में कयलु आहे। अमीर खुसरो जूँ हेठियूं ‘मकरनियूं’ अर्थ श्लेष जा उमदा मिसाल आहिनि–

(क) सगरी रैन मोहे संग जागा,
भोर भई तब बिछड़न लागा,
उसके बिछड़े फाटत हया,
ऐ सखी! साजन? ना सखी, दीया।
(हया = हियांउ, दीया = डीओ)

(ख) वह आवे तब शादी होई,
उस बिन दूजा और न कोई,
मीठे लागे वाके बोल,
ऐ सखी! साजन? ना सखी ढोल!
(ढोल = ढोलक)

23. अतिशयोक्त– मुबालिगो (Hyperbole). रचना में कहीं शइ बाबति उठाउ या वधाउ कयलु हूंदो आहे, उते हीउ अलंकार जोड़ियल हूंदो आहे। अतिशयोक्त अलंकार जा हेठियां भेद आहिनि–

(क) **भेद-अतिशयोक्त (Distinctive Hyperbole)**– जइहिं कहीं जी साराह कंदे हेठियनि नमूननि जा गुफ़ता कम आंदल हूंदो आहिनि, तइहिं भेद-अतिशयोक्त अलंकार जोड़ियल चइबो आहे–

1. कमला जी सूंहं और आहे।
2. कमला जहिड़ी सूंहं न का ड़िठी, न का बुधी।
3. कमला जी सूंहं न्यारी आहे।

(ख) सम्बन्धित अतिशयोक्त- हीउ टिनि नमूननि जा आहिनि-

1. योग्य में अयोग्यता = मुबालिगो तबलीग

मिसला- “गमजा सवें हजरें, माणा गुणण खूं ब्राहिरि
नितु नूअ लख तिन्हीं जा, नाज नितु न्यारा।” (गुल)
(मुमकिन ऐं मुनासिबु)

2. अयोग्य में योग्यता = मुबालिगो इग़राक़

मिसला- “अगर आन तर्क शेराजी, बदस्त आरद दिल-य मारा,
बख़ाल-य हिंद व यश बख़्शम, समरकंध व बुख़ारा रा।”
(मुमकिन पर गैर मुनासिबु) (हाफ़िज़)

3. अयोग्य = मुबालिगो ग़लो

मिसला- “खणी नेण खुमार मां, जां नाज कयाऊं नज़र,
सूरज शाखूं झुकिरूं, कूमाणो क़मर।” (शाह)
(नामुमकिन)

24. दीपक (Illuminator)- जिते अनेक शयुनि जो हिकु ई ‘धर्म’
डेखारियलु हुजे, उते हीउ अलंकार जोड़ियलु हूंदो आहे। मिसला-

“कंजूसनि जी माया, नांगनि जी फणि,
शींहं जा केश (Mane) ऐं उत्तम कुल वारीअ स्त्रीअ जा गुप्त अड़ह,
या त चारई मरनि पोइ छुही सघिजेनि,
या त जेको छुहणु चाहे
सो अवलि चइनि ई हथां मारिजण लाइ तयारु हुजे।”
(‘साहित्य दर्पण’ मां)

25. व्याज उस्तत = हजिव (Irony)- ब्राहिरिएं नमूने में साराहिणु पर
सचु पचु निंदा करणु, तंहिंखे चइजे व्याज उस्तत। किनि अलंकार शास्त्रनि
में हिनजे उबतडि ‘व्याज निंदा’ अलंकार चयलु आहे। मिसला-

“ऐ महासागर! तुंहिंजी केडी उस्तति गाए केडी गाइजे!
 तू वडो उपकारी कार्य कीन थो करीं जो खिन्न पल में,
 अगोपोइ पहिंजे जल सां,
 कंठ वारीअ वसंड खे पाण अंदरि सांढे थो छडीं?
 ऐं प्राणियुनि समेति?”

26. प्रतीप (Converse)— हीउ अलंकार हिक करी उपमा अलंकार जे विरुद्ध आहे। प्रतीप में उपमीय खे उल्लेख उपमान खां वधीक उत्तम ज्ञाणायल हूंदो आहे। जीअं त- “हुन सुंदरीअ जे चेहरे अगियां चंड खे विसारे छडियो!”

27. ब्रिया अर्थ अलंकार— अलंकार शास्त्रनि में सर्वे अलंकार डिनल आहिनि, जिनि मां किनि जा नाला हेठि डिजनि था-

- (क) व्यत्रेक = (Contrast)
- (ख) दृष्टांत = (Exemplification)
- (ग) सार = (Climax)
- (घ) प्रतसार = (Anti-Climax)
- (ङ) प्रकर = (Insinuation)
- (च) काव्य लिंग = (Poetic Reason)
- (छ) उल्लेख = (Representation)
- (ज) स्मरण = (Reminscene)
- (झ) भावक = (Vision)
- (ञ) अनुमान = (Inference)
- (ट) कारण माल्हा = (String of Causes)
- (ठ) अबहंत = (Concealment)

गंजु चोथों

साहित्य शास्त्र जा सिद्धांत

1. साहित्य- सिंधु में हुआसीं त उते सिख्या हुआसीं अंग्रेजी लफ़्जु Literature ऐं सिंधी लफ़्जु 'अदब'। हिन गंज वारनि विषयनि ते सिंधु में को बि सिंधी किताबु निकितलु कीन हुआ, सवाइ डॉक्टर शेख़ मुहमद इब्राहीम जे किताब नाले 'शइर व शाइरी' जे, जहिं मंझि बि रुग़ो फ़ारसी शाइरी सन्फुनि जो जिकिरु कयलु हो। उते 'साहित्य' बदिरां असीं चवंदा हुआसीं 'साहित'। हिन गंज जहिड़नि पर अंग्रेजी नूअ वारनि विषयनि ते बि पहिरियों सिंधी किताबु जेको निकितो हो, सो हो हिते बम्बईअ में अची लिखियलु किताबु 'अदबी उसूल' प्रोफ़ेसर मंघाराम मलकाणीअ जो। बियुनि भारती बोलियुनि जे किताबनि में निजु भरती विषय, साहित्य जे सिद्धांतनि बनस्वति वर्णन कयल आहिनि, जहिं सबब बिया भारती विद्यार्थी असां खां न फ़क़ति अलगि नमूननि में अभ्यासु कनि था, पर केतिरनि ई अहिड़नि विषयनि खां वाकुफ़ु थियनि था, जेके असां शायदि अगे बुधा बि न हुजनि। 'साहित्य' शब्दु छा आहे, तहिंजी अवलि असांखे पूरी ज़ाण हुआणु अवसि घुरिजे। संस्कृत जे शब्द कोषनि में 'साहित्य' शब्द जी उत्पति डेखारियल आहे 'सहत' शब्द मां, जहिंजो अर्थु आहे 'मेल जोल'। साहित्य में मेल जोल आहे शब्द ऐं अर्थ जो। 'साहित्य' शब्द जो बियो अर्थु आहे- सा = साणु ऐं हित = कल्याण, आनंद मंगल। 'साहित्य' आहे शब्द ऐं अर्थ जो अहिड़ो मेल जोल, जहिं कारण मंझांसि आनंद उत्पन्न थिए। आचार्य कंतक पंहिंजे ग्रंथ नाले 'विक्रोक्त जीवतम' में चयो आहे त-

“शब्दार्थव सहता व्यव प्रतित्व स्फूर्त सदा
सहतावत ताव यव कम पूर्व विधीयेते।”

“साहित्य मुनियो, शोभा शांताम प्रित कापेसौ,
अनेऔ ना नीति कर्तव मनोहारणेव सतत।”

अर्थु त “शब्दु ऐं अर्थु सदाई सहत थी, युक्त थी, मेल जोल करे, उमालक पाण में प्रतीती, ज्ञान, ज्ञाण समाईनि था। इहे बुरई पाण में मिलत थी, हरिको अणपूरो विषय परिपूर्ण कनि था।

साहित्य आहे शब्द ऐं अर्थ जी मनोहर, शोभा वारी, रमणीक स्थिति ऐं रचना काव्य दोषनि खां रहित, छुटल।”

2. काव्य ऐं साहित्य- जहिं विषय खे हाणे ‘साहित्य’ थो कोठिजे, उहा प्राचीन संस्कृत ग्रंथनि में कोठियल आहे ‘काव्य’। आदि खां वठी, पद्य (Verse) तोड़े गद्य (Prose) काव्य जा विभाग ज्ञाणायल आहिनि। भरत मुनीअ पहिंजे नाट्य शास्त्र में टिनि किस्मनि जे काव्य जो वर्णन कयो आहे- पद्य, गद्य ऐं मिश्र याने बुरई गडु। संदसि प्रयोजन खासि तौर नाट्य जे विषयनि मां हो, जिनि में हू बराबर तमामु ऊन्हो वियो पर ‘मिश्र’ खे काव्य जो टियों विभाग ज्ञाणायई छाकाणि त उन वक्त रूपकनि में, पद्य तोड़े गद्य कतब आंदल हूदा हुआ। भरत मुनीअ ऐं पोइ वारनि विद्वाननि जेकी अगे काव्य बनस्वति चयो, उहो अजु समूरे काव्य सां लागू थी सघे थो।

3. साहित्य सिद्धांत- साहित्यिक सिद्धांतनि जो सम्बंध हेठियनि मूल विषयनि सां आहे-

(क) साहित्य जूं जिंसूं, याने पद्य ऐं गद्य रचनाउनि जा किस्म।

(ख) दोष, जेके साहित्यिक रचनाउनि में न हुआणु घुरिजनि।

(ग) गुण ऐं लक्षण, जेके साहित्यिक रचनाउनि में हुआणु जरूरी आहिनि ऐं खासियतूं, जेके साहित्य जी रीति याने इबारत (Style) में हुआणु घुरिजनि।

भारती ग्रंथनि में काव्य जे बारे में जेकी वर्णन थियल आहे, उहो पद्य तोडे गद्य सां, याने त बिन्हीं किस्मनि जे साहित्यिक रचनाउनि सां लागू आहे। हिन गंज में इन्हनि विषयनि जो अभ्यासु साहित्य जे बारे में कयो वजे थो। विषय इहो बि लम्बो आहे, तहिंकरे हिते किनि मूल गाल्हियुनि जो वर्णन ई मुमकिन आहे।

4. भामह ऐं काव्य- भामह पहिरियों विद्वानु हो, जहिं अटिकल छहीं सदीअ धारे पंहिंजे ग्रंथ नाले 'काव्य अलंकार' में काव्य खे तरतीबवारु विरिहायो। याने त-

(क) **रचना-** हिन काव्य रचना, पद्य ऐं गद्य में विरिहाई।

(ख) **भाषाऊं-** 3 काव्य भाषाऊं वर्णन कयाई- संस्कृत, प्राकृत ऐं अपभ्रंश।

(ग) **वस्तू (Subject Matter)-** वस्तूअ पटांदर काव्य खे चइनि वर्गनि में विरिहायाई। याने त-

1. देवनि ऐं देवताउनि जा चरित्र (Known Divine Biologies)
2. उत्पाद्य वस्तू (Original Writings)
3. कलाश्रय वस्तू (Traetises on Fine Arts)
4. शास्त्रिक वस्तू (Laws on Various Subjects) जीअं त काम शास्त्र, अर्थ शास्त्र, नीति शास्त्र वगैरह।

(घ) **स्व रूप (Forms)-** सरूप पटांदर भामह काव्य जा 5 किस्म बुधाया, जे हिन रीति आहिनि-

1. सुख बंध याने महा काव्य (Divine Epics)
2. अभिनय याने (Dramas)
3. आख्यायक (Narrative)
4. कथा (Discussional Narrative, Mostly Divine)
5. बियो छोटकू किस्म।

5. दण्डी- दण्डी आचार्य सतीं सदीअ धारे पंहिंजे ग्रंथ नाले 'काव्य दर्शन' में बियुनि गाल्हियुनि सां गडु हेठियूं गाल्हियूं वर्णन कयूं आहिनि-

(क) पद्य जा किस्म-

1. मुक्तक पद्य याने हिकिडो ई पद, जंहिं में पूरो अर्थु समायल हुजे।
(पद = Stanza)
2. कलक पद्य याने पंजनि पदनि अंदरि समायल अर्थु
3. कोष- वर्ण माला वारा, हरहिक वर्ण पुठियां हिकिडो अर्थु सिलसिले वारु समाए, कोष में सजो विषय समाइणु (Poetic Lexicon).
4. संधान- अलगि अलगि पद्यनि जो कठो कयलु समूह।
5. सर्ग बंध- देवता रूपी महा काव्य।

(ख) गद्य जा किस्म- 1. कथा 2. आखबायका।

(ग) मिश्र (Mixed) काव्य जा किस्म-

दण्डीअ मिश्र काव्य में बुधाया, रूपकनि जी गडियल रचना ऐं चम्पू (Verse Prose), याने जंहिं में वज्ज न हुजे त तुकबंदी न हुजे ऐं तुकबंदी हुजे त वज्ज न हुजे।

6. विश्वनाथ- विश्वनाथ पंहिंजो ग्रंथ नाले 'साहित्य दर्पण' तेरहीं सदीअ धारे रचियो, पर 'साहित्य' नालो तंहिंजो अर्थु सभिनी पिए डिनो आहे Composition ऐं न Literature, छाकाणि त संस्कृत विद्वान मूजिबु साहित्य हुओ काव्य रचनाउनि में शब्द ऐं अर्थ जो पूरो मेल। विश्वनाथ हिन विषय जो कुझु वधीक विस्तार कयो, जंहिं जूं मूल गाल्हियूं हेठि डिजनि थियूं-

(क) काव्य जी व्याख्या (Definition)- विश्वनाथ चयो आहे त-

“रसात्मक वाक्य (रचना) आहे काव्य, दोष काव्य जा अभाव आहिनि, रस जा विनाशी आहिनि; रसात्मक काव्य खे गुण (Excellences), लक्षण (अलंकार वगैरह) ऐं रीति (Style) वधीक उत्तम बणाईनि था।”

हीअ व्याख्या अजु असीं समूरीअ साहित्य रचना सां लागू करे सघूं था, छाकाणि त अजु काव्य खे साहित्य जो हिसो करे लेखियो थो वजे।

(ख) **पद्य काव्य जा किस्म**– विश्वनाथ काव्य दृश्य ऐं श्रव्य विभागनि में विरिहाए दृश्य काव्य खे ड़हनि रूपकनि में 18 उप रूपकनि में विरिहायो। 10 रूपक सागिया भरत मुनीअ वारा बुधायार्ई, जेके हिन किताब जे पहिरिएं गंज में समुझायल आहिनि। श्रव्य काव्य जा हिन हेठियां 10 किस्म ठहिराया–

1. मुक्तक 2. युगमक (2 पद) 3. संदांतिक (3 पद) 4. कलापिक (4 पद) 5. कलक (5 पद) 6. महा काव्य (Epic) 7. कथा काव्य (Story Poem) 8. खण्ड काव्य (Short Poem) 9. कोष 10. वृजिया (Stray Poems).

(ग) **गद्य काव्य जा किस्म**– विश्वनाथ गद्य काव्य जा 8 किस्म बुधाय, जे हिन रीति आहिनि–

1. **मुक्तक गद्य (Free Prose)**– जहिं में वज़न ऐं काफ़ियो न हुजनि, जुमिला वर्णदंड हुजनि, संयुक्त व्यंजन (Compound Consonants) कतब आंदल न हुजनि। फ़ारसीअ में मुक्तक गद्य लाइ चवनि ‘आरी नसुर’।

2. **वृत गंध गद्य**– फ़ारसीअ में चवनिस ‘मुसजा नसुर’ ऐं ‘मुरजज़ नसुर’। पहिरिएं किस्म जे वृत गंध में वज़न न हुजे पर काफ़ियो हुजे ऐं बिए नमूने में वज़न हुजे पर काफ़ियो न हुजे।

3. **उत्कलिका प्राय गद्य**– जेको गद्य उत्कल निवासियुनि मंझि चालू हो। उत्कल हाणोके ओड़ीसा जो नालो हो। उन्हीअ गद्य मंझि लम्बा जुमिला, वडा लफ़ज़, संजोगी वर्ण, सभु घणा हुजनि।

4. **चौरणक गद्य**– गद्य, जहिं मंझि नंदा नंदा जुमिला, मिठा ऐं वर्णदंड शब्द ऐं भाव पूर्वक वीचार जाहिरु कयल हुजनि।

5. **कथा (कहाणी)**– विश्वनाथ जो चवणु आहे त कथा जो गद्य किथे किथे वृत हूंदो त कथा बुधंदडनि खे मंझांडसि घणो रस ईंदो। कथा जे आरम्भ में कंहिं देवता जी उस्तति चयल हुजे, जंहिं चवदे मनुष जे कुल लछणनि जो बि वर्णन कयलु हुजे।

6. **आख्यायका (Narrative)**– हीउ बि कथा जो हिकु रूपु आहे, जंहिं में कवी पंहिंजे कुल जो वर्णन करे ऐं बियनि उत्तम कवियुनि जे कुल नस्ल जो वर्णन करे। आरम्भ में कवी आख्यायका जो तात्पर्यु बुधाए छडे। दणडीअ जो चवणु हो त आख्यायका आतम कथा हुआणु घुरिजे पर विश्वनाथ चयो त उहा या आतम कथा या कथा हुजे।

7. **आख्यान (Narrative)**– पुस्तक, जंहिं में यकी आख्यायका या कथा न हुजे पर नंढियूं नंढियूं कहाणियूं हुजनि, तंहिंखे विश्वनाथ ‘आख्यान’ कोठियो आहे ऐं मिसाल ‘पंच तंत्र’ जो डिनो अथसि।

8. **वरौद गद्य**– कसीदो, जंहिं में कंहिं राजा जी साराह कयल हुजे, पर फ़ारसी कसीदो थिए पद्य में; वरौद पद्य में हुजे तोड़े गद्य में।

(घ) **चम्पू (Mixture)**– आम तौर चम्पू अहिडी रचना खे कोठियल आहे, जंहिं मंझि पद्य ऐं गद्य गडियल हुजनि पर विश्वनाथ अहिडीअ रचना खे बि चम्पू कोठियो आहे, जंहिं में घणियूं भाषाऊं गडियल हुजनि।

7. **पश्चिमी धाराऊं**– यूनानी, रोमी ऐं बियुनि पश्चिमी धाराऊनि जो असर भारती साहित्य सिद्धांतनि ते पियो, जहिडीअ रीति भारती काव्य शास्त्र जो असर पश्चिमी देसन डे बि पखिडियलु हुआ। ‘साहित्य’ जे इए पूरबी ऐं पश्चिमी धाराऊनि जो मेल जोल बि करे लेखिजे त अहिडीअ रीति भारती काव्य बिनि मूल वर्गनि में विरहायलु आहे–

(क) **विषयी गति काव्य (Subjective Poetry)**– विषयी गति काव्य में हेठियां नमूना अचनि था–

1. दार्शनिक ऐं वीचार आत्मिक गीत
(Meditative & Philosophic Lyrics)
2. सम्बोधन गीत (Odes)
3. पत्र गीत (Epistles)
4. व्यंग्य गीत (Satires)
5. वर्णनात्मक गीत (Descriptive Pomes)
6. दुखात्मक गीत (Elegy)

(ख) विषय गति काव्य (Objective Poetry)-

1. वर्णनात्मक काव्य (Narrative Poetry)-

1. वीर गीत (Ballad)
2. महा काव्य (Epic)
3. छंद में रोमांचकारी कथा (Metrical Romance)
4. यथार्थवादी कविताऊं (Realism in Poetry)

2. नाट्य काव्य-

1. नाट्य गीत (Dramatic Lyrics)
2. नाट्य कथा (Dramatic Story)
3. नाट्य स्वगत (Dramatic Soliloquy or Monologue)

8. हिन्दी साहित्य में चालू काव्य भेद- हिकिड़ी विरिहास्त, जेका हिन्दी साहित्य में कबूलु पियल आहे, सा आहे काव्य खे पाठ्य (Readable) ऐं परीक्ष्य (Audio-Visual), इन्हनि खे बिनि वर्गनि में विरिहाए, पाठ्य काव्य खे पद्य ऐं गद्य में विरिहाए, पद्य ऐं गद्य जा नमूना वर्णन करणु। पद्य खे पोइ टिनि मूल किस्मनि में विरिहायो अथनि याने त गीत काव्य, खणड काव्य ऐं महा काव्य। गीत काव्य ऐं खणड काव्य खे वरी अलगि अलगि विषयनि पटांदर विरिहायल आहे, जिनि जो कुझु वर्णन अणे ई कयलु आहे।

9. हिन्दी साहित्य में चालू गद्य भेद-

1. उपन्यास (Novel)
2. कहाणी (Story)
3. गद्य कविता (Prose Poem)
4. निबन्ध (Essay)
5. आलोचनात्मक निबन्ध (Critical Essay)
6. स्मरणात्मक निबन्ध (Declaratory Essay)
7. ग्रंथ आलोचना (Critical Review)
8. जीवनी (Biography)
9. आत्म कथा (Autobiography)
10. रेखा चित्र (Outlines or Sketches)
11. संस्मरण (Reminiscences)
12. पत्र एवं पत्रिकाएँ (Letters & Papers)
13. रेडियो भाषण
14. रिपोर्ट
15. बिया मुख्तलिफ़ किस्म

10. निबन्ध जा भेद-

1. वाद विवादी (Argumentative)
2. वर्णनात्मक (Descriptive)
3. व्याख्यानात्मक (Expository)
4. कथात्मक या आख्यानात्मक (Narrative Essay)
5. चिंतनात्मक (Reflective)

11. उपन्यास जा भेद-

1. चरित्र प्रधान उपन्यास (Novel of Character)
2. कथा प्रधान (Novel of Incident)
3. भाव प्रधान (Novel of Passion)
4. उपदेशक (Didactic Novel)
5. प्राकृत वादी (Naturalistic Novel)
6. साहसिक (Picaresque Novel or Adventurous Novel)
7. स्वच्छंद प्रधान (Romantic Novel)

12. कहाणीअ जा भेद-

1. काव्य प्रधान कहाणी (Action)
2. साहसिक प्रधान (Adventurous)
3. वातावरण प्रधान (Atmosphere)
4. चरित्र प्रधान (Character)
5. भेद या कहाणी (Detective)
6. रहस्य कहाणी (Mystery)
7. अद्भुत कहाणी (Fantastic)
8. प्रकृतवादी कहाणी (Naturalistic)
9. कथा या वस्तु प्रधान कहाणी (Plot Story)
10. अति प्रकृत प्रधान कहाणी (Supernatural)

13. रचना जा दोष- मथे डिनल अंक (3) में बुधायलु आहे त साहित्य सिद्धांतनि जो सम्बंध टिनि मूल विषयनि सां आहे। मंझांउनि पहिरिएं विषय ते, अंक (4) खां वठी अंक (12) ताई उन्हनि मंझि काफ़ी रोशिनी विधी वेई आहे ऐं बुधायो वियो आहे त पद्य ऐं गद्य रचनाउनि जा कहिड़ा कहिड़ा किस्म आहिनि। अंक (6) में, विश्वनाथ जेका काव्य जी व्याख्या डिनी हुई, उहा पेशि कयल आहे। हिन किताब में वर वर ड़ेई इहो दुहिरायो वियो आहे त काव्य जी सर्व उत्तमता जो मुख्य मदरु रस सामग्रीअ ते आहे। इहो दुहिराउ समूरियुनि साहितक रचनाउनि सां लागू आहे। छो त प्राचीन विद्वाननि काव्य खे हाणोके साहित्य समान ई लेखियो हो। विश्वनाथ मथे ज़िकिरु कयल व्याख्या में साफ़ चयो आहे त रसात्मक वाक्य आहे काव्य, पर उते जो उते इहो बि चयो अथसि त “दोष काव्य जा अभाव आहिनि”। संदसि इहो चवणु हर किस्म जी रचना सां लागू आहे। रसात्मक काव्य में जे दोष हूँदा त सुभावीक रस मेटिजी वेंदो, जहिं सबब उहा रचना, जहिं खे काव्य थे सडिण चाहियोसीं, सा काव्य मूरु न थींदी। बियनि शब्दनि में, रचना में जे दोष आहिनि त उहा रचना साहितिक रचना जो दर्जो पाए कीन सघंदी। साहितिक रचनाउनि में इबारत जो, रीति जो, (Style) जो ओनो रखिणो आहे त दोषनि खां अवसि किनारो करिणो आहे। समालोचना कंदडनि लाइ इहे विषय ऐं सिद्धांत ज़रूरी सामग्री आहिनि। रचना जा दोष टिनि वर्गनि में विरिहायल आहिनि ऐं टेई हेठि डिजनि था। इहो ध्यान में रखणु घुरिजे त भारती विद्वाननि बिनि हज़ार वरिह्यनि खां हीउ विषय दुहिराईदा आया आहिनि। बियुनि बोलियुनि वारनि खे इन्हनि विषयनि जे अभ्यास जा वसीला मुयसर आहिनि पर असीं सिंधी हेल ताई खांउनि महरूम रहिया आहियूं-

(क) शब्द दोष = लफ्जी सिकम (Defective Words)

1. श्रुतकठ = कठोर आवाजी (Harsh)
2. नीति संसार या असाध = ग़लती (Incorrectness)
3. अप्रयुक्त या प्रबुंधहत = ग़ैर वाजिब (Unconventional)
4. असमर्थ अर्थ या कम मानाऊं (Incapable of Giving Sense)
5. गुप्त अर्थ = मुबहम मानाऊं (Suppressed Meaning)
6. अनुचित अर्थ = नाजाइजु मितलबु (Improper Signification)
7. अधिक पद = फ़िज़ूल लफ़ज़ (Redundancy)
8. अवाचक शब्द = अकह लफ़ज़ (Intexpressive)
9. अश्लील = नाशाइतो (Improper)
10. संदिग्ध, द्विअर्थी = ब्र मानाऊं (Ambiguous)
11. अप्रतीत = न समुझण जहिड़ो (Unintelligible)
12. ग्राम्य = झंगली (Uncouth, Vulgar)
13. अनुमत अर्थ = अंदाज़न माना (Guessing Sense)
14. कलष्ट = अण चिटो (Obscure)
15. विरोध मतिकार = नामुवाफ़िक् मितलबु (Repugnant)

(ख) वाक्य दोष (Defective Sentences)-

काव्य दोषनि जे विषय अंदरि शब्द दोषनि सां गडु वाक्य दोषनि जो बि ज़िकिरु कयलु आहे। वाक्य दोष मुख्य तरह ही आहिन-

1. प्रतिकूल वर्ण = नासाज हफ़ी जुमिलो (Discordance of Words)
2. वसुंध = कठोर आवाजी (Cacophonous)
3. वृत्तहत = बदि बहर (Marred Metre)
4. न्यूनपद = शब्द कसो = अखर ऊणो (Deficient in Words)

5. अधिक पद = फ़िज़ूल लफ़्ज़ी (Redundant Words)
6. कथित पद = लफ़्ज़ दुहिराउ (Repeated Words)
7. समाप्त पुराक्त = ख़तम जारी करणु (Resuming the Concluded)
8. अभवमत योग = ग़ैर तालुक़ मतलूब
(Devoid of Intended Connection)
9. अनहित्य वाच्य = ग़ैर तालुक़ मजबूर
(Devoid of Necessary Connection)
10. अस्थानस्थ पद = बेजा लफ़्ज़ (Misplaced Words)
11. संकीर्ण वाक्य = मुँझियलु जुमिलो-उलट पुलट
(Confused Sentence)
12. गर्भत्व वाक्य = मुतरफ़ जुमिलो (Parenthetical Expression)
13. प्रसिद्धहित = ग़ैर रस्मी (Opposed to Usage)
14. समता भंग = टुटल यकसानियत (Broken Uniformity)
15. अकर्मता = ग़ैर यकसानियत (Absence of Uniformity)
16. असत् प्रार्थ = नामुनासिबु, बे-माना
(Undesirable Second Meaning)

(ग) **अर्थ दोष** = मानवी सकम (Defective Meaning)

1. अपुष्ट अर्थ = बेतालुक़ माना (Irrelevant)
2. कलष्ट अर्थ = ख़फ़े = दक्कीक़ (Obscure-Abstruse)
3. असम्भव अर्थ = बेजोड़ मतिलबु (Inconsistent)
4. पत्राक्त अर्थ = तहरीर सख़न (Tautophanous)
5. निष्कर्मत = अण कैथो (Irregular)
6. ग्राम्य अर्थ = झंगली मतिलबु (Vulgar Sense)

7. निरहीत = गैर मुंताजी (Inconsequential)
8. प्रसिद्ध विरोधी = गैर मारूफी
(Opposed to Prevailing Notions)
9. संदिग्ध अर्थ = शकी मतिलबु (Dubious Sense)
10. विद्या विरोधी = इल्म इख्तलाफी
(Opposed to Scientific Notion)
11. अनवीकृत = रेंघटी (Monotonous)
12. अनीमी संयम = तमाम नामखसूस (Too Unspecific)
13. संयमी अनेम = तमाम मखसूस (Too Specific)
14. अवशेष विशेषम = बंदीशी (Too Restricted)
15. विशेष अवशेषम = गैर बंदीशी (Too Unrestricted)
16. अपूर्ण = नातमाम = अधूरो (Incomplete)
17. उपदेक्त = बेजोड़ (Misplaced)
18. सहचर भंता = अण ठहिकंदडु (Mismatched)
19. प्रकाशित विरुद्ध = नामुवाफ़िक (Of Repugnant Implication)
20. वद्य युक्त = गैर निस्वती (With Improper Predication)
21. अनुवादयुक्त = गैर अनबुंध (With Improver Adjunct)
22. समाप्त पुनरुक्त = खतम जारी (Resuming the Concluded)
23. अश्लील अर्थ = नाशाइतो अर्थ (Indecorous Sense)

14. दोष जो गुण बणिजणू- आचार्य भोज पंहिंजे ग्रंथ नाले 'सरस्वती कंठाभरण' में, यारहीं सदीअ धारे डेखारियो आहे त किनि हालतुनि हेठि पद दोष बदिलिजी उल्टो रचना जा गुण बणिजी पवनि था। मिसाल हेठि डिजनि था-

दोष जो नालो	दोष जो मतिलबु	कीअं गुण थो बणिजे
1. असाध	व्याकरणी ग़लती	अनुकरण याने अहल कंदे
2. अप्रयुक्त	ग़ैर वाजिबियत	अनुकरण याने अहल कंदे
3. शर्त कट	कननि में ठकाउ छडींदड़ लफ़्ज़	क्रोधी भाषण में
4. प्रसिद्ध हित	ग़ैर वाजिबी अर्थ वारो शब्दु	पहेलियुनि में
5. असमर्थ अर्थ	कम माना वारा लफ़्ज़	शृणगार रस में ओघड़ि न करण लाइ
6. अप्रतीत	न समुझण जहिड़ा लफ़्ज़	विज्ञानी पुरुषनि जी विज्ञानिक गुफ़्तगू
7. कलष्ट	बिया अखर टुम्बे अर्थु ओखो करणु	जाणी वाणी इएं कयलु, पर अगिलो समुझी वजे
8. सँदिग्ध अर्थ	बि मानाआं लफ़्ज़	जिते बियनि जुमिलनि वसीले अर्थु निकिरे
9. ग्राम्य	झंगली	गुफ़्तगू कंदड़, जे बई पाण चाहीनि

15. रचना जा गुण (Excellences of Composition)— ब हज़ार वरिह्य अग्रे, भरत मुनीअ काव्य जा 10 शब्द गुण ऐं 10 अर्थ गुण वर्णन कया। इहो अग्रे ई निर्णय कयलु आहे त भरत मुनि रस सम्प्रदाय जो हर्ता कर्ता करे लेखियो वियो आहे, तँहिंकरे खांडसि पोइ वारनि किनि विद्वाननि, खासि करे आचार्य भामह ऐं राजांक ममट संदसि ड़हनि ड़हनि गुणनि खे घटाए, उहे ई गुण मुकररु कया, जिनि जो सम्बन्ध हर नमूने जी रस सां आहे।

उहे टे गुण आहिनि माधुर्य, ओजस ऐं प्रसाद, जेके हिन किताब जे पहिरिएं गंज जे पहिरिएं ई अंक में समुझायल आहिनि। गंज टिए में, वृत्तिय अनुप्रास अलंकार समुझाईदे, डेखारियल आहे त वर्ण माला जा व्यंजन (Consonants) बि उन्हनि टिनि गुणनि जे आधार ते रचियल आहिनि ऐं उते इहो पिण डेखारियलु आहे त हरहिक गुण वारा व्यंजन, तिनि मां जोड़ियल शब्द लागापियल नमूननि जे रस पैदा करण लाइ मुनासिब ठहिरायल आहिनि। उन्हनि टिन्हीं गुणनि जो जिकिरु अगिते हली वरी बि कयो वेंदो पर हिते इहो ध्यानु में रखी छडिण घुरिजे त इहे टे 'रस गुण' करे बिलाशक लेखिया वजनि, लेकिन भरत मुनीअ जे वर्णन कयल शब्द गुणनि ऐं अर्थ गुणनि खे हर कंहिं रचना जी रीति याने इबारत (Style) जे मदेनजरि अजु बि वड़ी अहमियत आहे, तीहं करे उहे हिते हेठि डिजनि था-

(क) शब्द गुण (Structure of Composition)-

1. **श्लेष** = (Compactness or Density)- श्लेष अलंकार (Paronomasia) खां हीउ अलगि आहे। सागिया सागिया अखर (Syllabics) हिक बिए पोयां गडे, शब्द जोड़णु जेके डिसिजनि सागिया पर सचु पचु हुजनि बिया बिया, उन्हनि शब्दनि जो प्रयोग चइजे थो श्लेष गुण। इबारत लाइ, रीति लाइ, इहो गुणु जरूरी आहे। अखरनि तोड़े शब्दनि जी घिरघिलाई (Looseness) वडो अवगुण आहे।

2. **प्रसाद** = (Concinnity)- हीउ शब्द गुण, रस गुण प्रसाद खां अलहदो आहे। भरत मुनीअ जो चवणु आहे त रचना में जेकडहिं शब्दनि जी घिरघिलाई (शैथल्य) अणटर हुजे त पोइ इहो जरूरी आहे त श्लेष (Compactness) ऐं शैथल्य पाण में तरतीब वार पूतल हुअणु घुरिजनि, याने त अवलि श्लेष, शैथल्य, पोइ वरी श्लेष, पोइ वरी शैथल्य अहिडीअ तरह पूतल शब्दनि खे चइजे थो शब्दनि जो प्रसाद।

3. **समता** = समानता = (Unison or Unity)- इबारत लाइ, रीति लाइ, समता ज़रूरी आहे। एवं न डिसण ऐं चवण में अचणु घुरिजे त सागिए लेखक सागिए ई हंधि पहिंजी इबारत फेरे छडी आहे। लेखक जो कलमु ते जाबितो ज़रूरी आहे। पर लेखक खे इहा पिण खबरदारी करणु घुरिजे त मतां समता जो घणो वीचारु करे रचना मझि अनव्यकृति याने रींघट (Monotony) पैदा करे छडे।

4. **माधुर्य** (Melody)- हीउ गुण पिण 'रस गुण' माधुर्य खां अलहदो आहे। हीउ गुण रीति लाइ, इबारत लाइ हुअणु ज़रूरी आहे, जो आवाजनि जी मधुरता हरकहिं किस्म जे रीति लाइ मुनासिब हालतुनि हेठि ज़रूरी आहे ऐं उहा मधुरता मुनहसर आहे खासि तौर दतनि (Diphthongs) ऐं डिघनि संजोगी वर्णन (Long Conjunctions) खां किनारे करण ते।

5. **सकमारता** (Delicacy)- हीउ गुण उन्हनि आवाजनि मां बखे थो, जेके कठोर व्यंजननि जा आवाज न हुजनि। किथे सकमारता जो गुण घुरिजे, उहो लेखक खे परूडणु घुरिजे।

6. **अर्थ व्यक्ति** (Perspicuity)- 'रस गुण' प्रसाद जो अंग्रेजी लफ़्जु बि आहे Lucidity या Perspicuity, पर हिते अर्थ व्यक्तीअ जो मतिलबु आहे हीउ त हरहिक वाक्य में शब्द सियाणे तरीके सां विझणु घुरिजनि। अहिडा शब्द कतब न आणिजनि, जे लोक में नापसंद हुजनि या जिनि खे आम तौर लोक दकीक करे समुझनि।

7. **उदारता** (Grandeur)- वक्ते, खहुरनि व्यंजननि वारा शब्द (Harsh Consonants) रीति खे, इबारत खे अजमत था डियनि। अहिडीअ तरह जुमिलनि में चूडियल व्यंजननि मां जोडियल लफ़्ज समाइणु आहे उदारता जो गुणु।

8. **ओजस** (Elaborateness)- हीउ शब्दु गुणु, रस गुण खां अलहदो आहे। घणा लघू अखर, तिनि में व्यंजन गडे शब्द जोडियल ऐं उहे रचना में

समाइणु, तंहिंखे चइजे थो ओजस। घणा संजोगी वर्ण कतब आणण सां जोडियल शब्द पिण ओजस जो गुण पैदा कनि था।

9. **कांत** (Beauty)- ठिडकू, अभोगा, झूना थी वियल, बे मजे शब्द रचना खे बदिजेबो कनि था। रचना में कांत जो गुणु तडुहिं थो थिए, जडुहिं मॉझिसि सुहिणा शब्द अहिडीअ तरह समायल हुजनि, जो पढंदे मन ते जुणु त जादू मंत्र फेरिजी वजे।

10. **समाध** (Regularity)- हीउ गुणु मथिएं प्रसाद गुण खां हिन तरह अलहदो आहे, जो हिन में अवलि शैथल्य, पोयां शलेश, तंहिं पोयां शैथल्य, इएं बदिलायल तरतीब हुजे।

(ख) **अर्थ गुण (Sense of Composition)**- भरत मुनीअ सागिया गुण अर्थ लाइ हेठिएं नमूने जरूरी जाणाया आहिन-

1. **शलेश** (Entirety)- भिन्न भिन्न चूडियल वीचार अहिडीअ तरह कठा कयल हुजनि, जो रचना सम्पूर्ण डिसण में अचे ऐं मंझांडसि अर्थ जी बि अणपूराई न भासे।

2. **प्रसाद** (Perspicuity)- पधिरो आहे त सागिए नाले वारो 'रस गुण' प्रसाद खां हीउ अर्थ गुणु अलहदो फकति हिन करे आहे जो अर्थ गुणनि जो रस जे विषय सां संओं सिधो सम्बंध डेखारियल कीन आहे।

3. **समता** (Evenness)- हिन अर्थ करे रचना मौजून थिए थी याने (Balanced Composition) जुडे थो।

4. **माधुर्य** (Elegance)- हीउ अर्थ गुणु सागिए नाले वारे शब्द गुण ऐं सागिए नाले वारे 'रस गुण' सां 'प्रसाद' गुण वांगुरु भेटियो।

5. **सकुमार्य** (Gentleness)- हिन गुण जे सिलसिले में भरत मुनीअ जोरु डिनो आहे। रचना जे नरमाईअ ते जीअं रचना जो अर्थ न फकति समुझण में सौखो हुजे पर बीअ तरह वणंदड लग्ने।

6. **अर्थ व्यक्ति** (Vividity)- हिन गुण ज़रिये हरहिक गूढ़े वीचार जो ततु साफ़ ऐं स्पष्ट वाक्यनि में समाइणु घुरिजे।

7. **उदारता** (Grace)- हीउ अर्थु गुण ग्राम्य ऐं फ़ाहिश रूपी दोषनि जे विरुद्ध आहे।

8. **ओजस** (Elaboratness)- हीउ अजाई डेघि जो अवगुण कीन आहे। हीउ गुणु उते ज़रूरी आहे, जिते विषय चडीअ तरह समुझाइणी हुजे, मतां अधोगाबिरी लग्गे।

9. **कांत** (Beauty)- व्यंग्य अर्थ या ध्वनिय अर्थ (Suggestive Sense) वारा जुमिला, तिनि में हीउ गुणु सामायलु थिए थो।

10. **समाध** (Strikingness)- पढ़दे ई वीचार चमत्कार भरियल लग्गनि, जीअं उते जो उते दिलि अंदरि वीचार ऐं संदनि चमत्कार दिलि अंदरि लरजशूं पैदा कनि, तंहिं खे समाधि जो अर्थु गुणु चइबो आहे। अतिशयोक्त अलंकार (Hyperbole) सुहिणे नमूने में कतब आणण सां समाध जो अर्थु गुणु पैदा थो थिए ऐं वधो थो।

16. **रचना जा लछण**- 'लछण', जिनि सां साहित्य सिद्धांतनि जो सिधो सम्बंध आहे, उहे आहिनि अलंकार। इबारत जे रसात्मक आहे ऐं दोषनि खां आजी आहे, पोइ मंझिसि मथे जाणायल गुण हूँदा त इबारत या रीति (Style) साहित्यिक इबारत या रीति बणिजंदी। अहिडीअ साहित्यिक रचना जी इबारत या रीति खे अलंकार वधीक सुंदर बणाईदा। इबारत जे बे रस आहे, भुती आहे त पोइ गुण ऐं लछण का हथी न ड़ेई सघंदा।

17. **रीति या इबारत**- अजु कल्ह हिंदी साहित्य में 'रीति' बदिरां 'शैली' शब्द कतब ईदो आहे, जेको जुड़ियो आहे उन्हीअ धातूअ मां, जंहिं मां 'शलील' शब्द जुड़ियो आहे। इएं चई सघिजे थो त शलील रचना शैलीअ वारी (Stylish) रचना आहे। प्राचीन संस्कृत विद्वाननि रीति बदिरां बिब्यो शब्द, जेको सागिए

अर्थ सां कतब आंदो आहे, सो आहे 'मार्ग'। हिंदीअ में शैली शब्द घणो कतब थो अचे ऐं न रीति या मार्ग। तनकीद कंदड़ खे, समालोचक खे, शैलीअ (Literary Style) जा हेठियां अंग हर हमेशा ध्यान में रखणु घुरिजनि-

(क) **शैलीअ जा रस गुण-** हिननि जो जिकिरु गंज पहिरिएं जे अंक

(1) में कयल आहे पर सवलाईअ लाइ उहे हिते हेठि था डेई छडिजनि-

1. माधुर्य = आनंद पैदा कंदड़ = (Sweetness and Charm)

2. ओजस = (Elevation, Sublimation)

3. प्रसाद = सलासत = (Perspicuity, Lucidity)

(ख) **शैलीअ जा शब्द गुण ऐं अर्थ गुण-** डिसो मथियों अंक (15)

(ग) **शैलीअ जो शब्द साधन-** हिन बारे में कुझु गंज टिएं जे वृत्तिय ऐं श्रुतिय अलंकारनि जे सिलसिले में चयो वियो आहे ऐं कुझु मथिएं अंक (15) में चयल आहे। गंज टिएं जे अंक (2-ख) में शब्द शक्तीअ लाइ जेकी चयलु आहे, उहो बि शैलीअ लाइ ध्यान में रखिणो आहे। शब्दनि जे बारे में अजां बि कुझु वधीक अगिते हली चयो वेंदो। शब्द ई साहित्य जी पीढ़ि आहिनि, तंहिकरे संदनि साहित्यिक अभ्यासु चडो ई थियणु घुरिजे।

(घ) **शैलीअ जा लक्षण-** लक्षणनि में मुख्य विभाग आहे अलंकारनि जो, जेको टिएं गंज में वर्णन कयल आहे। भरत मुनीअ नाट्य शास्त्र में रूपकनि जे वस्तूअ (Plot) जे बारे में जेके संधियूं वर्णन कयूं आहिनि, उन्हनि जो अहवालु गंज पहिरिएं में डिनो वियो आहे। पढंदड़ समुझी सघंदा त मंझिनि जेके हिदायतूं रूपक रचींदड़ खे डिनल आहिनि, उन्हनि जो चडो सारो सम्बंध शैलीअ सां पिण आहे। हिन बारे में नाट्य शास्त्र में डिनल संधींग वडीअ अहमियत वारा आहिनि।

(ङ) **शैलीअ जा दोष-** हीउ मथे अंक (13) में समुझायल आहिनि। उन्हनि खां जे साहितकार खे वडं वजिणो आहे त समालोचक खे वरी बखूबीअ वाकुफु थियणो आहे, जीअं दोष परिखे सघिजनि।

(च) **शैलीअ जो स्वरूप**– भरत मुनीअ नाट्य शास्त्र में किनि रीतियुनि (Styles) ऐं वृतियुनि (Postures) जो वर्णन कयो आहे। जिनि पटांदर शैलीअ जा अलगि अलगि किस्म प्रांतिक भेदनि जे मदेनजर डेखारिया अथसि। उन्हनि जो थोरो जिकिरु अगिते हली कयो वेंदो।

(छ) **सम्प्रदाय ऐं शैली**– रीति सम्प्रदाय, ध्वनिय सम्प्रदाय ऐं विक्रोक्त सम्प्रदाय वारनि जे वीचारनि खे पिण शैलीअ जी परख कंदे नजर में रखी सघिजे थो। हिन सिलसिले में जेकी गंज में टिएं में चयो वियो आहे, उन खां थोरो वधीक अगिते हली पेशि कबो ऐं अहिडीअ तरह हिन गंज जो कार्जु पूरो कबो।

18. शब्द साधन– गंज टिएं जे अंक (2-ख) में शब्दनि जा 3 किस्म बुधायल आहिनि– 1. अभदा या वाचक 2. लक्षणा 3. व्यंजक या ध्वनिय। हिन विषय ते लिखियल त वडा ग्रंथ आहिनि, पर हिते बाकी हेठीं हकीकत वर्णन करे छडिजे थी।

(क) **अभदा या वाच्य शब्द (Denotative)**– हीउ बि टिनि किस्मनि जा आहिनि–

1. **रूढ़ शब्द (Hard-Unbreakable)**– अहिडा शब्द, जिनि जो अर्थु कढण लाइ खेनि भजिणो न पवे, जिनिजो खणड करिणो न पवे। मिसला ‘घोड़ो’।

2. **योगिक शब्द (Derivative Words)**– जेके रूढ़ न हुजनि, जिनि जे अर्थ कढण लाइ खेनि खणड कजे। जीअं त ‘सूत्र धार’, ‘कारीगर’ वगैरह।

3. **योग रूढ़ (Hard Derivatives)**– जिनि जो खणड करण खां अगे अर्थु हिकिडो हुजे पर खणड करण वक्ति अर्थु बियो निकिरे, उहे सडिजनि ‘योग रूढ़’। जीअं त ‘वारिज’ शब्द जी माना आहे फकति कंवलु गुलु पर योग पटांदर ‘वारिज’ जो अर्थु आहे पाणीअ में पैदा थींदड़ का बि शइ।

शैलीअ जो शब्द साधन सां मूल प्रयोजन आहे। रूढ शब्द, जिनि खे वक्ते हिक खां वधीक अर्थ हुजनि, उन्हनि जो उपयोग यमक अलंकार रचण में कतब थो अचे। योगिक शब्दनि जो उपयोग श्लेष अलंकार रचण में बि कतब थो अचे। योग रूढ शब्दनि जो उपयोग विक्रोक्त अलंकारनि में कतब थो अचे।

(ख) **लक्षणिक ऐं व्यंजक शब्द**– शब्दनि जे हिननि शक्तियुनि जी खासि पीढ़ि ते ध्वनिय सम्प्रदाय ऐं विक्रोक्त सम्प्रदाय बुधल आहे, जिनि जो कुझु जिकिरु अगे कयलु आहे।

19. भरत मुनीअ जूं रीतियूं– भरत मुनीअ चइनि किस्मनि जूं रीतियूं बुधायूं आहिनि–

(क) **वैदर्भी रीति** (Harmonious and Perspicuous)– छाकाणि त हीअ विदर्भ वारीअ वाट खां आई, तंहिंकरे खेसि वैदर्भी ‘मार्ग’ बि सडियो वियो आहे। हिन में माधुर्य आवाजनि वारा शब्द हुजनि, सभेई रस हुजनि ऐं सभेई शब्द ऐं अर्थ गुण हुजनि।

(ख) **गौरी रीति या मार्ग** (Bombastic Style)– भरत मुनीअ हीउ गौर एराजीअ वारनि जो आदती मार्ग जुणायो आहे। हिन में ओजस वर्ण हुजनि। (डिसो गंजु टियों, अंक 8)। रौद्र ऐं वीर रस लाइ गौरी रीति उचित थिए।

(ग) **पंचाली रीति या मार्ग** (Moderate)– हीअ पंचाल प्रदेश वारनि जो मार्ग बुधायल आहे। हीअ रीति कठोर ऐं श्रुतिय जो विचु हुजे। वैदर्भी ऐं गौरी रीतियुनि जो पूरो मेल जोल हुजे। दान वीर ऐं दया वीर रस लाइ पंचाली उचित आहे पर न युद्ध वीर रस लाइ। हिन खे ‘कोमल’ या ‘ग्रामेद’ शैली बि चवनि।

(घ) **लाटी रीति** (Soft Style)– भरत मुनीअ हीउ वैदर्भी ऐं पंचाली रीतियुनि जो विचु ठहिरायो आहे ऐं सुख-दरसी रूपकनि (Comedies) लाइ

उचित रीति जाणाई अथसि। मंझिसि सकुमारता, समता, प्रसाद ऐं माधुर्य गुण चडीअ तरह समायल थियनि। असीं सिंधी, विचोली सिंधी जेका साहितिक सिंधी थी कतब ईदड़ आहे, तंहिं खे वैदर्भीअ जो पद डेई था सघूं; पर उन में शकु न आहे त माधुर्य ऐं प्रसाद जहिड़ा गुण लाडीअ में आहिनि ऐं शिकारपुरीअ में वधीक आहिनि।

20. भरत मुनीअ जूं वृत्तियूं- हिननि जो घणो लागापो नाट्य कला सां आहे त बि संदनि थोरी जाण हिते बि हुअणु जरूरी आहे। हीउ बि चइनि किस्मनि जूं वृत्तियूं भरत मुनीअ वर्णन कयूं आहिनि-

(क) **भारती वृत्ति-** हिते 'भरत' माना नट, वेस धारी। भरत मुनीअ हिन वृत्तीअ जे बारे में जोरु डिनो आहे त भारता संस्कृत बोली कतब आणीनि ऐं भारतियूं याने नटियूं प्राकृत जो उपयोग कनि।

(ख) **सात्वती वृत्ति-** हीअ उहा वृत्ति आहे, जेका न्यायकारी ऐं बलवान पुरुष अख्तियारु कनि।

(ग) **कैशकी वृत्ति-** हिन में भाषा कोमल, शब्द कोमल अहिड़ा, जिन मंझि गान (राग) ऐं नृत्य (नाच) सां ठहिकी अचण जा गुण हुजनि।

(घ) **आरभटी वृत्ति-** 'आरभट' माना साहसी या जबिरे सुभाव वारो। हीअ वृत्ति आहे झेइनि झटनि, दंगनि फ़सादनि, आपात काल वारनि हादसनि ऐं बियनि भयानक वाक्अनि लाइ। भयानक रस, रौद्र रस ऐं भीभत्स रस लाइ आरभटी वृत्ति तुज ऐं ठहिकंदड़ आहे।

थोरो सम्बन्ध हिननि वृत्तियुनि जो वर्णक वृत्तियुनि सां आहे, जेके गंज टिएं में वृत्तिय अनुप्रास जे बारे में समुझायल आहिनि।

21. सम्प्रदाय ऐं शैली-

(क) **रीति सम्प्रदाय-** वामन आचार्य ऐं बियनि रीति जे बारे में जेकी चयो, तंहिंजो चडो सारो वर्णन मथियनि अंकनि में अगे ई ककरे छडियलु आहे।

(ख) **ध्वनिय सम्प्रदाय**- जेके सिंधी, शैलीअ जे बारे में गूढो अभ्यासु करणु चाहीनि, उन्हनि लाइ आनंद वर्धन जो महा ग्रंथ 'ध्वनिय लोक'। मंझिसि हरहिक वाचक शब्द ऐं हरहिक लक्षणा शब्द जे ध्वनिय अर्थनि जोड़ण जूं सवें वाटूं समुझायल आहिनि, जिनि हिन विषय खे काव्य जे दाइरे खां पासिरो करे विज्ञान जे दाइरे अंदरि आणे छडियो आहे। इन्हीअ में को शकु कीन आहे त ध्वनिय अर्थु ई काव्य जो ततु आहे। जेके मिसाल गंज टिएं जे अंक (3) में उत्तम काव्य जे बारे में डिनल आहिनि, उन्हनि ते गौरु करण सां साबितु थींदो त मंझिसि ध्वनिय अर्थु केतिरे कदुरु न समायल आहे, जहिं करे ई हरहिक रस हिक हिक मिसाल मां हासिलु थी सघियो आहे।

(ग) **विक्रोक्त सम्प्रदाय**- राजांक कंतक पंहिंजे ग्रंथ नाले 'विक्रोक्त जीवतम' में विज्ञानिक नमूने में हिन विषय जो विस्तार कयो आहे। हिन खांडसि अणु वारनि विद्वाननि जे वीचारनि जो ऊन्हो अभ्यासु कयो। भामह, वामन ऐं दणडी, उन्हनि जे ग्रंथनि डे त बिल्कुल घणो ध्यान डिनाई। अंत में हिन 'शब्द' खे सभिनी खां घणी अहमियत पंहिंजे नमूने में डिनी। चयो अथसि ऐं समुझायो अथसि त जे शब्द न हुजे हा त लोक 'वापार' याने परस्पर सम्बंध न हुजे हा। शब्द न हुजे हा त ईश्वर जी उस्तति मुमकिन न हुजे हा। सभेई विषय शब्द आहिनि, सभेई व्यक्ति शब्द आहिनि; सभेई गुण, सभेई लक्षण, सभेई चीजूं ऐं सभिनी जा तत शब्द आहिनि। उन्हनि शब्दनि जो अभ्यासु करे, हिन नतीजे ते पहुतो त काव्य जी सुंदरता, मधुरता, उडाम वगैरह शब्द जे विक्रोक्त ते, वक्र डेई चमत्कारी अर्थ सां कतब आणण ते ई मुनहसर आहे। वेद खे 'शास्त्र' जो अर्थु डेई, 'शास्त्र अर्थ' खे प्रधान करे, 'सेवभावोक्त' याने सुभाव पटांदर 'उक्त' जो लक्षण थो जोडिजे, इए 'वक्र' डेई थी इहा 'उक्त' जोडिजे। इन्हीअ 'शास्त्र' जे काव्य जी 'कांता' (Brilliance), पढंदडनि बुधंदडनि ताई पहुचाइण लाइ वेदनि जे 'वापार' खे, वेदनि जे पढंदडनि जे परस्पर सम्बंध खे प्रधान करे, नेठि वेद खे ई विक्रोक्त करे थो छडिजे, चमत्कारी थो बणाइजे। इहो जेके समुझी सघनि, तिनि खे समुझाइण जी कोशिश कई

अथसि त कीअं हरहिक अलंकार सां रचना खे विक्रोक्त थो कजे, चमत्कारी थो कजे। पर सजो मांडाण मंडियो वेही अथसि शब्द साधन ते। ममट जो चवणु आहे त उत्तम काव्य जा जेके पाण मिसाल ङिना अथसि, उन्हनि में विक्रोक्त ज़रिये चमत्कार आंदल आहे।

(घ) **औचित्य सम्प्रदाय-** शैलीअ जे बारे में हिन सम्प्रदाय बि ध्यान लहणो। संदसि हर्ता कर्ता हो खेमचंद्र, जहिं पंहिंजे ग्रंथ नाले 'औचित वीचार कारक' मंझि अटिकल 14 सदीअ धारे ज़ाहिरु कयो आहे त शब्द साधन, गुण, लक्षण, अलंकार वगैरह मिडेई तडहिं कारगर आहिनि, जडहिं कवी या साहितकार या समालोचक जाणे थो त छा छा 'उचित' आहे, (Appropriate) आहे। हिन विषय में वियो घणो ऊन्हो आहे पर पोइ वारा फ़क़ति 'उचित' शब्द खे ई अहमियत ड़ेई रहिया आहिनि। छा छा उचित आहे, उनजो हाणे दारो मदारु साहितकार जे शख़्सी पसंदीअ या नापसंदीअ ते ई आहे। आख़रि बि त शैलीअ जो दारो मदारु साहितकार जे शख़्सियत ते, संदसि 'व्यक्ति' ते ई आहे। शैलीअ मंझि शख़्सियत याने 'व्यक्ति तत' (Individuality) साहितकार जे हेठियुनि लियाक़तुनि ते आधारित आहे-

1. संदसि बुद्धी (Intellect)
2. संदसि भावनाऊं (Emotions)
3. संदसि सौंदर्य वीचार (Aesthetic Sense)

22. कालीदास ऐं शैली- कालीदास जेकी शब्द ऐं अर्थ जे लाइ चयो आहे, उहो दुहिराए हीउ गंजु ख़तमु थो कजे-

“वागार्थावव सम्पर्कत्व, वागर्थ प्रतिपीते,
जगत, पुत्रौ वंदे पार्वती-परमेश्वरौ।”

याने त शब्द ऐं अर्थ जी एकता अहिडी आहे, जहिडी शिव ऐं पार्वतीअ जी, जिनि खे असांजी वंदना आहे।

गंजु पंजों

छंद शास्त्र जा सिद्धांत

1. छंद- पाणनी मुनीअ 'छंद' शब्द जो धातू 'चंद' मंझां सिद्ध करे चयो आहे त 'चंदत हर्षेत एन दीपेति वात छंद' अर्थु त छंद तंहिंखे चइजे, जेको हर्ष या आनंद पैदा करे ऐं जेको हृदे खे रोशन करे।

बियो अर्थु, यासक जे 'निरौक्त' जे हिन मंत्र पटांदर आहे त 'मन्नात छंदास छादनात' याने त छंद आहिनि वेदांतिक मंत्रनि जा वेस या ढक।

छांदोज उपनिषद में पिण इहो यासक वारो अर्थु दुहिरायल आहे ऐं मंझिसि इन्हीअ बारे में हिकु उम्दो टोटिको वर्णन थियल आहे। चे, हिक डींहुं मृत्यू भूत अची सुर्ग जे देवताउनि ते डुमिरियो। काल जो डुमरु, सो सभिनी देवताउनि पाण बचाइण लाइ मंत्रनि सां खणी पाण खे आछदन कयो, ढकियो; जहिं सबबां मृत्यू भूत लाचारु थी पियो ऐं पोयां पर करे वेंदो रहियो। मंत्र त आदि खां थियनि छंदनि ते बधल, तंहिंकरे 'छंद' जो अर्थु थियो ढकण जो वेसु, मंत्रिक वेसु।

शास्त्रनि में चयलु आहे त प्राचीन ग्रंथ मिडेई छंदनि ते बधल आहिनि ऐं ग्रंथनि जूं अमोलक वाणियूं सवें सदियूं सलामत रहियूं आहिनि, छाकाणि त उहे छंदनि जे वेस में ढकियल आहिनि। वेदनि जा इहे पद छंद शास्त्रनि जी पीढ़ि आहिनि। नालेरा वैदिक छंद आहिनि 'गायत्री', 'उष्णक', 'अंशटभ', 'त्रिषटभ', 'जुगती' ऐं बिया। छंद जी महिमा आदि ग्रंथनि मंझि चडी गातल

आहे। पाणनीअ, पूर्ण वेद ज्ञानी पुरुष जा अंग छहनि ई वेदांगनि पटांदर हीउ बुधाया आहनि त “छंद संदसि चरण आहनि, कल्प (वैदिक क्रियाकर्म) संदसि हथ आहनि, ज्योतिष संदसि नेत्र आहनि; निरूक्त (वैदिक कोष विद्या) संदसि कन आहनि, सिख्या संदसि नकु आहे ऐं व्याकरण संदसि मुख।” मतिलबु त छंद चरननि ते ई समूरो ज्ञान हले चले थो।

2. सिंधु ऐं छंद- सिंधु में हुआसीं त उते जी हालति मूजिबु असांखे कुझु अंग्रेजी Prosody पढ़िणी पवंदी हुई ऐं कुझु फ़ारसी इल्मु अरूजु मुताला करिणो पवंदो हुआ। हिन लेखक भारत में अचण बैदि छंद विद्या पढ़ी, पहिंजो पहिरियों किताबु ‘सिंधी शइर-छंद सुगंध’ तयारु कयो, तडहिं खेसि पिरू पिंया त सिंधु जा सभेई नामियारा अदीब जहिडोकि मिर्जा कलीच बेग, डॉक्टर गुरुबक्षाणी, मियां मुहमद सदीक मेमण, डॉक्टर शेख़ इब्राहीम ऐं बिया, छंद विद्या खां अजाणु हुआ, सो उन्हनि शाह लतीफ़ जे शइर खे, नज़म जे मदे नज़रि ‘झंगली’, ‘नामौज़ून’ वगैरह ठहिरायो हुआ। इनकरे लेखक खे सुभावीक घणी खुशी थी हुई। छाकाणि त खेसि जाण पेई त शाह ऐं असांजे बियनि आगाटनि सिंधी शाइरनि जो शइरु, न झंगली ऐं न नामौज़ून आहे, पर भारत जे बियनि मिडनई अगु पोइ वारनि अनेक भग़त कवियुनि जे कविताउनि जियां बिल्कुल मौज़ून, बिल्कुल सुधिरियल नज़मबंदीअ मूजिबु रचियल आहे। ‘छंद सुगंध’ किताब में छंद विद्या जी कुझु समुझाणी डेई, थोरनि किनि छंदनि सां वाक्फ़ियत करायल हुई। तहिं खां पोइ हैदराबाद सिंधु मां निकिरंदड़ अदबी मैग़ज़न ‘महिराण’ जे सम्पादक जी इस्तदआती फ़क़ति एतिरो चिटीअ तरह साबित करण लाइ त शाह सां कीअं न असांजे आला अदीबनि निसूरो नाहकु कयो आहे। हिकिडो लेखु मुम्बईअ मां लेखक तयारु करे मोकिलियो हुआ, जेको अजु खां धक घटि पाउ सदी अगु उते शायी थियो हुआ। उन लेख में दोहा ऐं सोरठा छंदनि जे समुझाणीअ ऐं शाह, सचल ऐं सामीअ जे डोहीड़नि जे मिसालनि खां सवाइ बी हिक अबहम ग़ाल्हि निर्णय कई वेई हुई त डॉक्टर गुरुबक्षाणीअ, डॉक्टर दाऊद पोटे जे सलाह सां, शाह जे अवाइली रसालनि

में सरकापाइतीअ पोयां जेका 'मति' = सलाह, (Advice) विधल हुई, सा अरूज ते बुधल समुझी, शाह लतीफ जी रचिल न, पर कहीं पोइ वारे आम अरूज ज्ञाणंदइ शाइर जी जोड़ियल समुझी, रसाले मां मागहीं रदि करे कढी छडी हुई। जहिंजे आधार ते पोइ वारनि रसालनि में उहा मति आहे ई कान। इहा गुलती हिन सबब थी जो सिंधी अदीबनि खे गम ई कान हुई त सरकापाइतीअ वारी 'मति', छंद विद्या जे 'चौपाई' ऐं 'चौपई' छंदनि ते बुधल आहे; जिनि बिन्हीं छंदनि जो इस्तेमालु भारत जे अनेक कवियुनि कयो हुआ, जहिंजो कहीं बि रचना जो इल्म अरूज सां को बि वास्तो कीन हुआ। संत तुलसीदास जो रामायण सजो 'दोहा', 'सोरठा', 'चौपाई', 'चौपई' छंदनि ते बुधल आहे। अगिते हली अंक 12 वारीअ टेबल में 16 ऐं 15 मात्राउन वारनि पादनि जे छंदनि मंझि इन्हनि बिन्हीं छंदनि जी रचना डिनी वेई आहे। हिते उन्हीअ 'मति' मां के मिसाल डेई था छडिजनि-

(क) ओगे छडियुइ अर्ट अलोड़ी,
मोना, मंजियूं, फिघ बि फोरे,
लेटण, गुझ ऐं मकिड़ी मोड़े,
कढेनि चमोटनि मां टिक टोड़े;
हाणि कंदीअ तूं कहिड़ी कारि?
चरखो चोरे कत का तार।

(ख) भगो सजो करि सहीं सारे,
साज सभोई सही संवारे,
कारि कतण जी वेहु म विसारे,
अचे पिजाइजि लारे फटियारे;
लाइजि तूं लिंव अर्ट सीं आरि,
चरिखो चोरे कति का तार।

मथियनि बिन्हीं बैतनि जूं पहिरियूं चार चार तुकूं 'चौपाई' छंद मूजिबु रचियल आहिनि ऐं पोयूं ब ब तुकूं 'चौपाई' छंद मूजिबु ब्रधल आहिनि।

हिन गंज ज़रिये, छंद विद्या ऐं साणुसि लागापियल विषयनि जो कुझु वर्णन कयल आहे। सागिए वक्त, असां उतां आयल सिंधियुनि खे इल्म अरूज जी अधोगाबिरी जाण हुई, जेतोणीकि तंहिं पटांदर बि शाह खां पोइ वारनि शाइरनि उन इल्म मूजिबु शइर जोड़े, सिंधी बोलीअ खे साओ सणिभो पिए कयो आहे। इन सबब हिन गंज अंदरि, इल्म अरूज ते सरसरी रोशनी विधी वेई आहे। लेखक जो हिन विषय ते विचूर वार लिखियलु वडो किताबु 'सिंधी शइ-इत्र अरूज' कडहोको खतमु थी वियलु आहे।

3. छंद शास्त्र जा मूल सिद्धांत- छंद शास्त्र जा मूल सिद्धांत समुझण में तमाम सवला आहिनि। उहे समुझण लाइ हीउ बैतु थो डिजे-

“सुख में बहु संगी भए, दुख में संग न कोइ,
कह नानक भज हर मना, अंत सहाई होइ।”

(क) **सुर ऐं व्यंजन-** मथिए श्लोक जे पहिरिएं शब्द 'सुख' में ब वर्ण (Letters), 'स' ऐं 'ख' आहिनि। शब्द, लफ़्ज़, जुड़ियल आहिनि वर्णनि मां, हर्फ़नि मां। वर्ण हिकिड़ा आहिनि 'व्यंजन' = हर्फ़ सही (Consonants) ऐं बिया आहिनि 'सुर' = हर्फ़ इलत (Vowels)। सिंधी बोलीअ में हेठियां 'सुर' आहिनि-

अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिन किताब जे टिएं गंज में वृत्तिय अनुप्रास ऐं श्रुतिय अनुप्रास समुझाईदे, पढ़ंदइनि जी व्यंजननि ऐं सुरनि सां वाक्फ़ियत करायल आहे।

(ख) **लघू ऐं गुरू-** सुरनि मां टे (अ, इ, ऐं उ) लघू सुर आहिनि, नंदा सुर आहिनि। बाकी सत- आ, ई, औ, ए, ऐ, ओ, औ गुरू सुर आहिनि, डिघा सुर आहिनि। हिंदीअ में 'लघू' लाइ 'हरस्व' बि चवनि ऐं 'गुरू' लाइ 'दीर्घ' बि चवनि।

(ग) **अछर** (Syllables)– ‘सुख’ शब्द में ब अछर आहिनि। उहे बुई लघू अछर आहिनि। पहिरियों ‘उ’ जे सुर वारो अछर आहे ऐं ब्रियो ‘अ’ जे सुर वारो अछर आहे। ज़बर, ज़ेरि ऐं पेशु, लघू सुरनि जा चिन्ह आहिनि, निशान आहिनि। ‘भए’ में शब्द में बि ब अछर आहिनि– ‘भ’ ऐं ‘इ’। पहिरियों ‘अ’ ऐं सुर वारो लघू अछर आहे ऐं ब्रियो ‘ए’ जे सुर वारो गुरू अछर आहे। ‘नानक’ लफ़ज़ में टे अछर आहिनि– ‘ना’ = गुरू, न = लघू ऐं क = गुरू। ‘अछर’ बदिरां बाजे ‘अखर’ पिण कतब आणिबो आहे।

(घ) **मात्रा** (Instant)– छंद शास्त्र मूजिबु, लघू सुर उचारण में जेका वेरमि लगे थी, उहा चवनि हिक ‘मात्रा’। गुरू अछर उचारण में अटिकल बीणो वक्तु लगे याने ब मात्राऊं लगुनि। छंद शास्त्र पटांदर असीं चऊं त लघू अछरनि जी माप आहे हिक मात्रा ऐं गुरू अछरनि जी माप थिए ब मात्राऊं। माप बदिरां असीं ‘वज़न’ बि चऊं।

(ङ) **पंक्तियूं** (Verses)– इल्म अरूज मूजिबु ‘मिसरा’ जेका छंद शास्त्र मूजिबु चइजे ‘पंक्ति’ या ‘पाद’, जो शब्द बि किनि लेखकनि तुज़ जातो आहे।

(च) **चिन्ह, लघू गुरूअ लाइ**– लघू अछर जे वज़न जो जहन (निशान) आहे ‘।’ (उभी लीक) ऐं गुरू अछर जे वज़न जो चिन्ह आहे ‘S’। लघू अछर जे चिन्ह जो वज़नु आहे हिकिड़ी मात्रा ऐं गुरू अखर जे चिन्ह जो आहे ब मात्राऊं। हाणे अचो त मथे वीचारियल श्लोक मथां चिन्ह डेई, हरहिक पंक्तीअ याने मिसरे जो वज़नु मापियूं–

I S I I S S I I S I S S I I S I I

सुख में बहु संगी भए, दुख में संग न कोइ।

I S S S I I S S I I I I I I S I I

कह नानक भज हर मना, अंत सहाई होइ।

हरहिक पंक्तीअ जा लघू ऐं गुरू अखर, तिनि जूं जुमिले 24, 24 मात्राऊं थियनि थियूं। हिकिड़ो हीउ नेमु अहम करे समुझो त नासिकी (Nasals) अच्छर, लघू तोड़े गुरू, तिनि जूं ब ब मात्राऊं गणिजनि।

(छ) **यत ऐं चरण-** मथिएं द्व-पाद छंद जे हरहिक पाद या पंक्तीअ जे विच में, मेठाज जे ख्याल खां कुझु वेरमि तरसिणो थो पवे, तंहिंकरे हरहिक पाद बिनि बिनि टुकरनि में विरिहाइजी थो वजे-

1. सुख में बहु संगी भए = 13 मात्राऊं
2. दुख में संग न कोइ = 11 मात्राऊं
3. कह नानक भजु हर मान = 13 मात्राऊं
4. अंत सहाई होइ = 11 मात्राऊं

मेठाज लाइ बीहक या विराम, तंहिं खे छंद विद्या चवनि 'यत' (Harmonical Pause) या Caesura. व्याकरण वारियूं बीहक जूं निशानियूं सडिजनि 'अर्थ विराम' Sentential Pauses. मथिएं बैत जे हरहिक पंक्तीअ में 'यत' जो स्थान 13, 13 मात्राउनि बैदि आहे। मथिएं बैत जे बिन्हीं पंक्तियुनि, पादनि खे चइनि चरणनि में विरिहायल आहे।

(ज) **पादनि ऐं चरणनि जो अंदाजु-** छंद विद्या मूजिबु हरहिक छंद में घटि में घटि ब पाद जूरु हुजनि, पर जिते जिते छंद में फकति ब पाद हुजनि, उते जुमिले चार चरण यत जे जरिये अवसि हुअणु घुरिजनि। चइनि पादनि वारो छंद, तंहिंजा चइजनि चार चरण याने पाद। चइनि खां मथे पादनि वारा छंद सडिजनि बहु पदा छंद।

(झ) **सम मात्रिक ऐं अर्द्ध-**

सम मात्रिक छंद- मथिएं द्व-पाद छंद जा चार चरण, तिनि मां हिकु चरण छडे, बिए जी माप हिक जेडी आहे। छो त पहिरिएं ऐं टिएं जी माप आहे 13, 13 मात्राऊं ऐं बिए ऐं चोथें जी माप आहे 11, 11 मात्राऊं। चइनि

ई चरणनि जी माप हिक जेतिरी हुजे त अहिडे छंद खे कोठिजे 'सम मात्रिक छंद'। मथे कतब आंदल श्लोक 'अर्द्ध-सम मात्रिक छंद' आहे। छो त हिकु चरण छडे बियो, उहे हिक जेडा आहिनि। जीहिं में हरहिक चरण जूं मात्राऊं असमान याने अलगि अलगि हुजनि, उनखे 'विषम छंद' चइजे थो।

(च) तुकबंदी या क़ाफ़ियो (Rhyme)- हिन सिलसिले में घणो ई अगिते हली चवणो आहे पर हालु इहो ध्यान में रखणु घुरिजेऊं त मथिएं श्लोक जो, बैत जो, बियो ऐं चोथों चरण 'तुकबंद' आहिनि।

4. छंद नाम- पादनि चरणनि जे अंदाज, हरहिक पाद या चरण जे मात्राउनि जे अंदाज, यत जे स्थान ऐं तुकबंदीअ जे अलगि अलगि नमूने जे मदेनजरि, हरहिक छंद जो अलगि अलगि नालो थिए। मथे जिकिरु कयल बैत (श्लोक) 'दोहा' नाले छंद आहे। दोहा छंद जूं वस्फूं हेठींअं रीति थियनि-

(क) इहो द्व-पाद छंद आहे।

(ख) हरहिक पाद में 23 मात्राऊं आहिनि।

(ग) हरहिक पाद में यत जो स्थान 13, 13 मात्राउनि बैदि आहे।

(घ) चार चरण 13, 11, 13, 11 मात्राउनि जा आहिनि, याने त इहो अर्द्ध-सम मात्रिक छंद आहे।

(ङ) बियो ऐं चोथों चरण तुकबंद आहिनि।

5. मात्रक ऐं वर्णक छंद- मात्राउनि खां सवाइ, छंदनि जो वज़न मापियो आहे वर्णनि (Letters) जी गुणप ते, पोइ भली हरहिक पाद (या चरण) जूं मात्राऊं घटि वधि हुजनि, या त अछरनि (Syllables) जी तरतीब ते। यत जे लिहाजुं खां, वर्णक छंद बि सम वर्णक या अर्द्ध-सम वर्णक या विषम थियनि। वर्णक छंदनि जो वधीक अहवालु अगिते हली मुनासिब हंधनि ते डिनो वेंदो। इहो ध्यान में रखणु जरूरी आहे त अजु कल्ह छंदनि जोड़ण में बिन किसमनि जी नवाणि आहे- हिकिड़ी त तुक तुक में अलगि अलगि अंदाज मात्राउनि

जो या वर्णनि या अछरनि जो विझी, 'विषम मात्रिक' या 'विषम वर्णक' छंद जोड़ीनि; ऐं बियो त मात्रिक वजन ते अंग्रेजी वस्फू बि पिया जोड़ीनि, जहिडोकि सॉनेट (Sonnet) वगैरह। घणनि भारती ग्रंथनि में 'छंद शास्त्र' बदिरां 'पिंगल शास्त्र' चयल आहे। 'पिंगल' नाले हिकु प्राचीन मुनी हुआ, जहिं छंद विद्या जो अवाइली ग्रंथु रचियो हो।

6. अखर समूह (अछर समूह)- हर कहिं मुल्क खे नज़मबंदीअ (Versification) जो पहिंजो पहिंजो सिरिश्तो आहे। निजु भारती सिरिश्तो छंद शास्त्र पटांदर आहे। फ़ारसी सिरिश्तो इल्म अरूज पटांदर आहे। मुग़रबी मुल्कनि में यूनानी ऐं रोमी सिरिश्तो आहे, जहिं खे चवनि Classical Prosody. इंगलैंड में वरी अंग्रेज़नि जो पहिंजो सिरिश्तो आहे, जेको बल-पूर्वक (Accented) ऐं निर्बल (Quiescent or Light) अखरनि ते बधल आहे।

7. इल्म अरूज जा परिभाषिक शब्द (Technical Terms)- हर्फ़ हिकिड़ा आहिनि सही (Consonants) ऐं बिया आहिनि इलत (Vowels). अ, व ऐं य हर्फ़ सही बि आहिनि। हर्फ़ इलत ते बि कतब अचनि था, छो त उन्हनि गड़िण सां अरबी सिंधीअ में डिघा सुर जुड़नि था। हमज़ो (अ) बि इएं आहे। छोटा सुर, ज़ेरि, ज़बर ऐं पेश डियण सां जुड़नि था। ज़ेरि, ज़बर या पेश डियण सां व्यंजन 'मुतहरक' याने 'सुरांत' (Accented) थियनि था। जे उहे नंदा सुर हुजनि त व्यंजन 'साकन' याने 'हलंत' (Quiescent) हुजनि। हाणि, हेठियनि परिभाषिक लफ़्ज़नि खे समुझणु सवलो थींदो।

सबब = द्व हर्फ़ी अखर

सबब ख़फ़ीफ़ = पहिरियों हर्फ़ मुतहरक, बियो साकन (नून)

सबब सकील = बिए हर्फ़ मुतहरक (मफ़)

वतद = सि हर्फ़ी अखर (तिनि अखरनि वारा)

वतद मजमूअ = पहिरियों ऐं बियो हर्फ़ मुतहरक, टियों साकन

वतन मफरूक = पहिरियों ऐं टियों मुतहरक, विचों साकन

फ़ासलह = चौ हफ़ी (अ, व, य, मुतहरक तोड़े साकन, उहे बि गुणिजनि)।

8. ब अखिरियूं (द्व हफ़ी)— हिन में 9 तोड़े 10 अंक में सभिनी सिरिश्तनि जा परिभाषिद लफ़ज़ ऐं मिसाल डिना विया आहिनि। छंद शास्त्र वारनि नालनि सां शुरू करे—

1. **कर्ण**— ब गुरू (S S), चार मात्राऊं; ब सबब ख़फ़ीफ़ (Spondee), मिसाल 'नाना' (फ़इलनि)।

2. **ताल**— लघू गुरू (S I), टे मात्राऊं, वतद मजमूअ (Troches), मिसाल 'नना' (फ़इल)।

3. **ध्वन**— गुरू लघू (I S), टे मात्राऊं, वतद मफ़रूक (Iambus) मिसाल 'नान' (फ़ाअ)।

4. **सूत्रीय**— ब लघू (I I), ब मात्राऊं, हिकु सबब सकील (Phyrric), मिसाल 'नन' (मफ़)।

नोट— आम तरह छंद शास्त्र में बि-अखिरियुनि जा मथे डिनल नाला कतब न ईदा आहिनि ऐं संदनि रचना रुगो लघू-गुरू चवण सां वर्णन कबी आहे।

9. टि अखिरियूं (सि हर्फियूं)—

1. **मगुण**— टे गुरू (S S S), छह मात्राऊं, टे सबब ख़फ़ीफ़ (Mollossus), वज़न मफूलनि, छंदलय = नानाना, मिसाल 'शाहाणो'।

2. **तगुण**— टे लघू (I I I), टे मात्राऊं, टे मुतहरक हर्फ (Tribrach), वज़न फ़इल, छंदलय = ननन, मिसाल 'सचल'।

3. **भगुण**— अवलि गुरू (I I S), चार मात्राऊं, ख़फ़ीफ़। सकील, (Dactyl), वज़न फ़इलनि, छंदलय = नानन, मिसाल 'खादिम'।

4. **जगुण-** विच गुरू (I S I), चार मात्राऊं; फ़ाज़लह = मुतहरक + मफ़रूक; (Amphi-Brach), वज़न फ़ऊल, छंद लय ननान, मिसाल 'अज़ीज़'।

5. **सगुण-** अंत गुरू (S I I), चार मात्राऊं, सक्कील + ख़फ़ीफ़, (Anapest); वज़न फ़इलनि, छंद लय ननना, मिसाल 'तुलसी'।

6. **यगुण-** अवलि लघू (S S I), पंज मात्राऊं, मजमूअ + ख़फ़ीफ़; (Bacchic); वज़न फ़ऊलनि, छंद लय ननाना, मिसाल 'दुखायल'।

7. **रगुण-** विचु लघू (S I S), पंज मात्राऊं, ख़फ़ीफ़ + मजमूअ, (Cretic), वज़न फ़इलनि; छंद लय ननाना; मिसाल 'मारुई'।

8. **तगुण-** अंत लघू (I S S), पंज मात्राऊं, ख़फ़ीफ़, मफ़रूक, (Antibacchic); वज़न मफ़ऊल; मिसाल 'दिलगीर'।

10. **छंद गुण ऐं अरूज़ जा बहर-** छंद शास्त्र जी तरह तरह जे छंदनि सां वाक्फ़ियत करियूं, तहिं खां अगे इल्म अरूज़ जा जेके मुख्य बहर आहिनि, उन्हनि जी छंद-रचना सां कुञ्जु भेट करे छडिणु ज़रूरी आहे, जा हेठि कजे थी-

1. **यगुण-** (S S I), पंज मात्राऊं, लय ननाना, अरूज़ जो रकन, फ़ऊलनि, बहर = मुतक़ारिब (Bacchic).

2. **रगुण-** (S I S), पंज मात्राऊं, लय ननाना; अरूज़ जो रकन, फ़ाइलनि, बहर = मुक़दारिक (Cretic).

3. **यगुण+ग-** (S S S I), सत मात्राऊं, लय ननानाना; अरूज़ जो रकन, मुफ़ाईलनि, बहर = हज़ज़ (First Epitrite)

4. **रगुण+ग-** (S S I S), सत मात्राऊं, लय ननानाना; अरूज़ जो रकन, फ़ाइलातनि, बहर = रमल (Second Epitrite).

5. **तगुण-ग-** (S I S S), सत मात्राऊं, लय नानानना; अरूज् जो रकन, मुस्तफ़इलनि, बहर = रजज़ (Third Epite).

6. **सगुण+ल+ग-** (I I S I S), सत मात्राऊं, लय नननानना; अरूज् जो रकन, मुतफ़ाइलनि, बहर = कामिल।

7. **जगुण+ल+ग-** (S I I S I), सत मात्राऊं, लय ननाननना; अरूज् जो रकन, मुफ़ाइलतुनि, बहर = वाफ़र।

11. **तुकबंदी काफ़ियो (Rhyming)**- गंज टिएं में जाणायो वियो आहे त तुकबंदी हिकु अलंकार आहे, जहिं खे 'अनित्य अनुप्रास' कोठिजे थो। इहो इनकरे आहे जो तुकबंद चरणनि जा आखरीनि अखर सागिए सुर जा हूँदा आहिनि। पद्य में कडहिं कडहिं पादनि या चरणनि जे विच में ऐं पिण गद्य जे जुमिलनि जे विच में तुकबंदी कबी आहे त लुत्फ़ ईदो आहे। अनित्य अनुप्रास अनेक किस्मनि जा आहिनि। जिनि मां हेठि डिजनि था-

(क) **ललित अनित्य अनुप्रास-** चारई चरण तुकबंद हुजनि, तंहिंखे अंग्रेज़ीअ में चवंदा आहिनि- Feminine Rhyme. किनि छंद शास्त्रनि में हिन खे 'सम-अनित्य' या सर्व-अनित्य अनुप्रास बि कोठियल आहे, मिसाल तौर-

गानो गाइण आयुमि जो, सो अण गातो ई रहिजी वियो,
साज जी तार मिलाइण में ई समो समूरो पूरो थियो,
बोल न पूरा बुधी सघियुसि ऐं ताल न पूरो बीही सघियो,
केवल आशा अण पूरीअ जो, मुंहिंजीअ दिलि में दुर्दु रहियो।

(मंधाराम मलकाणी- टागोर तां)

(ख) **दूर अंतर-** दोहा छंद वांगुरु बियो ऐं चोथों चरण तुकबंद हुजनि। हिन खे 'सम-अनित्य' अनुप्रास बि चवनि।

(ग) **युगमक-** पहिरियों-बियो ऐं टियों-चोथों चरण तुकबंद हुजनि। सम-विषय अनित्य अनुप्रास बि चवनि। मिसाल तौर-

अरे, उठ कि अब तो सवेरा हुआ,
 नहीं दूर तेरा अंधेरा हुआ,
 बहुत दूर करना तुझे है सफ़र,
 नहीं ज्ञात है राह घर की किधर।

(त्रिपाठी)

(घ) आलंगित- ब्रियो ऐं टियों चरण तुकबंद हुजनि-
 यही तो कांटे सा चुप चाप,
 उगा अरु तरुवर में सकुमार,
 सुमन वह था जिसमें अवकार,
 भेद डाला मधुकर निषाप।

(ङ) गमफ़त- पहिरियों-टियों ऐं ब्रियो-चोथों चरण तुकबंद हुजनि-
 वाई वजेमि शाल, अखियुनि सीं अंधो थियां,
 भलो करे जे भाल, त कननि सीं कीन सुणियां।

हिन खे सम-अनित ऐं विषम-अनित्य अनुप्रास बि चवनि।

(Alternating Rhyme).

(च) विषम- पहिरियों ऐं टियों चरण तुकबंद हुजनि। मिसला-
 सुता उथी जागु, निंड न कजे एतिरी,
 सुल्लतानी सुहागु, निंडुनि कंदे न मिले।

नोट- सोरठा छंद में, तुकबंदी इन नमूने थींदी आहे, दोहा जे उबतडि।

(छ) ललित अंतर- फ़ारसी तर्ज वारियुनि रुबायुनि जो क़ाफ़ियो हिन
 नमूने थींदो आहे। याने त पहिरियों, ब्रियों ऐं चोथों तुकबंद हुजनि-

अजु हींअं थो पुकारे सुबूह खां मयख़ानो,
 रंदो, मस्तो, शराबियो, दीवानो!
 पैमान भरे पी वठो मय जा बि, मतां,
 भरिजी अचे उमिरि जो संदव पैमानो।

(क़लीच बेग)

12. सम मात्रिक छंद- हेठिएं नक्शे में सम-मात्रिक छंद, हरहिक पाद जे मात्राउनि जे अंदाज मूजिबु, हरहिक वर्ग जे नाले ऐं उन वर्ग जे छंदनि जे अंदाज, हरहिक वर्ग जे मुख्य छंदनि में हरहिक मुख्य छंद जी रचना थोरे में डिनी वेई आहे, तरतीब वार कालमनि में विरिहाए। टिएं कालम में, बिए कालम वारनि वर्गनि जा थोरा मुख्य किस्म डिना विया आहिनि, जिनि जा तफ्सील ई चोथें कालम में दर्ज कयल आहिनि-

पाद में मात्राऊं	वर्ग नाम ऐं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
2	ब्रह्म-2	श्री 1	S-S-S-S हरहिक पाद में हिकु गुरू
		श्री 2	॥-॥-॥-॥ हरहिक पाद में <u>ब</u> लघू
3	विष्णू-3	राम 1	हरहिक पाद में 3 लघू ॥
		राम 2	हरहिक पाद में हिकु गुरू हिकु लघू S ।
		राम 3	हरहिक पाद में हिकु लघू हिकु गुरू । S
4	वैदिक-5	-	-
5	यागनिक-8	-	-
6	रत-13	-	-
7	लोकिक-21	सुगति	हिकु त्रिकल+हिकु चौकल (3+4) मिसाल- जागु जानी! जगत फ़ानी! वेल वेंदे! हथि न ईदी!
8	वास्तु-44	छो अखंड मुक्तु	हिन अष्टक याने अठनि मात्राउनि वारे छंद में ई पंजक-गुरू-लघू <u>ब</u> चौक, चौपाईअ जो अधु <u>ब</u> त्रिलक ऐं हिकु गुरू

पाद में मात्राऊं	वर्ग नाम ऐं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
9	अंक-55	महंदर-वज्रा	यगुण (SSI) सगुण (SII)
10	देशक-86	दीप	बु रगुण (SIS) या बु यगुण (SSI) या बु तगुण (ISS)
11	रुद्र-144	नैन शिव समानिका	भुजंगप्राय छंद जो अधु टे त्रिकल + गुरू रगुण (SIS) + जगुण (ISI) + गुरू (S)
12	आदित्य-233	आहीर प्रमाणिक दिगपाल लीला तूमर मालिका	दोहा छंद जे बिए ऐं चोथें चरण मिसलि जगुण (ISI)+रगुण (SIS)+ लघू (I) + गुरू (S) तगुण (ISS)+रगुण (SIS) + गुरू (S) - पंजों ऐं अठों अखरु लघू चार त्रिकल पंजक (SSI या SIS) + बु गुरू (SS) ऐं गुरू लघू (IS) सप्तक (SSIS) + के बि पंज मात्राऊं
13	महा भागवत 377	उर्वशी प्रदीप	सप्तक (ISSS) + छुटक, अंत गुरू दोहा, जे पहिरिएं ऐं टिएं चरण समान

पाद में मात्राङ्ग	वर्ग नाम हैं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
14	मानव-610	सखी हाकक मधुमालती मनोरमा कोकिला	अंत में S S S या S S I दूर अनित्य अनुप्रास S I I - I I S + S S + S अंत में गुरू ज़रूरी - S I S S + S I S S पंजीं हैं बारहीं मात्रा लघू - S S I S + S S I S अंत में गुरू या भगुण या यगुण बटो लोकिव वर्ग
15	तोटक-957	गोपी चौपाई महालक्ष्मी	आदि में त्रिकाल हैं अंत में गुरू- दूर -अंतर अनित्य अनुप्रास चौपाई छंद (16) मात्राङ्ग उनजो पोयों गुरू कढी लघू विझणु टे गुण (S I S)
16	संस्कारी 1597	पादा कलक अरल चौपाई श्रृणगार विहंग	चइनि ई चरणनि में चार चार चौकल अंत में S S I अंत में ब गुरू सुठा लगनि। सभ खां सुठो थिए- S + I S + I S I + S I + S + S शुरूअ में त्रिकल, अंत में I S S S I S I + S S I S I

पाद में मात्राऊं	वर्ग नाम ऐं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
17	महा संस्कारी 2584	राम चंद्र उर्मिला पारजात बाला	8 + 9, अंत में <u>ब</u> गुरू टे रगुण (S I S) + गुरू (S) थियनि, अठौं ऐं तेरहीं मात्रा लघू I S + S S I S + S S I S S S + S I S I + S S I S S - I S I S - I S I S + S I S
18	पौराणिक- 2584	सिंधूजा शक्ती उर्मिला शक्ति ग्रह प्राण	8 + 10. बाल साहित्य लाइ सुठो छंद टे यगुण S I + (S S I), पहिरीं, अठौं, यारहीं ऐं सोरहीं मात्रा लघू उर्मिला छंद जो आखरीनि लघू फेरे गुरू करणु <u>ब</u> नौटक (S S S S I) S S S I S I S I S I S
19	महापौराणिक 6765	सुमेर तमाल	7+7+5. ड़हनि मात्राउनि विच में अँदिरीं यत चौपाईअ में I S गड़ियल
20	महादेशक 10,944	सारंग भुजंग-प्रयात	चार तगुण I S S चार यगुण S S I
21	त्रिलोक- 17,711	चंद्रायण संध	-10 + 11 अँदिरीं यत S S I S + S S I S + S S I S S

पाद में मात्राङ्ग	वर्ग नाम ऐं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
22	महा रौद्र 28,657	राधिका दिगवधुव रास कण्डल सुखदा रजनी 46,368 हीर निश्चल	- 9 + 13 अँदिरं रीति दिकपाल छंद (12+12) उनजो अखरीनि गुरू अछर कढी छडणु -6+8+8 अँदिरं यत बिनि हँधि 10+12 अंत में ब गुरू 10+12 अंत में हिकु गुरू S+S I S S+SS I S+SS I S
23	रौद्राक-	हीर निश्चल	11+6+6 अँदिरं यत बिनि हँधि 7+16 अँदिरं यत
24	अवतारी- 75,025	रोला रूप सारस	11+11 अँदिरं रीति 10+14 अँदिरं यत 12+12 अँदिरं यत अंत में गुरू
25	महाअवतारी	मुक्ता मण 1,21,366	13+12 अँदिरं यत
26	महाभागवत	विष्णु पद 1,96,648 गीतिका दिगम्बरी	10+16 अँदिरं यत 12+14 अँदिरं रीति SSI+SSSI+SSSI+SSSI
27	3,17,811	सरसी	11+16 अँदिरं रीति

पाद में मात्राऊं	वर्ग नाम ऐं जुमिले छंद भेद	मुख्य छंद	मुख्य छंदनि जी रचना
28	यौगिक- 5,14,226	सार हरगीतिका विधाता	12+16 अंत में गुरू अंदिरीं यत 12+16 अंत में S । ज़रूर अंदिरीं यत 14+14 अंदिरीं यत
29	महा यौगिक 8,22,404	मरहटा- माधवी	10+8+11 अंदिरीं यत। हीउ झूलिणा छंद बि कोठिबो आहे
30	महा तौटिक 13,46,269	तांटिक	14+16 अंदिरीं रीति। अंत में मगुण (S S S) ज़रूर
31	अश्व अवतारी	श्रृणगार- गोपी गोपी- श्रृणगार	16 (श्रृणगार) + 15 (गोपी) 15 (गोपी) + 16 (श्रृणगार)
32	लक्षणिक 35,24,578	समान- सवाई श्रृणगार रागु	16 + 16 अंदिरीं रीति बिंदो श्रृणगार

13. अर्द्ध-सम मात्रिक छंद-

1. **दोहा**- ब पाद, 24, 24 मात्राऊं, यत 13 मात्राऊं, दूर अंतर अनित्य अनुप्रास, विरछ जा ख़ासि नमूना हीउ बि थियनि-

(क) $3 + 3 + 2 + 2 + 3 = 13$

(ख) $4 + 4 + 3 + 2 = 13$

(ग) $3 + 3 + 2 + 3 = 11$

(घ) $4 + 4 + 3 = 11$

(क) ऐं (घ) गड़े सड़िजे 'विषम सम मौलिक दोहा'।

(ख) ऐं (ग) गड़े सड़िजे 'सम मौलिक दोहा'।

2. **सोरठा**- ब पाद, 24 + 24, यत 11, विषम अनुप्रास।

3. **बरवै**- ब पाद, 19 + 19, यत 12, अंत में जगुण (।SI) सुठो लग्गे।

4. **अललाल**- ब पाद, 15 + 13, दूर अंतर अनुप्रास।

5. **गीत**- ब पाद, 12 + 18.

6. **रोला**- चार पाद, 24, 24, यत 11, ललित अनित्य अनुप्रास।

14. बहूपद छंद-

1. **कणडली**- छह पाद, ब दोहा + 4 रोला। दोहा जो पहिरियों शब्द, सो हुजे कणडलीअ जो पछाड़ीअ वारो शब्द। दोहा जे चोथें चरण सां रोला शुरू थिए। अंदिरियों अनुप्रास कणडलीअ खे वधीक सुंदर बनाए। मिसाल-

बीती ताहि विसार, आगे की सुधि लेय,
जो बन आवे सहज में, ताहे में चित देय,
ताहे में चित देय, बात जो ई बन आवे,
दुर्जन हसे न कोइ, चित में ख़ता ना पावे,
कह गिरधर कवीराय, येह कर्मनि की प्रीती,
आगे को सुख होइ, समझ बीते सो बीते।

2. **छुपिय-** छह पाद, चार रोला, ब उललाल। मिसाल-

लीलाम्बर प्रधान, हरति बटेर सुंदर है,
सूर्य-चंद्र युग मुकट, मेखला रतनाकर है,
नदियां प्रेम प्रवाह फूल तारे मण्डल है,
बंदे जन खग वरंद शेष, फन सिंहासन है,
करते अभिषेक पीवद हैं, बलहारी इस देश की,
हे मातृभूम, तू सत्य है सगुण मूरत सर्वेश की।

3. **अमृत धन-** छह पाद, ब दोहा, (13 + 11), बाकी चार पद बि
24, 24 मात्राउनि जा, पर हरहिक में टे अष्टक (अठा)। ब्री रचना कण्डलीअ
जहिडी। सजे छंद में वृत्तिय अनुप्रास ऐं वीर रस। मिसाल-

बादल आया गगन में, ऊंदहि थी अंधकार,
खिन खिन मंझि खिवण थी, **चमक चमक चौधारि**,
चमक चमक चौधारि, धधक धम दिलि दहिकाया,
घोर घटाउनि कटिकनि, कड़िकनि, कन खड़िकाया,
ककरनि कारनि, वडु-फुड़नि वारनि, वस वरसाया,
बुरनि भटनि मथि बरिसण, बांका बादल आया। (लेखक)

15. **वर्णक छंद-** वर्णक छंद जो अवाइली जिकिरु हिन खां अगे, अंक
5 में कयो वियो। हाणे वधीक अभ्यासु थो कजे। हीउ बिनि किस्मनि जा
थियनि- हिकिड़ा 'मुक्तक', मात्रिक सिरिश्ते जे बंधननि खां मुक्त, आज़ाद;
ब्रिया 'वृत्ति', वर्णनि जा तरतीबी समूहनि पटांदर; जिनि वर्णनि, अछरनि जे
समूहनि जी समुझाणी हिन खां अगे, अंकनि 6 खां 10 ताई छंद विद्या जे
अछर समूह सिरिश्ते बाबति, ब्रियनि सिरिश्तनि सां गडे डिनी वेई आहे। किनि
किनि पुस्तकनि खे, उन्हनि छंदनि खे 'गुण-रीति' वर्ण छंद बि जाणायल
आहे। हाणे अचो त बिन्हीं वर्गनि जे वर्णक छंदनि जो कुझु अभ्यासु करियूं-

(क) **मुक्तक वर्ण छंद-** हेठियां 8 छंद केतिरनि ई कवियुनि कमि आंदा आहिनि-

1. **कवित या मनहर छंद-** हिन मंझि चार पाद थियनि। हरहिक 31, 31 वर्णनि जो; हरहिक पाद में 16, 16 वर्णनि पुठियां यत आहे। हरहिक पाद जो आखरीनि वर्ण गुरू हुजे। हेठियों मिसाल, सुर्गवास थी वियल मास्तर होतचंद मंगूमल जे सिंधु में छपायल झूनीअ चौपिड़ीअ मां हथि आयलु आहे-

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16

1- संत गुरू ईश रूपु, संत आहिनि सांत रूप, (16)

1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15

महिमा तिनि आ अनूप, संत न सुहावणा; (+15)

2- दीननि दयाल संत, सभ सां कनि भाल संत, (16)

लिखाइनि था लाल संत, धार मन भावना; (+15)

3- संत उपकार कनि, जगुत जो उद्धार कनि, (16)

भव जल उद्धार कनि, संत मन भावना। (+15)

4- होत मन धरे भाव, संतनि सरणे आउ, (16)

मथे वजे सभु ताव, भाव फल पावणा। (+15)

नोट- हरहिक पाद में (3) अछर, वर्ण त आहिनि पर मात्राऊं थियूं गुणिजनि त चइनि ई में आहिनि, 49, 46, 41 ऐं 43, तंहिंकरे हीउ मात्रिक छंद कीन आहिनि।

2. **रूप धनाक्षरी छंद-** चार पाद, 32 वर्ण, यत 16, 16.

3. **जल हरण छंद-** 32 वर्ण, अंत में ब लघू (।।), बियो सभु रूपु धनाक्षरीअ वांगुरु।

4. **जन हरण छंद-** 30 वर्ण, बियो सभु रूपु धनाक्षरीअ वांगुरु।

5. डमरू छंद- 34 वर्ण, 30 + लघू (1) + 1 S, बाकी सभु रूप धनाक्षरीअ वांगुरु।

6. देव धनाक्षरी छंद- 33 वर्ण, अंत में तगुण (1 1 1), बाकी सभु धनाक्षरी रूप वांगुरु।

7. शरण छंद- 23 वर्ण, यत 12, 11.

8. प्यार छंद- 14 वर्ण, यत 8, 6.

(ख) वर्ण वृत्ति छंद- हिननि मां हेठियनि 12 चूंड जी रचना रिथा डिजे थी-

1. मतगेंद स्वैया- चार पद, हरहिक में 23 अखर, 7 भगुण (S 11), ऐं ब गुरु। ललित अनुप्रास।

2. निर्मल स्वैया- चार पाद, हरहिक में 23 अखर, 8 सगुण (11 S), ललित अनुप्रास।

3. सुंदरी स्वैया- 4 पाद, हरहिक में 34 अखर, 8 सगुण - S + ललित अनुप्रास।

4. मुक्तहरा स्वैया- चार पाद, 32 अखर, 8 जगुण (1 S 1), ललित अनुप्रास।

5. इंद्र वज्रा- हीउ छंद, वैदिक छंद 'तृष्टप' मंझां निकितलु आहे। ऋग्वेद में अटिकल 24,000 छंद आहिनि। हरहिक पाद में अथसि जगुण (1 S 1) + तगुण (1 S S) + जगुण (1 S 1) ऐं ब गुरु (S S), जुमिले 17 अखर। हिंदी छंद विद्या में 'इंद्र वज्रा' छंद मात्रिक छंदनि में जाणायल आहे, जहिं जे चइनि पादनि में 17, 17 मात्राऊं थियनि।

6. शालिनी- तगुण + तगुण + ब गुरु = S S + 1 S S + 1 S S

7. भुजंगी- टे यगुण ऐं लघू, गुरु = S 1 + S S 1 + S S 1 + S S 1

8. इंद्र वंशा- तगुण + तगुण + जगुण + रगुण =

S 1 S + 1 S 1 + 1 S S + 1 S S

9. वसंत तुलिका- तगुण, भगुण, जगुण ब्र गुरू =

SS, ISI, SII, ISS

10. अनंद- लघू-गुरू, 7 भेरा- IS, IS, IS, IS, IS, IS, IS

11. चंचला- गुरू लघू, 8 भेरा- SI, SI, SI, SI, SI, SI, SI, SI

12. शिखरणी- यगुण, भगुण, तगुण, सगुण, भगुण, गुरू =

S, SSI, IIS, III, SII, SSI

13. पृथ्वी- जगुण, सगुण, जगुण, सगुण, यगुण, लघू गुरू =

SI, ISS, IIS, ISI, IIS, ISI

14. सार ललित- 4 चौकट + 3 चौकट = 28 मात्राऊं-

मिसाल- 1. चोली मेली साबुन तोला, कितले मलमल धोवां?

सीने अंदर दाग रांझो दा, ज्यूं धोवां त्यूं रोवां?

2. हिकु सुहिणा बिया दिलि दा डाढा, टीजे बेपरवाही,
आह करियां तां जगु मेले, कूकां दाद न पाए।

3. रांझनि वाला जहर प्याला गुझिडी आयमि भाजी,
माउ पीउ कऊंअ चोरे पीतमि, कीतमि रूह त राजी,
दिलि दी कजा दिलि ही जाने, तूं क्या जाने काजी?

(डेढु छंद)

15. मंदा क्रांता- मगुण + भगुण + तगुण + तगुण + तगुण + ब्र गुरू।

विराम चोथें, डहें ऐं सत्रहें अछर ते। कालीदास जो 'मेघदूत' सजो हिन छंद
ते रचियलु आहे।

मिसाल- प्यारियूं जेके प्रीतम रुसी, राति घारीनि वेही,
परिचाईदा प्रीतम अची खेनि आंसूं उघे ही,
हाणे रस्तो छडि न सिज जो, माक बूंदूं मिटाए,
जेके छांयूं मुख कंवल ते, ना त डींदें रसाए।

(अनुवाद पंडित किशनचंद जेटली जो)

16. फ़ारसी बहर ऐं फ़ारसी छंद- मथे अंक 1 में, भारती छंदनि सां किनि फ़ारसी बहरनि जी भेट ड़िनी वेई आहे। हिते 6 फ़ारसी बहर ऐं उन्हनि सां मुशाबहत रखंदड़ छंद ड़िजनि था। बहरनि में ड़िनल लफ़ज़ 'मसमन' जी माना आहे अठ। बहर में 'मसमन' लफ़ज़ु कतब आंदलु ड़ेखारे थो त ज़िकिरु कयल रकन अठ भेरा, बिनि मिसरनि में गड़े विधल आहे।

(क) बहर मुतकारब मसमन (फ़ऊलनि) = भुजंगी प्रयात

(ख) बहर मुतदारक मसमन (फ़ाइलनि) = भुजंगी प्रयात

(ग) बहर रजज़ मसमन (मुस्तफ़इलनि) = हर गीतिका

(घ) बहर हजज़ मसमन (मुफ़ाईलनि) = विधाता

(ङ) बहर रमल मसमन (फ़ाइलातनि) = मधू मालती

(च) बहर वाफ़र मसमन (मुफ़ाइलतुनि) = विधाता

नोट- इल्म अरूज़ मूजिबु चार भेरा रकन विधल मिसरे खे 'मरबअ' चवनि, छह भेरा 'मुसदस' चवनि, अठ भेरा 'मसमन' चवनि, ड़ह भेरा 'मअशर' चवनि।

17. रस ऐं छंद- हिन किताब में आदि खां अंत ताई, वर वर ड़ेई इहा ग़ाल्हि दुहिरायल आहे त रस काव्य जी आत्मा आहे, छंद काव्य जो जिस्मु आहे। इहा ग़ाल्हि पिण वर वर ड़ेई वर्णन कई वेई आहे त जीअं बदिजेबी ज़ाल जे गले में हार सींगार न आहिनि, पर जंजाल ऐं घंघर आहिनि, तीअं बे रस, बे जसु रचना में अलंकार या पद न सिर्फ़ निकमा आहिनि, लेकिन रचना खे बदिजेबो बणाईदड़ आहिनि। जीअं अलंकार, भाव रस जा हिमायती हुअणु घुरिजनि, तीअं छंदनि लाइ बि भाव ऐं रस जो साथु ज़रूरी आहे। काव्य शास्त्रियुनि, हरहिक किस्म जे रस सां ठहिकंदड़, हेठीअं रीति छंद वर्णन कया आहिनि-

(क) शृणुगार रस-

(i) **मात्रिक छंद**- आर्य, गीत, सरसी, सार, मरहटा, माधवी (झूलिणा) वीर, दोहा, चौपाई, रोला, हरगीतिका शृणुगार छंद, पादाकलक, हाकल, लीला, चौपाई, त्रिलोकी, सखी, विधाता, मधू मालती, कामिनी ऐं दिकपाल।

(ii) **वर्णक छंद**- इंद्र वज्रा, वसंत तुलिका, मालिनी, शिखरणी, मतगेंद, दरमल ऐं धनाक्षरी।

(ख) **वीर ऐं रौद्र रस**- भुजंग प्रयात, शिखरणी, वीर छंद, अरल, छुपिय, रोला, हरगीतिका, कुंडलनी ऐं धनाक्षरी।

(ग) **करूण रस**- आर्या, ताटक, हाकल, हरगीतिका, सखी, रोला, चौपाई, सार, पादाकलक, सुमेर, विधाता, सरसी, शिखरणी, मालिनी ऐं शालिनी।

(घ) **हास्य रस**- द्वधक, कवित, स्वैया, हरगीतिका, चौपाई ऐं सरसी।

(ङ) **भीभत्स रस**- रोला, छुपिय, दोहा, चौपाई ऐं स्वैया।

(च) **शांत रस**- शिखरणी, दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, रूप माला, कुंडलनी, सखी, हरगीतिका, मोहिनी, झूलणा, सरस्वती, योग, गोपी, धनाक्षरी ऐं शब्द छंद।



आसिरो नाम जो

हाणे हीउ पंजों गंजु त खतमु थियो आहे, पर पुस्तक बि बची पूरो थियो आहे। ब अखर पंहिंजे अदबी उदम जे बारे में चवणु ज़रूरु थो समुझां ऐं गडोगडु पढंदडनि खे वेनिती थो करियां त हिननि बिनि अखरनि खे अभिमानी, पिंड परस्ती, खुदि सनाई समुझण खां केरु कंहिंखे रोके त कीन थो सघे, लेकिन पंहिंजे उदम जे बारे में मुंहिंजो चवणु हीउ आहे त मूं विरिहाडे बैदि भारत में अचण वक्त, इहा मन में मुराद धारी त जंहिं सूरत में सिंधु छडे हिते अची हिंदी सिखियुसि, तंहिं सूरत में हिंदीअ में असुलोका या अनुवाद थियल ग्रंथ, काव्य शास्त्र ऐं सम्बन्धी सौंदर्य बि कलात्मक विषयनि वारनि ग्रंथनि जो अभ्यासु करे, संदनि सिंधी शइर वगैरह सां नातो गुंढियां। पंहिंजे पहिरिएं ई किताब 'छंद सुगंध' में उन मन मुराद जो फ़क़ति वर्णन कीन कयो अथमि पर तडुहिं पंहिंजे उदम जे परख कराइण जी कोशिश शुरू करे डेखारी अथमि। मुंहिंजा पोइ वारा किताब, हिन पुस्तक जे अंत में डिनल 'सहायक पुस्तक सूची' हेठि घणो करे सभु इन्हीअ मन मुराद पूरी करण जी कोशिश आहिनि। अलबति वकालत सां तालुक हुअण सबब दिलि बहिलाइण लाइ बाजे किनि ग्रंथनि जे गूढ़े, कजसी, मन मुंझाईदड अभ्यास जे विच विच में के कहाणियूं, फ़ौजदारी केसनि जे सतह ते पिए रचियमि। शाइरु त कीन आहियां, पर नज़मबंदीअ जे अभ्यास सां दिलचस्पी डेखारी अथमि। सो के नज़्मी किंसा पिण रचिया अथमि, पर त बि मां भांयां थो त पंहिंजीअ मूल मन मुराद पूरीअ करण लाइ पुजंदीअ आहर, ज़िंदगीअ जे हिन पोयें पहर में पिण घटि या वधि पाणु पतोडियो अथमि। अलबति शख़्सी हालतुनि

सबब, के पंहिंजीअ मन वृतीअ सबब, सिंधी अदबी आलिमनि सां समे पिए सम्पर्क, लह-विचुड़ घटिजी वियल रहियो आहे त बि हाण त घर वेठे बि संदनि वधीक लियाक़ती सरगर्मियुनि जो समाचार सिंधी अखबारुनि में पढ़ी, खुशि पियो थिबो आहे।

ईश्वर शल सिंधी बोलीअ जे उन्हनि मिड़नेई मशलचीन जा साया सजाया करे, जीअं असांजी सिंधी बोली हाणोकीअ पौणी पवंदड़ गर्दिश मंझां लंघे पार पवे ऐं वरी बि असांजो मन घुरियो मागु माणे।

आसिरो नाम जो!



सहायक पुस्तकनि जी यादाश्त

सिंधु में हुआसीं त उते अरबी सिंधी अखरनि ज़रिये अभ्यास जो नतीजो निकितो। मुख्य तौर उहो, जो किस्मत सां उते बख़् थियल अदीबनि जी असर हेठि आयुसि। कॉलेजी तालीम ताई फ़ारसीअ जो अभ्यासु जेको उते थियो, उहो विरिहाडे बैदि भारत में कुझु फ़ारसी अदब ऐं उर्दू अदब जे किताबनि मुतालइ करण लाइ कतब आयुमि। देवनागरी अखर भारत में आए पुजाणां सिखियुसि, जिनि ज़रिये हिंदीअ में शाया थियल संस्कृत ग्रंथनि जा अनुवाद ऐं केतिरा ई असुलोका हिंदी साहित्य जा ग्रंथ गुज़िरियल 34 वरिह्यनि में बि पिए पढ़िया अथमि। जिनि ग्रंथनि जी सहायता हिन पुस्तक रचण में वरिती अथमि, तिनि जी यादाश्त हिन रीति आहे-

1. भरत मुनि नाट्य शास्त्र। 2. अग्नी पुराण। 3. तांजोर सरस्वती मंडल, नाट्य शास्त्र। 4. ऋग्वेद ऐं यजुर्वेद। 5. धननजय, दशरूपक। 6. भोला शंकर व्यास, हिंदी दशरूपक। 7. अभिनव गुप्त, अभिनव भारती। 8. रामचंद्र ऐं गुणीचंद्र, नाट्य दर्पण। 9. कंतक, विक्रोक्त जीवतम। 10. जयदेव, चंद्रलोक। 11. विश्वानाथ, साहित्य दर्पण। 12. श्रृंग भूपाल, रसारवण सुधाकर। 13. सागर नंदन, नाटक लक्षण रतन कोष। 14. सीताराम चतुर्वेदी अभिनव नाट्य शास्त्र। 15. मिश्र बंधू, साहित्य पारजात। 16. नंद किशोर, अभिनव दर्पण। 17. आनंद वर्धन, ध्वनिया लोक। 18. अमर सिंह, अमर कोष। 19. विद्याधर, एकावली। 20. भामह, काव्य अलंकार। 21. दण्डी, काव्य दर्शन। 22. प्रभाकर भट्ट, रस प्रदीप। 23. ममट, काव्य प्रकाश। 24. जगन्नाथ, रस गंगाधर। 25. रूद्रट, श्रृणगार तिलक। 26. राजशिखर, काव्य मीमांसा। 27. महाराजा भोज, सरस्वती कंठा भरण। 28. हेमचंद्र, कवी कंठा भरण। 29. वामन, काव्य अलंकार। 30. उद भट, अलंकार सार संग्रह। 31. वागभट

अलंकार। 32. हेमचंद्र, काव्य शासन। 33. जसवंत सिंह, भाषा भूषण। 34. काम शास्त्र। 35. छंदोदय उपनिषद। 36. पिंगल नाग, छंद सूत्र। 37. विष्णू धर्मोत्तर पुराण। 38. शतपथ रहमण। 39. बलदेव उपाध्याय, भारती साहित्य शास्त्र। 40. शुक्ल, आत्मिक हिंदी काव्य में छंद रचना। 41. श्याम सुंदरदास, साहित्य लोचन। 42. सीताराम शास्त्री, साहित्य सिद्धांत। 43. सूर्य नारायण, साहित्य अनुशासन। 44. भगवानदीन, अलंकार मंजूषा। 45. सखा दहलवी, महबूब अलशरा। 46. मिर्जा अहमद शाह बेग, जवाहर अल अरूज। 47. प्रोफेसर अब्दुल मजीद बेग, जदीद इल्म अरूज। 48. आजाद, आब हयात। 49. अदीब, हमारी शाइरी। 50. अब्दुल रऊफ, शाइरी। 51. मंधाराम मलकाणी, अदबी उसूल। 52. परमानंद मेवाराम जूं बई डिक्शनरियूं ऐं मुख्तलिफ हिंदी कोष।

लेखक जूं रचनाऊं- (पहिरियां पंज नाला आहिनि विरिहाडे खां अगु, पंजनि रसालनि जा नाला, जेके सिंधी साहित सोसाइटी कराचीअ वारनि, मुंहिंजे अदबी अबनि लालचंद अमरडिनेमल, भेरूमल महरचंद ऐं जेठमल परसराम जे सम्पादकीअ हेठि छपाया)।

1. ऐट जी ओट। 2. मिठी शीरीं। 3. ओझलि रोशनी। 4. मोलीअर जो मजनू डॉक्टर। 5. मोलीअर जो मूजी। 6. सिंधी शइर, छंद सुगंध। 7. इत्र अरूज। 8. कामिल जो कलामु। 9. ढोला मारू। 10. 1967 ई. में हैदराबाद सिंधु जे अदबी बोर्ड वारनि जो छपायल ढोला मारू। 11. सिंधीअ लाइ देवनागरी सिरिश्तो। 12. पाणेही देवनागरी सिखो। 13. पंज गंज, हीउ किताबु अवलि देवनागरीअ में छपियलु। 14. खून खस्तूरी। 15. स्वामी दादू दयाल। 16. 1954 ई. खां 1957 ई. ताई, महिराण मैगज़न जे चइनि अंकनि में सिंधी अदबी बोर्ड हैदराबाद सिंधु वारनि जे इस्तदआ ते शाया कयल लेख। 17. हलीमा, हिक खौफनाक खून जो केस (प्रेस में)। 18. पोपटी- हिक जहर सां खून जो केस (प्रेस में)।

NATIONAL COUNCIL FOR PROMOTION OF SINDHI LANGUAGE



राष्ट्रीय सिंधी भाषा विकास परिषद

द्वारा प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाएं व कोश

1. पखीअड़ा वलर खां विछुड़िया
2. बहिरतीन सिंधी मज़मून
3. रोशन छांवरो
4. डॉ. चोइथराम परतापराइ गिदवाणीअ जी जीवनी
5. सिंधी तन्कीद
6. बहिरतीन सिंधी नाटक
7. विरहाडे खां पोइ जे सिंधी शइर जी चूंड
8. शाह जो चूंड शइरु
9. कला जो कोहिनूर मास्टर चंदर
10. ए प्रैक्टिकल सिंधी -इंग्लिश डिक्शनरी
11. स्टैण्डर्ड ट्रिलिन्गुअल डिक्शनरी
12. सिक जी सौगात (अरेबिक)
13. सिक जी सौगात (देवनागरी)
14. पंडित किशनचंद पोपणलाल जैतली:
साहित्यिक योगदान
15. माठि जी मुर्क
16. सिंधी अदब में बैदि जदीदियत
17. सिंधी रीडर -I (सर्टीफिकेट कोर्स)
18. सिंधी रीडर-II (डिप्लोमा कोर्स)
19. सिंधी रीडर-III
(एडवांसड डिप्लोमा कोर्स)
20. सिंधी कहाणी - तबसरा ऐं ज़ाइजा
21. चच नामह
22. कद्दीम सिंध
23. बोलीअ जो सिरिश्तो ऐं लिखावट
24. सिंधी छंद अरुज जो हैंडबुक (अरबी)
25. सिंधी झामा
26. सिंधी छंद अरुज जो हैंडबुक (देवनागरी)
27. हेमलेट
28. गुनाहनि भरियो देवता
29. साहित्य जी परख
30. सैलाब जिंदगीअ जो
31. गुजराती एकांकी
32. सुर्ख गुलाब-सुरहा ख्वाब
33. चूंड सिंधी मज़मून
34. अदबी ऑलाप
35. सागर जी सन्तान

वार्षिक पत्रिकाएं

1. पोपटड़ा
2. महक-I
3. महक-II
3. महक-III
4. महक-IV
5. साहित्य सिन्धू

Govt. of India, Ministry of H.R.D. Deptt. of Higher Education
West Block No. VIII, Wing-7, 1st Floor, Sector-1,
R.K. Puram, New Delhi - 110066.

Ph : Nos. (011)-26180104-06, 20863699

Email : ncpsl.delhi@gmail.com Website : www.ncpsl.gov.in
https://www.facebook.com/NCPSL

